अराजकता पर लगाम

किसी भी सोशल मीडिया मंच के दुरुपयोग को रोकना न केवल अनिवार्य, बल्कि अनुकरणीय भी है। किसान आंदोलन के समाधान में जुटी भारत सरकार ने इस आंदोलन के मद्देनजर सोशल मीडिया मंच 'एक्स' के दुरुपयोग पर आपत्ति जताई थी और अनेक अकाउंट व पोस्ट को हटाने का फरमान सुनाया था। जाहिर है, आदत से मजबूर एक्स ने कुछ इंतजार कराने के बाद ही भारत सरकार के आदेश की पालना की है। हालांकि, एक्स आपत्तिजनक खातों को केवल भारत के लिए प्रतिबंधित करेगा, शेष दुनिया में ये खाते व पोस्ट नजर आते रहेंगे। लगे हाथ एक्स ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हवाला देते हुए इस कार्रवाई से अपनी वैचारिक असहमति भी जता दी है। क्या एक्स की यह टिप्पणी आपत्तिजनक नहीं है? क्या यह प्रश्न नहीं उठता कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता चीन या रूस जैसे देशों में कहां चली जाती है? 20 से ज्यादा देश हैं, जहां एक्स प्रतिबंधित है। हर देश को अपनी हित-चिंता का हक है, अतः भारत सरकार की चिंता भी जायज है।

अधूरे मन से ही सही, एक्स को झुकना पड़ा है। लोग भूले नहीं हैं कि कर्नाटक उच्च न्यायालय ने पिछले साल 2021 टेकडाउन आदेशों को चुनौती देने वाली ट्विटर या एक्स की याचिका खारिज कर दी थी और समय पर कार्रवाई करने में नाकाम रहने के लिए अमेरिकी कंपनी पर 50 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया था। इस बार भी कार्रवाई के भय की वजह से ही आदेशों की पालना की है। हालांकि, उसे भारत की उदारता का स्वतः आदर करना चाहिए। यहां उदारता का अर्थ अनुशासनहीनता कतई नहीं है। वाकई इधर, एक्स पर कई टिप्पणियां ऐसी देखी गई हैं, जिनमें अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए सरकार पर प्रहार किए गए हैं। कोई भी सरकार इस बात को स्वीकार नहीं करेगी कि उसके खिलाफ किसी सोशल मंच पर अविश्वास को बढ़ाया जाए। ऐसी टिप्पणियां भी सामने आई हैं, जिनमें हिंसा भड़काने या लोगों को उकसाने की साजिश साफ झलकती है।

साइबर सोशल मंचों के दुरुपयोग को कड़ाई से रोकने के साथ-साथ लोगों की नाराजगी को दूर करने की कोशिशें भी पूरी मुस्तैदी से जारी रहनी चाहिए।

पिछले किसान आंदोलन के समय ही दिल्ली के लाल किले पर जो हिंसक हमला हुआ था, उसे कौन भूल सकता है? वैसी ही किसी साजिश को अंजाम देने की कोई कोशिश समय रहते नाकाम की जाए, तो इसमें बुराई नहीं है। देश में सेवाएं दे रहे तमाम सोशल मीडिया मंचों को साफ तौर पर यह संदेश देना चाहिए कि भड़काने की कोई साजिश स्वीकार्य नहीं होगी। किसी भी तरह की मांग केवल लोकतंत्र और संविधान के दायरे में हो, यह सुनिश्चित करने में कोई बुराई नहीं है।

सोशल मीडिया में ऐसी अनेक टिप्पणियां दिख जाती हैं, जिनके लिए कारावास की सजा हो सकती है या जुर्माना लग सकता है। जहां तक एक्स का सवाल है, तो यह कंपनी पहले ही 50 लाख रुपये के जुर्माने से बचने के लिए अदालत में गुहार लगा रही है। हालांकि, ऐसे मामलों में अदालतों को जल्दी फैसला लेना चाहिए। सोशल मीडिया कंपनियों की मनमानी पर लगाम लगनी ही चाहिए। ऐसे मंचों पर अपने विचार रखने वालों को पता होना चाहिए कि कोई भी कानून या समाज या देश विरोधी टिप्पणी भारी पड़ सकती है। सरकार के आदेश पर 42 एक्स खातों और 49 लिंक को प्रतिबंधित किया गया है, पर क्या इतना ही पर्याप्त है? सोशल मंचों के दुरुपयोग को रोकने के साथ-साथ लोगों की नाराजगी को दूर करने की कोशिशें भी मुस्तैदी से होनी चाहिए। नफरत फैलाने वाले या सामाजिक सद्भाव से खेलने वाले जिस किसी दल या संगठन के हों, प्रतिबंध और दंड के हकदार हैं।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 23 फरवरी, 1949

भारत-पाकिस्तान के रिश्ते

भारत और पाकिस्तान के आपसी संबंध अच्छे रहने चाहिए। इसी में दोनों का भला है। यह सच है कि जिस तरह देश का विभाजन हुआ और उसके बाद जो अप्रिय घटनायें हुईं। उन्होंने दोनों देशों में कटुता को काफी बढ़ा दिया था। किन्तु व्यक्तियों की भांति देशों और जातियों के जीवन में भी विग्रह और कटुता स्थायी नहीं रह सकती, समय गुजरने के साथ दोनों देशों के संबंध साधारण सतह पर आ रहे हैं। इसका प्रमाण पाकिस्तान के नेताओं के हाल के उद्गारों से मिलता है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री जफरुल्ला खां साहब ने एक पत्र संवाददाता को भेंट देते हुए इस तथ्य की साक्षी दी है कि जबसे काश्मीर में युद्ध बंद हुआ है, भारत और पाकिस्तान के संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। उनसे भी अधिक आशाप्रद उद्गार खुद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री मि. लियाकत अली खां ने प्रकट किये हैं। मुस्लिम लीग की जनरल कौंसिल के सामने बोलते हुए उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के विदेशी मामलों में भारत के साथ पाकिस्तान के संबंधों का सवाल एक अहम सवाल है। इस प्रकार इस प्रश्न के महत्व को स्वीकार करते हुए मि. लियाकत अली ने अपना यह विश्वास भी प्रकट किया है कि भारत और पाकिस्तान को एक-दूसरे के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर चलना होगा, साथ ही उन्होंने यह आश्वासन भी दिया है कि जहां तक उनका ताल्लुक है, वे भारत के साथ पाकिस्तान के संबंधों को अच्छा और मजबूत बनाने की हमेशा कोशिश करेंगे।

यह संतोष का विषय है कि पाकिस्तान के नेताओं ने भारत के साथ अच्छे संबंधों की आवश्यकता को अनुभव कर लिया है। भारत और पाकिस्तान पड़ोसी देश हैं और यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि पड़ोसी देशों के संबंध मधुर और घनिष्ठ रहें। भौगोलिक, आर्थिक, ऐतिहासिक और अन्य कारणों से देश का विभाजन असंभव समझा जाता था। किंतु राजनैतिक कारण से जो असंभव था, उसे संभव किया गया। दोनों ओर के नेताओं ने वस्तु स्थिति के तकाजे को महसूस किया और जान-बूझकर उसे स्वीकार किया। उसको स्वीकार किये बिना और कोई चारा नहीं था किंतु भारत और पाकिस्तान के आपसी सहयोग को अनिवार्य बनाने वाले मूल कारण नहीं मिट सकते थे, दोनों के आर्थिक संबंध एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।

यूक्रेन में दो साल से युद्ध देखती दुनिया

यहां स्कैन करें

विवेक काटजू | पूर्व राजदूत

विश्व में शांति और सुरक्षा कायम रखना ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् का पहला कर्तव्य है, मगर इसके सदस्य रूस ने ही दुनिया की शांति में सेंध लगा रखी है।

यूक्रेन-रूस युद्ध को दो साल पूरे हो रहे हैं। 24 फरवरी, 2022 को रूस की सेना यूक्रेन में दाखिल हुई थी और राजधानी कीव की ओर उसने कूच करना शुरू किया था। मॉस्को को उम्मीद थी कि उसकी सेना यूक्रेन के अधिकाधिक हिस्से पर तेजी से कब्जा जमा लेगी, और अगर कीव तक वह न भी पहुंच सकी, तो यूक्रेन पर जरूर दबाव बना देगी। उसका यह भी मानना था कि रूसी सेना को देखकर कीव की जनता घबरा जाएगी, जिसके कारण जेलेंस्की सरकार का तख्ता-पलट होगा और रूस-समर्थक सत्ता यूक्रेन पर आसीन हो जाएगी। मगर रूस अपने मकसद में सफल नहीं हो सका, जिसके कई कारण रहे।

मॉस्को की उम्मीद के विपरीत यूक्रेन की जनता रूसी हमले के खिलाफ उठ खड़ी हुई, और यूक्रेन की सेना ने भी हिम्मत व जोश के साथ रूसी फौज का मुकाबला किया। इसके साथ-साथ अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देश रूसी हमले के खिलाफ मुखर हो गए। यूरोप के मुख्य देशों ने खुलेआम कहा कि रूस की कार्रवाई से यूरोप की सामरिक स्थिति बदल गई है, इसलिए उन्होंने यूक्रेन को राजनीतिक मदद के साथ-साथ आर्थिक व सैन्य सहायता देनी शुरू कर दी।

कुछ यूरोपीय इतिहासकारों और विश्लेषकों का मानना है कि रूस का आक्रमण शीत-युद्ध का आखिरी अध्याय है। उल्लेखनीय है, शीत-युद्ध के अंतिम वर्षों में तत्कालीन सोवियत संघ को पश्चिम, विशेषकर कुछ अमेरिकी नेताओं ने आश्वस्त किया था कि जर्मनी के एकीकरण की वजह से सोवियत संघ कभी सामरिक दबाव में नहीं आएगा। सोवियत नेतृत्व ने इस आश्वासन का यह अर्थ निकाला कि नाटो का विस्तार नहीं किया जाएगा और मध्य यूरोप के देश, जो सोवियत संघ के जमाने में वारसा संधि (नाटो के जवाब में सोवियत संघ के नेतृत्व में पूर्वी यूरोप के देशों के गठबंधन द्वारा की गई संधि) के सदस्य थे, नाटो में शामिल नहीं किए जाएंगे। मगर ऐसा नहीं हुआ। 1991 में सोवियत संघ का पतन हुआ और आखिरी तीन दशकों में रूस इसका उत्तराधिकारी देश बना। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पश्चिम पर इल्जाम लगाया कि रूस द्वारा बार-बार दी गई चेतावनियों के बावजूद नाटो का पांच बार विस्तार हुआ और जो आश्वासन सोवियत नेतृत्व को दिए गए थे, उसको बार-बार नजरंदाज किया गया, जिससे रूस की सामरिक स्थिति पर दबाव पड़ा है। मॉस्को की नाराजगी उस वक्त विशेष तौर पर दिखी, जब यूक्रेन से रूस समर्थक सरकार की विदाई हुई और एक 'स्वतंत्र सरकार' का गठन हुआ। इसके बाद ही व्लादिमीर पुतिन ने एक लाल रेखा खींची और स्पष्ट कहा कि रूस कभी भी यूक्रेन को न नाटो और न यूरोपीय संघ में शामिल होते देख सकता है। फिर भी, यूक्रेन के नेतृत्व और पश्चिम के बड़े देशों से ये आवाजें उठने लगीं कि यूक्रेन एक संप्रभुता संपन्न देश है और अपनी सामरिक सुरक्षा के लिए वह हर कदम स्वेच्छापूर्वक उठा सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि रूस को युद्ध के लिए उकसाया गया, लेकिन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में वीटो का अधिकार रखने वाले किसी स्थायी सदस्य द्वारा युद्ध की शुरुआत करना किसी भी सूरत में वाजिब नहीं था। विश्व में शांति व सुरक्षा कायम रखना ही सुरक्षा परिषद् का पहला कर्तव्य है, जबकि रूस ने खुद दुनिया की शांति में सेंध लगा दी।

बहरहाल, पिछले दो वर्षों की इस जंग में रूस का यूक्रेन पर दबाव बनाने का मकसद पूरा नहीं हो सका है। हां, रूस से सटे यूक्रेन के पूर्वी हिस्से और दक्षिण के कुछ इलाकों में उसने खुद को मजबूत जरूर बना लिया है। पिछले साल यूक्रेन ने बहुत जोर-शोर से पलटवार करना शुरू किया था, लेकिन उसे कोई खास सफलता नहीं मिल सकी है। अब तो यूक्रेनी फौज का मनोबल भी कुछ ढीला पड़ता दिखने लगा है। यह माना जाने लगा है कि दोनों देशों के बीच में जो नई सीमा बन गई है, उसमें अब शायद ही कोई बदलाव हो सकता है, जब तक कि कुछ अप्रत्याशित घटना नहीं हो जाती। नाटो और यूरोपीय संघ के सदस्य देश बेशक रूस को वापस लौट जाने की सार्वजनिक मांग कर रहे हैं और मॉस्को से भिड़ने के लिए कीव को आर्थिक व सैन्य मदद दे रहे हैं, लेकिन खुद अमेरिका की स्थिति बिगड़ती दिख रही है। वहां मौजूदा बाइडन सरकार का रुख यूक्रेन के प्रति जरूर नरम है, लेकिन रिपब्लिकन पार्टी के सदस्यों की इच्छाशक्ति वहां की संसद में जाहिर होने लगी है। इस साल वहां चुनाव भी होने वाले हैं, और लगता यही है कि जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप ही आमने-सामने होंगे। यदि कानूनी रूप से ट्रंप चुनाव प्रक्रिया से बाहर नहीं हुए, तो मुमकिन है कि वह फिर से अमेरिकी राष्ट्रपति बनेंगे और उनकी यूक्रेन के प्रति उदासीनता जगजाहिर है।

इस युद्ध के शुरू होने से पूरी दुनिया में ऊर्जा और खाद्यान्न की स्थिति पर बुरा असर पड़ा, लेकिन पिछले साल के अंतिम महीनों में ऐसी व्यवस्था कर ली गई, जिससे वैश्विक स्थिति संभल गई। इसका एक और बड़ा असर यह हुआ कि रूस पर अमेरिकी और यूरोपीय प्रतिबंधों के कारण मॉस्को व बीजिंग में नजदीकी बढ़ गई। हालांकि, इस दोस्ती का चीन ने फायदा तो उठाया, लेकिन रूस की सहायता करते हुए भी उसने पश्चिम द्वारा खींची गई लाल रेखा का उल्लंघन नहीं किया।

यह जंग हमारे लिए भी एक बड़ी चुनौती बनकर आई थी। हालांकि, मोदी सरकार ने सबसे पहले यूक्रेन से अपने नागरिकों, खासकर वहां पढ़ रहे छात्रों को बाहर निकालकर अपनी जिम्मेदारी निभाई। इसके बाद, अमेरिकी चेतावनियों के बावजूद उसने रूस से न सिर्फ अपने ऊर्जा संबंध बनाए रखे, बल्कि इसे आगे भी बढ़ाया। इतना ही नहीं, रूस के साथ अपने सामरिक व रक्षा संबंध को भी हमारी सरकार ने कमजोर नहीं होने दिया। इसका हमें लाभ मिला है। इस दूरदर्शिता के कारण भारत सरकार ने रक्षा-आपूर्ति के अन्य स्रोतों को ढूंढ़ने की प्रक्रिया भी तेज कर दी है, जिसके प्रयास काफी पहले से किए जा रहे थे।

अभी तो इस जंग का कोई छोर नहीं दिख रहा है। रूस कब्जा जमाए यूक्रेन के कुछ हिस्सों को वापस लौटाने के लिए तैयार नहीं है। इस तरह यहां 'फ्रोजन कन्फ्लिक्ट' जैसी परिस्थिति बन गई है, यानी आने वाले दिनों में बेशक यहां गोलियां चलनी बंद हो जाएं, लेकिन तनातनी बदस्तूर कायम रहेगी। इन सबसे यूरोप और पूरी दुनिया की सामरिक व आर्थिक परिस्थितियों पर स्वाभाविक ही प्रभाव पड़ रहा है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

न्यूनतम समर्थन मूल्य पर फिर विचार की जरूरत

यहां स्कैन करें

श्वेता सैनी | कृषि अर्थशास्त्री

अपने करियर की शुरुआत में पंजाब के एक किसान से मैंने पूछा था कि भू-जल स्तर जब लगातार नीचे जा रहा है, तब आप धान क्यों बोते हैं? जवाब मिला था, 'आप जो चाहेंगे, मैं वही बोऊंगा, आप बस मुझे खरीद का उचित आश्वासन दीजिए।' उसी वर्ष हरियाणा में मैंने एक पोल्ट्री किसान और उससे सामान खरीदने वाले व्यापारी से पूछा था कि सरकारी नीतियों ने उनके सहयोग को कैसे सुविधाजनक बनाया है? जवाब मिला कि सरकार ने एक ही काम सही किया कि वह इस सबसे बाहर रही!

राष्ट्रीय राजधानी में किसान आंदोलन की पृष्ठभूमि में काम कर रहे दो बिंदुओं को यहां रेखांकित किया जा सकता है: पहला, कृषि में सरकार की हर जगह जरूरत नहीं है और दूसरा, सुनिश्चित आय समय के साथ किसानों की जोखिम उठाने की क्षमता को घटा देती है। फसल विविधीकरण को लेकर पंजाब के किसानों की जड़ता जगजाहिर है। वे न्यूनतम समर्थन मूल्य से लाभान्वित होते हैं, पर बाजार में मौजूद अवसरों से चूक जाते हैं। पिछले साल ही, अधिकांश चावल उत्पादक राज्यों में गैर-बासमती की कीमतें न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से अधिक हो गईं, पर पंजाब, हरियाणा में किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य पर डटे रहे, जिससे उनका फायदा सिमट गया।

निजी क्षेत्र को दबाने और निर्यात बाजारों को खतरे में डालने के बजाय हमें लचीले, संपन्न बाजारों को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

यहां राजनीति का सवाल भी बड़ा है। पंजाब में मिलने वाली मुफ्त बिजली नीति से भी उत्पादन लागत घट जाती है, जिससे धान के रकबे को भी बढ़ावा मिलता है। मुफ्त बिजली नीति को छूने की किसी भी राजनीतिक पार्टी ने हिम्मत नहीं दिखाई है। किसानों ने विविधता संबंधी प्रस्ताव भी ठुकरा दिया है।

यहां एक मिसाल है, गन्ना लाभकारी मूल्य कानून, जिसके तहत चीनी मिलें किसानों को भुगतान करती हैं, सरकार नहीं। ऐसी किसी व्यवस्था को व्यापक बनाने पर कोई विमर्श नहीं है, इसके बजाय आंदोलनकारी किसान 22 फसलों के लिए समान कानूनी समर्थन मांग रहे हैं!

एक अन्य मांग एमएसपी की गणना के लिए एमएस स्वामीनाथन फार्मूले को लागू करने की है, जिसके मुताबिक, किसानों को खेती की व्यापक लागत (सी2) से 50 प्रतिशत अधिक मिलना चाहिए। यहां एमएसपी की गारंटी से मांग और आपूर्ति संबंधी बाजार सिद्धांत विफल हो जाता है। एमएसपी में अतार्किक वृद्धि निर्यात को महंगा कर देती है। उदाहरण के लिए, सोयाबीन के उच्च एमएसपी ने हमें सोयामील निर्यात से वंचित कर दिया है। यदि हम इतनी ऊंची एमएसपी तय करते हैं, तो अव्यावहारिक कीमतों के लिए तैयार रहना होगा। फसल के ऊंचे समर्थन मूल्य से ऊंची कीमतें पैदा होंगी।

यह भी ध्यान रहे, 86 प्रतिशत भारतीय किसान छोटे और सीमांत श्रेणी के हैं और कृषि वस्तुओं के स्वयं उपभोक्ता हैं, इन्हें कितनी महंगाई मंजूर होगी? वास्तव में, उपभोक्ताओं और किसानों, दोनों की चिंताओं को संतुलित करना होगा, पर क्या किसानों की आय में सुधार के लिए गारंटीशुदा एमएसपी सही उपाय है?

अनुपात से ज्यादा एमएसपी अव्यावहारिक है। निजी क्षेत्र को दबाने और निर्यात बाजारों को खतरे में डालने के बजाय हमें लचीले, संपन्न बाजारों को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। सरकारें बाजारों की जगह नहीं ले सकती हैं, उन्हें बाजार में अनुकूल माहौल को बढ़ावा देना होगा, ताकि किसानों के लिए लाभ सुनिश्चित किया जा सके।

उपभोक्ता और उद्योग की मांगों को पूरा करने के लिए देश को चावल और गेहूं के मुकाबले तिलहन, मोटे अनाज, मक्का और दालों जैसी फसलों को प्राथमिकता देते हुए अपने अनाज भंडार को व्यवस्थित करना होगा। इन फसलों के लिए एमएसपी वृद्धि जरूरी है, जो तिलहन और दलहन के बढ़ते आयात को देखते हुए भी महत्वपूर्ण हो गया है।

व्यापारियों को सभी फसलों के लिए एमएसपी का भुगतान करने के लिए बाध्य करने का प्रयास महाराष्ट्र में 2018 में अप्रभावी साबित हुआ। हां, बाजार में ऐसे लोगों को नियंत्रित करना जरूरी है, जो कीमतों को अपने लाभ के लिए नीचे या ऊपर ले जाते हैं, जबकि उन्हें चिंता उत्पादकों की करनी चाहिए। कई उत्पाद हैं, जो एमएसपी की वजह से भारत में महंगे हैं, पर जिनका सस्ते में आयात हो रहा है, इसलिए किसानों और उपभोक्ताओं के अनुकूल व्यापार नीतियां महत्वपूर्ण हैं। नीति निर्माताओं को समर्थन मूल्य की रूपरेखा पर पुनर्विचार करना चाहिए।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

हमें जगाने आए रैदास

तुम्हें कोई रोक नहीं सकता कारागृह में। अगर तुम आमादा ही हो गए, तो न कोई दीवार रोक सकती है, न जंजीरें रोक सकती हैं। तुम परमात्मा को पा ही लोगे। अगर कोई रोकता है, तो तुम्हारा मन, तुम्हारे मन की दुविधा। और कोई तुम्हें नहीं रोकने वाला है- *मन का सुभाव सब कोई करै। करता होई सु अनभे रहै।* /रैदास कहते हैं: सब मन की मानकर चल रहे हैं, इसलिए दुखी हैं। मन की मत मानो, मन से ऊपर उठो, उसका साक्षी बनो। देखो मन का उपद्रव। मन का नरक देखो और जागो मन से! मन निद्रा है, तुम साक्षी हो। तुम मन नहीं हो। ऐसा अगर तुम कर पाओ, तो जाग पाओ- *करता होई सु अनभे रहै।।*

जैसे ही तुम मन से जागे, परमात्मा के साथ एक हो जाओगे। परमात्मा है स्रष्टा, कर्ता; तुम उसके साथ हो गए तो तुम भी स्रष्टा हो गए, तुम भी कर्ता हो गए, और जो स्रष्टा हो गया, कर्ता हो गया, उसके जीवन में भय कहां! वह अनभय हो जाता है। उसके जीवन से सारे भय समाप्त हो जाते हैं।

रैदास कहते हैं- *फल कारण फूली बनराइ। फलु लागा तब फूल बिलाई।।* अर्थात् फल के लिए फूल खिलते हैं। जब फूल खिलता है, तो यह मत सोचना कि अपने लिए खिलता है। फल के लिए खिलता है। जैसे ही फल लग जाता है, फूल गिर जाता है। फूल का काम बस इतना था कि वह फल के लिए राह बना दे। जैसे ही फूल का काम पूरा हो गया, फूल बिला जाता है। इसलिए अपने को पकड़कर मत बैठे रहो। तुम मंजिल नहीं हो, तुम मुकाम नहीं हो। ज्यादा से ज्यादा सराय हो, घर नहीं हो। चल पड़ना है सुबह होते ही। एक पड़ाव हो, इसी पड़ाव पर रुक नहीं जाना है। मनुष्य एक साधन है, साध्य नहीं है। मनुष्य का अतिक्रमण करना है।

फ्रेडरिक नीत्शे का प्रसिद्ध वचन है: मनुष्य इतिहास में वह सबसे अभागा दिन होगा, जिस दिन आदमी अपने से ऊपर उठने की कोशिश छोड़ देगा। जिस दिन आदमी अपना अतिक्रमण करना छोड़ देगा, वह दिन सबसे अभागा दिन होगा। मैं नीत्शे से इस संबंध में राजी हूं। मनुष्य की गरिमा यही, गौरव यही कि वह अपने से ऊपर उठने का प्रयास करता है। कुत्ते कुत्ते ही रहते हैं। कबूतर कबूतर ही रहते हैं। गुलाब गुलाब ही रहते हैं। कोई अपने से ऊपर नहीं उठता। सिर्फ मनुष्य है, जो अपना अतिक्रमण कर सकता है! इससे कभी कोई बुद्ध, कभी कोई नानक, कभी कोई रैदास पैदा हो जाता है। तुम्हारी भी यह क्षमता है।

मनुष्य की गरिमा यही, गौरव यही कि वह अपने से ऊपर उठने का प्रयास करता है। कुत्ते कुत्ते ही रहते हैं। कबूतर कबूतर ही रहते हैं। सिर्फ मनुष्य है, जो अपना अतिक्रमण कर सकता है!

लेकिन एक बात तुम्हें समझ लेनी चाहिए। फूल को विलीन हो जाना होगा फल के प्रकट होते ही। फूल का विलीन होना और फल का प्रकट होना एक साथ ही घटित होता है। लेकिन कुछ लोग बस आदमी होने में लगे रहते हैं।

ओशो

यह कविता साहित्यिक अपराध जैसी

इन दिनों सोशल मीडिया पर दिल्ली के एक महिला महाविद्यालय में आयोजित की जाने वाली भाषण प्रतियोगिता का पोस्टर वायरल है, जिसमें प्रतियोगिता का विषय लिखा गया है- *अपनी जगह से गिरकर/ कहीं के नहीं रहते/ केश, औरतें और नाखून...।* विवाद इसी विषय पर है, जो असल में एक कविता की पंक्ति है, जिसकी कवयित्री हैं अनामिका। अब आयोजक ने क्या सोचकर यह विषय रखा, यह तो वही जानते होंगे, लेकिन विवाद होने के बाद भाषण प्रतियोगिता स्थगित करने की भी खबर है, बावजूद इसके इस प्रकरण से साहित्यिक दुनिया में उथल-पुथल मच गई है। देखा जाए, तो यह कविता ही एक साहित्यिक अपराध है। इसमें जिस संस्कृत श्लोक का उल्लेख हुआ है, वह सही नहीं लिखा गया है। वह इस तरह से है- *स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते दन्ताः केशा नखा नराः। इति विज्ञाय मतिमानः स्वस्थानं न परित्यजेत्।।* इस श्लोक में कहीं भी औरत का जिक्र नहीं है। श्लोक के अनुसार, इसका अर्थ यह है कि स्थान-भ्रष्ट होकर या अपनी जगह से गिरकर केश, दांत, नाखून और मनुष्य शोभते नहीं, इसीलिए बुद्धिमान लोग अपना स्थान नहीं त्यागते। यहां स्त्री है, लेकिन वह मनुष्य में शामिल है। यही इस श्लोक का अर्थ अथवा भाष्य है। यदि अध्यापक इसका गलत अर्थ करते थे, तो इस बात का जिक्र या आभास कविता में कहीं होना चाहिए था, अन्यथा मूल कवि और कविता के साथ अन्याय होता है, और यह भी कहा जा सकता है कि संस्कृत स्त्री-विरोधी भाषा है। वैसे भी श्लोक को बदलना अपराध है। मुझे यहां वीरेन डंगवाल की एक कविता याद आती है- *कुछ कद्दू चमकाए मैंने।* अनामिका भी यहां अपना नारीवाद का कद्दू चमका रही हैं। आप कद्दू चमकाइए, पर किसी श्लोक की नाक तो चाकू से मत काटिए।

कृष्ण कल्पित, टिप्पणीकार

गिरता स्तर

कवयित्री अनामिका की कविता पर दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़ा ताजा विवाद न सिर्फ लेखिका के, बल्कि विश्वविद्यालय के गिरते स्तर का भी संकेत है। लेखिका को कुछ हद अभिव्यक्ति की आजादी की छूट मिल सकती है, लेकिन कोई महाविद्यालय कैसे नारी-विरोधी विषय पर इस तरह भाषण-प्रतियोगिता आयोजित करवा सकता है? यह बताता है कि पुरुष वर्चस्ववादी कुंठा अब भी पूरी तरह से खत्म नहीं हुई है। जब भी पुरुषों को मौका मिलता है, वे महिलाओं को कुचलने का अवसर जाया नहीं होने देते।

कीर्ति, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

बेजगह कविता

बेजगह

अनामिका

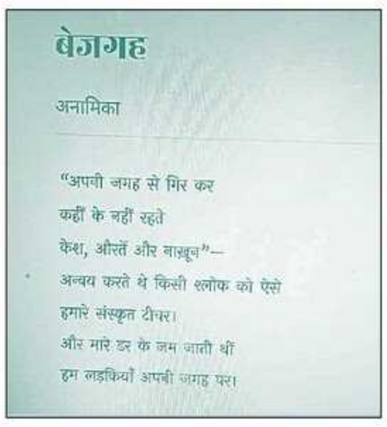

"अपनी जगह से गिर कर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून"–
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थीं
हम लड़कियाँ अपनी जगह पर।

इसका भावार्थ न समझना दुर्भाग्यपूर्ण

साहित्य अकादेमी पुरस्कृत साहित्यकार अनामिका की एक कविता पर इन दिनों बेवजह का विवाद किया जा रहा है। इस कविता को यदि आप पूरा पढ़ेंगे, तो समझ सकेंगे कि इसमें कैसे उस संस्कृत शिक्षक पर कटाक्ष किया गया है, जो महिलाओं को बेहद तंग नजरिये से देखता है और पूरी कक्षा को उसी नजर से देखने की नसीहत देता है। अनामिका ऐसी ही एक कक्षा का दृश्यांकन अपनी इस कविता में करती हैं। इस कविता को पढ़कर आप यह साफ-साफ महसूस करेंगे कि लेखिका ने किस तरह बताया है कि शुरुआती उम्र में ही श्रेष्ठता बोध की ग्रंथि आपके भीतर रोप दी जाती है, जो आगे चलकर पुरुष वर्चस्ववादी समाज का मजबूत आधार बन जाती है। मगर अफसोस, इस भावार्थ को समझने में कई लोग नाकाम रहे और दिल्ली के एक महाविद्यालय के भाषण प्रतियोगिता के बहाने लेखिका और उसकी रचना पर हमलावर हो उठे। अब तो कई लोग इस कविता में संस्कृत श्लोक के गलत प्रयोग पर भी नाराजगी दिखा रहे हैं, जबकि अपनी बात रखने के लिए किया गया भाषायी बदलाव है यह, जिसका हक हर रचनाकार को होता है।

यह पूरा घटनाक्रम बताता है कि हम कितने संकीर्ण हो गए हैं। हमारी समझ का दायरा इतना संकुचित हो गया है कि हम किसी रचना की व्यापकता देख ही नहीं पाते। यही कारण है कि अनामिका जिस कविता में असहमति और प्रतिरोध की बात कह रही हैं, उसमें हम उनकी सहमति के संकेत देख रहे हैं। कितना एकहरापन है यह? इससे यह भी पता चलता है कि आभासी दुनिया कितनी तंग है। यहां समझ का निहायत अभाव है। मैंने यहां बड़े से बड़े लोगों को भी समझदारी के स्तर पर कंगाल देखा है। इसी कविता पर जिस तरह की टीका-टिप्पणी की जा रही है, वह बताता है कि लोगों ने पूरी कविता पढ़ी ही नहीं, सिर्फ शुरुआती तीन पंक्तियों से अपनी राय बना ली, और यह राय भी ऐसी, जो कविता की मूल भावना के बिल्कुल खिलाफ है।

यह पूरा प्रकरण ही दुर्भाग्यपूर्ण है। मेरा मानना है कि इस विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती थी। इसके पक्ष और विपक्ष में जब तर्क पेश किए जाते, तो मुमकिन है कि इस कविता का एक नया फलक हम सबके सामने खुलता। मगर ऐसा नहीं हो सका और एक अनावश्यक विवाद ने एक बड़ा अवसर हमारे हाथ से छीन लिया। अब यह उम्मीद ही की जा सकती है कि लोग इस कविता को पूरा पढ़ेंगे, और तब अपनी राय बनाएंगे। इससे सुधी पाठकों को भी काफी कुछ समझने का मौका मिलेगा।

कमलकांत, टिप्पणीकार

सेहतमंद किडनी के लिए क्या करें

मधुमेह और उच्च रक्तचाप की तुलना में अपने क्रिएटिनिन लेवल के बारे में लोग कम ही जानते हैं। किडनी की अच्छी सेहत के लिए क्रिएटिनिन का सामान्य रेंज में रहना जरूरी है। नियमित जांच, स्वस्थ जीवनशैली और खानपान से जुड़ी किन बातों पर ध्यान देना क्रिएटिनिन लेवल और किडनी को सही रख सकता है, बता रहे हैं विवेक शुक्ला

1.5 लाख लोग देश में हर साल किडनी फेल्योर की समस्या से पीड़ित होते हैं। वहीं डायलिसिस सुविधा और किडनी ट्रांसप्लांट सुविधाएं मांग की तुलना में कम हैं।

45 सौ से अधिक लोगों का ही देश में प्रतिवर्ष किडनी प्रत्यारोपण होता है, जबकि जरूरत कहीं अधिक हैं।

10 में से एक व्यक्ति को भारत में किडनी संबंधी समस्याएं होने की आशंका है, एक अनुमान के अनुसार।

किडनी की समस्याएं कई कारणों से होती हैं, लेकिन बात जब निदान की हो तो इसकी जानकारी रक्त परीक्षण के जरिये सीरम क्रिएटिनिन के स्तर से मिलती है। यदि क्रिएटिनिन का स्तर रेंज से अधिक है, तो किडनी रोगों की आशंका बढ़ जाती है।

क्रिएटिनिन, अमेरिका स्थित दि नेशनल किडनी फाउंडेशन के अनुसार, क्रिएटिनिन मांसपेशियों का अपशिष्ट उत्पाद है, जो रीढ़ की हड्डी के दोनों ओर स्थित किडनी की सेहत का सूचक है। इसमें एमीनो एसिड होता है, जो अधिक चिकनाई युक्त चीजें खाने से बनता है। हमारी किडनी खून से किएटिनिन के अलावा कई अपशिष्ट उत्पादों को फिल्टर करती है। फिल्टर होने के बाद ये अपशिष्ट उत्पाद पेशाब से बाहर निकल जाते हैं। पर, जब किडनी ढंग से काम नहीं करती, तब ये अपशिष्ट रक्त में जमा होने लगते हैं। मात्रा बढ़ने पर कई समस्याएं सामने आने लगती हैं...

क्रिएटिनिन लेवल बढ़ने के लक्षण

किसी अस्थायी कारण से अगर क्रिएटिनिन स्तर बढ़ता है, तो उसके खास लक्षण सामने नहीं आते। पर, किडनी संबंधी समस्या होने पर इस तरह के लक्षण सामने आ सकते हैं...

- मूत्र मार्ग (यूटीआई) में संक्रमण। इलाज न होने से संक्रमण किडनी में पहुंच जाता है।
- पेशाब में जलन व दर्द। कम, पर जल्दी-जल्दी पेशाब आना।
- हाथों व पैरों में सूजन, मसल्स क्रैंप
- सांस लेने में दिक्कत, सीने में दर्द
- शरीर में खुजली होना।
- जी मिचलाना व बेहोशी रहना
- खून की कमी (एनीमिया) होना।
- अनिद्रा, आंखों के नीचे सूजन।

उपरोक्त लक्षण होने पर डॉक्टर या किडनी विशेषज्ञ (नेफ्रोलॉजिस्ट) से मिलें। सीरम क्रिएटिनिन द्वारा विशेषज्ञ ग्लोमेरुलर फिल्टरेशन रेट (जीएफआर) जानते हैं। उसी आधार किडनी की हालत का आकलन करते हैं।

क्यों बढ़ता है क्रिएटिनिन

किडनी संबंधी विकार : किडनी की प्रक्रिया में गड़बड़ी, क्रिएटिनिन बढ़ने का मुख्य कारण है। क्रोनिक किडनी रोगों में शरीर क्रिएटिनिन सहित अन्य अशुद्धियां फिल्टर नहीं कर पाता है। मधुमेह, पथरी, संक्रमण, ग्लोमेरुलोनेफ्राइटिस व गुर्दे की रुकावट जैसी स्थिति में किडनी की फिल्टर क्षमता कम हो जाती है व क्रिएटिनिन बढ़ने लगता है।

मांसपेशियों की चोटें : चोट, तीव्र व्यायाम या कुछ सेहत समस्याओं में मांसपेशियों की टूट-फूट खून में अधिक मात्रा में क्रिएटिनिन जारी करती है, जिससे स्तर बढ़ जाता है।

उच्च प्रोटीन आहार : लंबे समय तक उच्च प्रोटीन युक्त आहार लेना भी किडनी की फिल्टर क्षमता पर असर डालता है। किडनी को अधिक श्रम करना पड़ता है व क्रिएटिनिन बढ़ सकता है।

डिहाइड्रेशन : शरीर में पानी की कमी होने पर पेशाब कम निकलता है। इसका अर्थ है कि क्रिएटिनिन व अन्य अशुद्धियां मूत्र पथ में देर तक रहती हैं, जो क्रिएटिनिन का स्तर बढ़ाती हैं।

दवाओं का असर : कीमोथेरेपी, कुछ एंटीबायोटिक दवाएं भी क्रिएटिनिन लेवल बढ़ा सकती हैं। ब्लड प्रेशर व ब्लड शुगर का बेकाबू बने रहना भी किडनी की सेहत पर बुरा असर डालता है। रक्त में शर्करा बढ़ने से फिल्टर प्रक्रिया पर जोर पड़ता है, वहीं रक्त नलिकाओं के संकुचन से अंगों तक रक्त संचार में बाधा आती है। नमक अधिक खाना, मोटापा, धूम्रपान और बिना परामर्श दर्द निवारक दवाएं, किडनी पर बुरा असर डालती हैं व क्रिएटिनिन का स्तर भी बढ़ा सकती हैं।

जांच व उपचार

किडनी रोगों की पहचान व क्रिएटिनिन स्तर जानने के लिए सीरम क्रिएटिनिन परीक्षण व क्रिएटिनिन क्लीयरेंस टेस्ट कराया जाता है। क्रिएटिनिन के स्तर के अनुसार ही डॉक्टर उपचार का विकल्प चुनते हैं। पहले से ली जा रही दवाओं में बदलाव, रक्तचाप ठीक करने की दवाएं, खानपान में बदलाव के तरीके अपनाए जाते हैं।

डायलिसिस की जरूरत : जब सीरम क्रिएटिनिन का स्तर रक्त में वयस्कों में 5 एमजी/डीएल या इससे अधिक और छोटे बच्चों में 2 एमजी/डीएल या इससे अधिक हो जाता है तो यह गंभीर स्थिति है। ऐसी हालत में रक्त से क्रिएटिनिन व अन्य अपशिष्ट हटाने के लिए डायलिसिस की जरूरत होती है।

05 ग्राम नमक से कम रोज खाना किडनी व दिल की सेहत के लिए है अच्छा, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल की रिपोर्ट के अनुसार

क्या कहता है आयुर्वेद

मोथा, पित्तपापड़ा, उशीर, चंदन, सुगंध बाला और सोंठ को बराबर मात्रा में और मोटा-सा चूर्ण बना लें। 5 ग्राम चूर्ण करीब 350 मिलीलीटर पानी में उबालें। जब पानी आधा रह जाए तो उसे छानकर ठंडा हो जाने दें। रोज इसकी तीस मिलीलीटर मात्रा भोजन के 20 मिनट पहले लें। सभी चीजें न मिल रही हों तो मोथा या गिलोय पानी में उबाल कर लें।

- चाय या कॉफी की जगह सेंधा नमक व काली मिर्च मिलाकर सहजन की फली का सूप पिएं।
- प्रोटीन कम लें। दाल में साबुत मूंग दाल ही लें। जौ आटे की रोटी व चावल लें। गोभी, पालक आदि न लें। भूख से कम खाएं।
- पेठा की सब्जी, मिठाई और रस, आंवला की चटनी फायदेमंद रहते हैं।
- दिन में न सोएं। रात 10 बजे तक सो जाएं।
- पेशाब न रोकें। तनाव को हावी न होने दें।
- किड़नी रोगों में काकमाची, भूमि आमलकी, पुनर्नवा, शिलाजीत, तृणपंचमूल से लाभ मिलता है, पर इन्हें विशेषज्ञ से पूछ कर लें।

हमारे विशेषज्ञ

डॉ. शरद शेठ, नेफ्रोलॉजिस्ट, कोकिलाबेन अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई। डॉ. संदीप देशमुख, नेफ्रोलॉजिस्ट, एपेक्स हॉस्पिटल, वाराणसी। डॉ. संघमित्रा दाश, श्रीआनंदम् आयुर्वेद, करोलबाग, नई दिल्ली।

उम्र के अनुसार क्रिएटिनिन का स्तर

आपकी मांसपेशियों पर निर्भर करता है क्रिएटिनिन का स्तर। महिलाओं में आमतौर पर पुरुषों की तुलना में क्रिएटिनिन का स्तर कम होता है। बच्चों में भी यह कम होता है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, मांसपेशियां कमजोर व कम होने लगती हैं। इससे सामान्य क्रिएटिनिन स्तर में कमी आती है। जिस तरह 120/80 रक्तचाप या ब्लड प्रेशर को नॉर्मल मानते हैं, ठीक उसी तरह सामान्य शब्दों में क्रिएटिनिन को 0.5 से 1.2 तक ठीक माना जाता है।

उम्र समूह (साल)	अनुमानित सीरम क्रिएटिनिन स्तर (एमजी/डीएल) पुरुष	महिला
18 -41	0.6 -1.2	0.5 - 1.0
41 - 61	0.6 - 1.3	0.5 - 1.1
61 साल से ऊपर	0.7 -1.3	0.5 - 1.2

खानपान में करें ये बदलाव

एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर मौसमी फल व सब्जियां खाएं। क्रैनबेरी, ब्लूबेरी, कीवी और सेब का सेवन करें। करेला, शिमला मिर्च, खीरा व प्याज जैसी सब्जियां भी क्रिएटिनिन लेवल कम रखने में मदद करती हैं।

पशुओं से मिलने वाला प्रोटीन न खाएं। पौधों से मिलने वाला प्रोटीन लें। बींस, पतली दाल व टोफू में एक ओर अच्छी गुणवत्ता वाला प्रोटीन होता है, वहीं पोटैशियम की मात्रा भी कम होती है। खाने की मात्रा, स्थिति पर निर्भर करती है, ऐसे में अपने डॉक्टर से जरूर बात करें।

सवाल-जवाब

सीधा चलने पर होता है दर्द!

■ मेरी सात वर्ष की बेटी के दायें घुटने के नीचे मांसपेशियों में दर्द रहता है। इसका क्या कारण हो सकता है?

डॉ. सुदीप जैन
निदेशक, स्पाइन सॉल्यूशंस इंडिया

बड़ों की तुलना में बच्चे कहीं ज्यादा खेलना-कूदना आदि क्रियाएं करते हैं। उन्हें पसीना ज्यादा आता है, जिसके साथ शरीर से कई खनिज भी निकलते हैं। जब इन खनिज की पूर्ति नहीं होती तो डिहाइड्रेशन हो जाता है। शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स जैसे सोडियम, पोटैशियम और क्लोराइड की कमी हो जाती है। इस कमी से बच्चों को हड्डियों, जोड़ों, मांसपेशियों, तंत्रिकाओं, टेन्डंस, लिगामेंट और कार्टिलेज में समस्याएं उत्पन्न होती हैं। बढ़ते बच्चों को पोषक तत्वों जैसे प्रोटीन, अमीनो एसिड, कैल्शियम, मैग्नीशियम, मिनरल्स, विटामिन, विटामिन डी व बी12 और विटामिन-के से युक्त खानपान की जरूरत होती है। इनकी कमी से मांसपेशियों में जोड़ों में या हड्डियों में दर्द की समस्या उत्पन्न होने लगती हैं। आप विशेषज्ञ डॉक्टर से मिलकर अपनी बेटी के लिए पौष्टिक खान-पान की जानकारी लें।

■ मेरी उम्र 48 साल है। हमेशा झुक कर चलती हूं। सीधा चलने पर दर्द होता है। क्या करें?

आपकी उम्र में, मेनोपॉज के दौरान शरीर में हार्मोन संबंधी बड़े बदलाव होते हैं। आमतौर पर महिलाएं धूप में कम बैठती हैं। लगातार घर के भीतर रहने के कारण उनमें विटामिन डी की कमी हो जाती है। व्यायाम नहीं कर पातीं और ज्यादातर अपने खानपान की अनदेखी करती हैं। डेयरी उत्पाद का कम सेवन उनमें ऑस्टियोपोरोसिस ऑस्टियोपेनिया व ऑस्टियो मेलेशिया जैसी समस्याओं का कारण बन जाता है। नतीजा, हड्डियों का घनत्व कम होने लगता है। जिसका दुष्प्रभाव रीढ़ की हड्डी के वर्टेब्रल कॉलम पर पड़ता है। नतीजतन, रीढ़ की हड्डियां कमजोर होकर आगे की तरफ झुकने लगती हैं। वर्टेब्रल कॉलम सिकुड़ कर छोटा होने से व्यक्ति को आगे झुक कर चलने के लिए मजबूर होना पड़ता है। गलत पॉस्चर भी हड्डियों पर बुरा असर डालता है। इससे भी रीढ़ सीधे रखने में दिक्कत हो सकती है। आप किसी स्पाइन स्पेशलिस्ट से मिलें। वे स्पाइन और पेल्विक रीजन का एक्सरे, डेक्सा स्कैन टेस्ट और ब्लड टेस्ट आदि करवा सकते हैं। रक्त परीक्षण से शरीर में कैल्शियम, मैग्नीशियम व फास्फोरस की मौजूदगी पता चलती है। खानपान में बदलाव के साथ कुछ दिन फिजियोथेरेपी लेने का सुझाव दे सकते हैं। आगे झुक कर चलने की आपकी समस्या का एक इलाज नॉन सर्जिकल भी है, जिसमें वर्टिकल बोन के अंदर इंजेक्शन लगाए जाते हैं। इससे काफी आराम मिलता है। जरूरत पड़ने पर 'काइफोप्लास्टी' भी की जाती है।

भेजें अपने सवाल

अपनी सेहत से जुड़े सवाल **tanmanhindustan@gmail.com** पर मेल करें। आप इस पते पर भी सवाल भेज सकते हैं

तन-मन, हिन्दुस्तान, आकृति बिल्डिंग, सी-164, सेक्टर-63, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर- 201301 (उत्तर प्रदेश)

देखभाल

बहुत डकार आती है तो इन बातों पर दें ध्यान

डकार आना एक सामान्य प्रक्रिया है। यह किसी को भी और कभी भी आ सकती है। यह शरीर की अतिरिक्त हवा बाहर निकालने का तरीका है, जो खाने या पीने के दौरान मुंह से पेट या इसोफेगस तक चली जाती है। पर अधिक डकार आती है, तो डॉक्टरी परामर्श जरूरी है।

क्या है डकार लेने का कारण

हवा का फंस जाना : खाने, पीने या बात करते समय कई बार हवा पेट में चली जाती है। इसे निकालने की आवश्यकता होती है, जिससे डकारने का अनुभव होता है। जल्दी से खाना खाना, स्ट्रॉ का उपयोग करना, चिंगम चबाना या कार्बोनेटेड ड्रिंक्स आदि इसके कारण बन सकते हैं। मूली, गोभी, मटर, ग्वार फली, प्याज, केला, फ्रेंच बीन्स, दालें और राजमा खाने के बाद भी ऐसा होता है।

गैस्ट्रोइसोफेजियल रिफ्लक्स डिजीज : जीईआरडी तब होता है, जब गला और पेट के बीच की मांसपेशी नीचे गले के पास मौजूद स्फिंक्टर कमजोर हो जाता है। इससे एसिड वापस ऊपर आ जाता है। ऐसे में डकार, सीने में जलन व उल्टी के लक्षण भी होते हैं।

गैस्ट्राइटिस : गैस्ट्राइटिस पेट की लाइनिंग की सूजन है। यह बैक्टीरियल संक्रमण, अत्यधिक शराब का सेवन करने, दवाओं के अधिक उपयोग या तनाव के कारण भी हो सकता है। पेट में सूजन अत्यधिक डकार लेने को उकसा सकती है।

पेप्टिक अल्सर : पेप्टिक अल्सर पेट, छोटी आंत या गले की लाइनिंग पर खुले घाव होते हैं। ये बैक्टीरियल संक्रमण या दवाएं लंबे समय तक लेने से होते हैं। इससे एसिड अधिक बनता है और डकारें आ सकती हैं।

बेचैनी और तनाव : तनाव पाचन प्रक्रिया को बदलकर पाचन तंत्र की मांसपेशियों के तनाव को बढ़ा सकता है। इससे ब्लोटिंग, गैस और डकार जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

डकार दूर करने के उपाय

धीरे-धीरे खाने और पीने की कोशिश करें। इससे हवा पेट के अंदर नहीं जाएगी। कार्बोनेटेड पेय और बीयर आदि न पिएं। टॉफी व हार्ड कैंडी आदि न खाएं। स्मोकिंग छोड़ दें। अपने डेन्चर की जांच कराएं। मुंह की खराब सेहत, जबड़े की सेटिंग में दिक्कत भी पाचन तंत्र पर बुरा प्रभाव डालते हैं। रात में सोने व खाने के बीच अंतर रखें। खानपान की आदतों में बदलाव से पेट में गैस बनने की समस्या कम करने में मदद मिलती है। भोजन में जीरा, अजवाइन, हल्दी, अदरक, सौंफ आदि को भी शामिल करें।

इसके अलावा डेयरी उत्पादों, ग्लूटन, गेहूं उत्पादों की एलर्जी भी डकार का कारण हो सकती है। जिन लोगों में खाना देर तक आंतों में रहता है, उन्हें भी डकार की समस्या रहती है। डकार के साथ पेट दर्द, सीने में जलन, हाथ में झनझनाहट है तो तुरंत डॉक्टर से मिलने में देरी नहीं करनी चाहिए।

स्मिता सिंह (सिग्नस लक्ष्मी हॉस्पिटल, वाराणसी में फिजिशियन डॉ. संजय कुमार से बातचीत)

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन प्रसन्न रहेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी।

वृष : आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। नौकरी के लिए साक्षात्कारादि में सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

मिथुन : वाणी में सौम्यता रहेगी। नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। खर्च भी बढ़ेंगे।

कर्क : आशा-निराशा के भाव मन में हो सकते हैं। जीवन साथी की सेहत का ध्यान रखें। माता-पिता का साथ रहेगा। कुटुंब में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

सिंह : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा। लाभ के मौके मिलेंगे। संतान से सुखद समाचार मिलेंगे।

कन्या : मन प्रसन्न तो रहेगा। पर, धैर्यशीलता भी बनाए रखें। शैक्षिक कार्यों के प्रति सचेत रहें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। नौकरी में आय में वृद्धि होगी।

तुला : आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वृश्चिक : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। शैक्षिक कार्यों के प्रति सचेत रहें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा। कारोबार के लिए माता-पिता का साथ मिलेगा।

धनु : बातचीत में संतुलित रहें। करोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से लाभ में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। सेहत का ध्यान रखें।

मकर : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। कला या संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। भवन सुख में वृद्धि हो सकती है। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

कुंभ : संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। माता-पिता की सेहत का ध्यान रखें। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। भागदौड़ अधिक रहेगी। खर्च बढ़ेंगे।

मीन : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। शैक्षिक कार्यों में विदेश जाने के योग बन रहे हैं। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। खर्च बढ़ेंगे।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

23 फरवरी, शुक्रवार, 04 फाल्गुन (सौर) शक संवत् 1945, 11 फाल्गुन मास प्रविष्टे (पंजाब पंचांग) 2080,12 शब्बान सन् 1445, माघ शुक्ल चतुर्दशी (विक्रमी संवत्) अपराह्न 03.34 बजे तक पश्चात पूर्णिमा, आश्लेषा नक्षत्र सायं 07.26 बजे तक, वणिज करण। चंद्रमा कर्क राशि में सायं 07.26 बजे तक उपरांत सिंह राशि में।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। वसंत ऋतु। प्रातः 10.30 बजे से दोपहर 12 बजे तक राहुकालम्। भद्रा अपराह्न 03.34 मिनट से रात्रि 04.47 मिनट तक। गण्डमूल विचार।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया फेंगशुई के उपायों के बारे में बताएं, इन्हें किस तरह प्रयोग करना चाहिए?
शरद, पटना

- फेंगशुई में लाफिंग बुद्धा को सौभाग्य एवं खुशहाली का प्रतीक मानते हैं। इन्हें मुख्य द्वार के सामने इस तरह लगाएं ताकि इनकी दृष्टि मुख्य द्वार पर रहे।
- मुंह में सिक्का दबाए तीन टांग वाले मेंढक को मुख्य द्वार के पास इस तरह रखें कि इसका मुख अंदर की ओर हो। यह धन आगमन में सहायक होता है।
- कॉपर कॉइन को एक लाल रेशमी रिबन से बांधकर मुख्य द्वार के पीछे हैंडल से लटकाएं। धन आगमन में सहायक इन्हें घर के अंदर लगाते हैं।

वर्ग पहेली : 7522

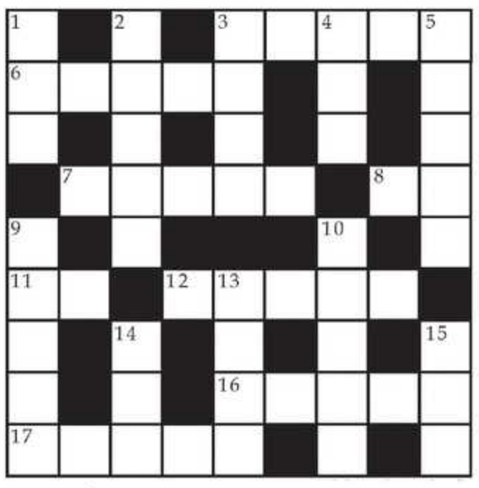

बाएं से दाएं
3. जिसके बारे में राजपत्र में छापा गया हो (5)
6. बड़ा पहाड़; पर्वतों का राजा; हिमालय (5)
7. अनिर्वाचित सदस्य का समिति में सम्मिलित किया जाना; सहयोग हेतु बैठक में शामिल किया जाना (5)
8. विफल; घबराया हुआ; भयभीत (2)
11. खाना परोसने का पात्र; बड़ी तश्तरी; भोजन देने के लिए गोल पात्र (2)
12. औजार; कल; यंत्र; सामग्री (5)
16. अत्याचार करना; जुल्म करना (3,2)
17. ठहराना; नियत करना; सुनिश्चित करना; निपटाना (2,3)

ऊपर से नीचे
1. तोप चलाने वाला (3)
2. अपना पक्ष रखना; बताना; चर्चा करना; सूचना देना (2,3)
3. राजकार्य; प्रशासन (2,2)
4. तीन घंटे का समय; दिन का आठवां भाग (3)
5. तनाव में ग्रस्त; तनाव में डूबा हुआ; तनाव से पीड़ित (5)
9. कहलाने वाला; यों ही कहा जाने वाला (5)
10. घूमना; टहलना; भ्रमण करना (2,3)
13. दे मारना; पछाड़ना (4)
14. भाल; माथा; ललाट; शीश; सिर (3)
15. कोना; छोर; सिरा; तीर; तट (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 7521

सुडोकू : 7506

* कठिन

	7	2	6					
		5	8		9	2		6
							7	
8		9		2				
1								4
				1		7		9
	5							
2		3	1		7	6		
					5	1	4	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 7505

4	2	6	7	5	8	9	3	1
8	5	9	4	3	1	6	2	7
3	7	1	6	9	2	8	4	5
1	9	4	2	6	7	5	8	3
6	3	2	8	4	5	7	1	9
7	8	5	3	1	9	4	6	2
5	6	7	1	8	3	2	9	4
2	1	8	9	7	4	3	5	6
9	4	3	5	2	6	1	7	8

अमर उजाला

प्रवाह

महोत्सव विश्वास का

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शुक्रवार, 23 फरवरी 2024

प्रत्येक शिशु यह संदेश लेकर आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है।
- रवींद्रनाथ टैगोर

देश के वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति पर केंद्रित नीति आयोग की सिफारिशें स्वागतयोग्य हैं, क्योंकि यह बुजुर्गों के जीवन स्तर को बेहतर बनाते हुए उन्हें देश की मुख्य आर्थिक धारा में समायोजित करने के उपायों को भी रेखांकित करती हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार इन्हें लागू करने की इच्छाशक्ति दिखाएगी।

यह बुजुर्गों का हक है

देश के वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति पर केंद्रित नीति आयोग की 'सीनियर केयर रिफॉर्म इन इंडिया- रिइमैजिनिंग द सीनियर केयर पैराडाइम' नामक हालिया रिपोर्ट का स्वागत होना चाहिए, क्योंकि यह बुजुर्ग आबादी के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के साथ उन्हें मुख्य आर्थिक धारा में समायोजित करने के जरूरी उपायों को भी रेखांकित करती है। देश में 78 फीसदी बुजुर्गों के पास कोई पेंशन योजना नहीं है, यह बताते हुए रिपोर्ट एक गंभीर वास्तविकता की ओर ध्यान खींचती है। रिपोर्ट में इसका भी खुलासा किया गया है कि अभी देश में 60 वर्ष से अधिक उम्र के 12.8 फीसदी लोग हैं, जो साल 2031 तक 13.2 फीसदी और 2050 तक 19 फीसदी हो जाएंगे। यह उस जनसांख्यिकीय बदलाव की झलक देता है, जिससे देश गुजर रहा है। उल्लेखनीय है कि कुछ महीने पहले संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) द्वारा जारी रिपोर्ट में भी भारत की आबादी में बुजुर्गों की हिस्सेदारी के 2050 तक दोगुने होने की बात कही गई थी। चूंकि बुजुर्गों की इस आबादी में एक बड़ी संख्या मजदूरों और असंगठित क्षेत्र की भी है, इसलिए इनकी सामाजिक सुरक्षा का मुद्दा ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। हालांकि केंद्र सरकार बुजुर्गों के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम चलाती है, जिसमें कई उप-योजनाएं भी शामिल हैं, लेकिन जैसा यूएनएफपीए की रिपोर्ट भी कहती है, इन योजनाओं के बारे में जागरूकता के अभाव और इनमें निहित प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलताओं की वजह से बुजुर्ग अक्सर इनका लाभ नहीं ले पाते हैं। रिपोर्ट खुद कहती है कि भारत में साठ वर्ष से ज्यादा उम्र के महज 18 फीसदी लोगों के पास स्वास्थ्य बीमा है, जो देश में सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क का दायरा सीमित होने की ओर ही इशारा करता है। चूंकि ये बुजुर्ग आजीविका के लिए अपनी बचत पर निर्भर होते हैं, ऐसे में, नीति आयोग का यह कहना कि बुजुर्गों की जमा रकम पर ब्याज दर की एक वाजिब निचली सीमा तय होनी चाहिए, बेहद महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, बुजुर्गों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले उत्पादों पर करों में बदलाव का सुझाव भी उपयोगी है, क्योंकि इससे उन पर कम बोझ पड़ेगा। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में वरिष्ठ नागरिकों के आत्मसम्मानपूर्ण जीवन के अधिकार की रक्षा हो सके, इस लिहाज से नीति आयोग की सिफारिशें बेहद जरूरी हैं, उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार इन्हें लागू करने की इच्छाशक्ति दिखाएगी।

पाकिस्तान में कुछ भी संभव है

राजनीति संभावनाओं का खेल है और पाकिस्तान में यह कुछ लंबा खिंचता दिख रहा है। सेना के भीषण दबाव में विरोधी मिलकर सरकार बना तो रहे हैं, लेकिन पाकिस्तान के संसदीय इतिहास के सबसे मजबूत विपक्ष को देखते हुए कौन जाने, यही सेना शहबाज सरकार को पलटने का फरमान जारी कर दे।

मरिआना बाबर
वरिष्ठ पाकिस्तानी पत्रकार

विगत आठ फरवरी को पाकिस्तान में आम चुनाव हुए और उसी दिन आधी रात तक अफरा-तफरी मच गई, क्योंकि पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) के सबसे कद्दावर नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने अपनी हार की गिनती शुरू कर दी। हालांकि पीएमएल-एन प्रमुख नवाज शरीफ को चौथी बार मुल्क का प्रधानमंत्री बनाने के लिए सुरक्षा प्रतिष्ठान ने उनकी राह की सभी कानूनी बाधाओं को हटा दिया था, लेकिन वह खैबर पख्तुनख्वा प्रांत के मनसेरा एबोटाबाद की अपनी सुरक्षित सीट भी इमरान खान की पीटीआई समर्थित एक निर्दलीय उम्मीदवार के हाथों हार बैठे। नवाज शरीफ इस सदमे से अब तक उबर नहीं पाए हैं और सार्वजनिक नजरों से बचते फिर रहे हैं।

वास्तव में सुरक्षा प्रतिष्ठान, जिसने विजेताओं की सूची से पीटीआई को बाहर रखने के लिए गैरकानूनी तरीके से हर तरह की कोशिश की, को भारी झटका लगा, क्योंकि कैदी नंबर 804 (जेल में इमरान खान की कैदी संख्या) से जुड़े निर्दलीय उम्मीदवारों ने चुनाव में जीत हासिल की। लेकिन इमरान समर्थित निर्दलीय उम्मीदवारों के पास बहुमत का वह जादुई आंकड़ा नहीं है कि वे केंद्र में सरकार बना सकें। नतीजे घोषित होने के लगभग दो हफ्ते तक पूरा मुल्क और दुनिया भर में हर कोई इंतजार करता रहा, लेकिन राजनेता न तो गठबंधन सरकार बनाने पर कोई फैसला कर पाए और न ही सहमत हो पाए।

कराची शेयर बाजार गिरने लगा और कार्यवाहक सरकार के मुताबिक बजट घाटा बढ़कर 85.4 खरब डॉलर तक पहुंच गया। सुधारों और महत्वपूर्ण विदेशी फंडिंग में देरी के कारण बने गतिरोध ने अंतरराष्ट्रीय बॉन्ड की बिकवाली को बढ़ावा दिया और मुल्क में आर्थिक संकट के और अधिक बढ़ने की विश्लेषकों की आशंका को बल मिला। घटती विदेशी मुद्रा के साथ पाकिस्तान आर्थिक संकट में था, अगले दो महीनों में एक अरब बॉन्ड भुगतान के कारण उस पर और दबाव बढ़ेगा, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ उसका तीन अरब डॉलर का फंडिंग कार्यक्रम 12 अप्रैल को समाप्त हो रहा है। वित्त मंत्रालय के पूर्व सलाहकार और सस्टेनेबल डेवलपमेंट पॉलिसी इंस्टीट्यूट के साजिद अमीन ने कहा कि 'यदि कोई भी पार्टी सामान्य बहुमत नहीं जुटा पाती है, तो पाकिस्तान गंभीर राजनीतिक और आर्थिक संकट के दौर में प्रवेश कर जाएगा।'

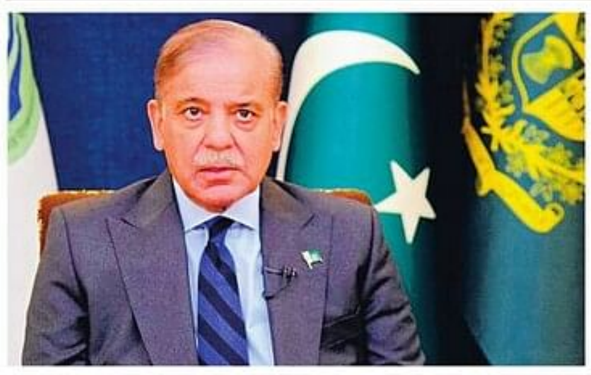

यह संकट इतना गहरा गया कि आर्थिक पतन से चिंतित सुरक्षा प्रतिष्ठान ने पीपीपी और पीएमएल-एन को एक सख्त संदेश भेजा कि बस बहुत हो चुका, अगर छह दौर की वार्ता के बाद भी वे सरकार की घोषणा नहीं कर पाए, तो वे उनके लिए फैसले लेंगे। रिपोर्टों में यह भी कहा गया है कि सुरक्षा प्रतिष्ठान ने जेल में इमरान खान से बात करने के लिए भी एक मध्यस्थ भेजा कि वह नौ मई, 2023 की तबाही और फौजी प्रतिष्ठानों पर हमले में अपनी भूमिका कबूल कर लें, तो अपने निर्दलीय उम्मीदवारों को सत्ता में शामिल कर सकेंगे और उन्हें इस्लामाबाद स्थित उनके आवास बनिगाला ले जाया जाएगा, जिसे फिलहाल एक उप-जेल में तब्दील कर दिया गया है, जहां उनकी पत्नी बुशरा बीबी को रखा गया है। लेकिन इमरान खान ने अपने प्रसिद्ध दो शब्दों में जवाब दिया-बिल्कुल नहीं। जाहिर है कि पाकिस्तान के इतिहास में सबसे विवादास्पद चुनाव में धांधली करने वाला सुरक्षा प्रतिष्ठान अब हाथ मल रहा है।

सुरक्षा प्रतिष्ठान के करीबी माने जाने वाले सीनेटर मुशाहिद हुसैन (पीएमएल-एन) ने मानो सेना के संकेत पर सीनेट में बिल्कुल सटीक कहा कि यदि पीएमएल-एन, पीपीपी और पीटीआई मिलकर कोई फैसला नहीं लेते हैं, तो सैन्य मुख्यालय फैसला करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि मौजूदा स्थिति में सबसे बड़ी जिम्मेदारी नवाज शरीफ की है। पीपीपी के आसिफ अली जरदारी और पीएमएल-एन के शहबाज शरीफ को जैसे ही सेना का संदेश मिला, आधी रात में जल्दबाजी में उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके घोषणा की कि अब उनके पास बहुमत साबित करने के लिए जादुई आंकड़ा है और वे गठबंधन सरकार बनाएंगे। शहबाज शरीफ सदन के भावी नेता होंगे, जबकि आसिफ अली जरदारी राष्ट्रपति होंगे। जरदारी यह पद पीपीपी सरकार के दौरान पहले भी संभाल चुके हैं। गठबंधन सरकार की घोषणा के बाद बुधवार सुबह में शेयर बाजार में 1,000 से ज्यादा अंकों की बढ़ोतरी हुई। विश्लेषकों ने इस बढ़त का श्रेय सरकार गठन पर आम सहमति को दिया। नई गठबंधन सरकार का नाम पीडीएम-2.0 रखा गया है। यह वही पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट सरकार है, जिसने अविश्वास प्रस्ताव से इमरान के हटने के बाद करीब एक साल तक शासन किया और जिसे आम नागरिकों के लिए सबसे खराब सरकार के रूप में याद किया जाता है।

नवाज शरीफ के लिए परेशानी की बात यह है कि पीपीपी ने केंद्रीय मंत्रिमंडल का हिस्सा बनने से इन्कार कर दिया है, पर पंजाब में राज्यपाल एवं मंत्री पद की मांग की है। पीपीपी का कहना है कि वह सदन के नेता के रूप में शहबाज शरीफ के लिए वोट करेगी और नेशनल असेंबली में मुद्दे के आधार पर समर्थन भी करेगी, लेकिन संघीय सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं लेगी। पंजाब में पीएमएल-एन ने निर्दलीय और पीपीपी की मदद से बहुमत जुटा लिया है और नवाज शरीफ ने घोषणा की है कि उनकी बेटी और राजनीतिक उत्तराधिकारी पंजाब की मुख्यमंत्री होंगी। इस तरह पंजाब के इतिहास में पहली बार कोई महिला मुख्यमंत्री होंगी।

इस बीच पीटीआई ने उदारवादी इस्लामी पार्टी पाकिस्तान सुन्नी तहरीक के साथ गठबंधन करने का फैसला किया है, क्योंकि सुरक्षा प्रतिष्ठान ने पीटीआई को अपने चुनाव चिह्न 'बल्ले' का उपयोग करने से वंचित कर दिया था, इसलिए उसके उम्मीदवारों को निर्दलीय चुनाव लड़ना पड़ा। वे निचले सदन में पीपीपी के साथ विपक्ष की सीट पर बैठेंगे, जिससे यह संसदीय इतिहास में सबसे मजबूत विपक्ष बन जाएगा, जो सरकार के हर कदम को रोकने की ताकत भी रखेगा।

राजनीति संभावनाओं की कला है और कौन जानता है कि सुरक्षा प्रतिष्ठान के एक इशारे पर कल क्या होगा, क्योंकि संयुक्त विपक्ष के पास कमजोर शहबाज सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए पर्याप्त संख्या है। ब्रिटिश इंडिया से आजाद होने के बाद 1970 में पहली बार पाकिस्तान में प्रत्यक्ष आम चुनाव हुए थे। लेकिन 2024 के आम चुनाव ने दिखा दिया कि इसका सबसे बड़ा शिकार जम्हूरियत है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

गंगाप्रसाद उपाध्याय

जब आप कहते हैं कि 'मैं आया' तो क्या आप बता सकते हैं कि यह 'मैं' क्या कोई वस्तु है? आप कहेंगे कि यह कौन-सी कठिन बात है। जरा सोचिए कि जिसको आप 'अपना' कहते हैं, वह क्या चीज है?

शरीर से इतर भी आपका अस्तित्व है

'मैं' एक विश्वव्यापी शब्द है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक और मूर्ख से लेकर बुद्धिमान तक सभी इसका प्रयोग करते हैं। 'मैं खाता हूं,' 'मैं सोता हूं,' 'मैं दुखी हूं,' 'मैं जीवित हूं।' यह शब्द इतनी अधिकता से प्रयुक्त होता है कि साधारण पुरुषों को तो यह भी विचार नहीं होता कि इसमें किसी प्रकार की विशेषता है। परंतु सृष्टि की आदि से लेकर आज तक किसी देश और जाति के दार्शनिक इस उलझन को नहीं सुलझा सके कि 'मैं' है क्या वस्तु? इस 'मैं' शब्द का वाच्य कौन पदार्थ है? हम किसको 'मैं' कहते हैं? 'मैं' किसका नाम है? आप 'मैं' का प्रयोग तो एक दिन में शायद सैकड़ों बार करते हैं। जब आप कहते हैं कि 'मैं आया' तो क्या आप बता सकते हैं कि यह 'मैं' क्या कोई वस्तु है? आप कहेंगे कि यह कौन-सी कठिन बात है। हम अपने आप के लिए 'मैं' का प्रयोग करते हैं। परंतु इतने मात्र से पीछा नहीं छूटेगा। जरा सोचिए कि जिसको आप 'अपना' कहते हैं, वह क्या चीज है?

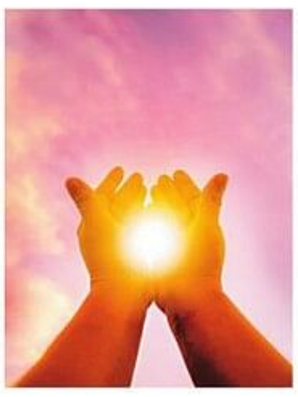

छांदोग्य उपनिषद में एक कथा आती है। कहते हैं कि प्राचीन काल में दो पुरुष थे, एक का नाम था विरोचन और दूसरे का इंद्र। इन दोनों के हृदय में यही प्रश्न उठा और वे आचार्य प्रजापति के पास पहुंचे और प्रश्न किया कि मैं क्या हूं? प्रजापति उत्तर देने से पहले उनकी योग्यता की परीक्षा लेना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कहा, 'थाली में पानी भर लो और अपना मुख उसमें देखो। अपने आप को देख सकोगे। उसमें तुम्हारे मुख तथा अन्यान्य अंगों की प्रतिच्छाया दिखाई पड़ेगी। यही तुम हो।'

यदि किसी बच्चे से यह प्रश्न किया जाए कि तुम कौन हो, तो वह अपने शरीर पर हाथ रखकर कह देगा कि मैं यह हूं। यदि उससे पूछा जाए कि क्या तुम अपने को देखते हो, तो वह झट दर्पण लाकर अपने को देखने लगेगा और कहेगा कि मैं ऐसा हूं। यही हाल विरोचन और इंद्र का हुआ। उन्होंने अपने-अपने चित्र को जल में देखा और समझा कि जो कुछ रूप हमको जल में दिखाई दे रहा है, वही हम हैं। उन्होंने उत्तम वस्त्र धारण करके अपनी आकृति को जल में देखा और कहने लगे, 'ओ हो! हम कितने सुंदर हैं।' जब प्रजापति ने इनकी प्रसन्नता देखी, तो सोचते होंगे कि ये दोनों कैसे मूर्ख हैं, जो वस्त्र और आभूषणों की प्रतिच्छाया को ही अपना स्वरूप समझे बैठे हैं। मान लीजिए कि मेरे हाथ की उंगली कट गई। मैं समझूंगा कि मेरे शरीर में कुछ क्षति हो गई। परंतु क्या मेरा यह भाव भी होगा कि मैं कट गया? कल्पना कीजिए कि उंगली के कटने पर चिकित्सक ने उपचार करके मेरे घाव को चंगा कर दिया। अब कुछ पीड़ा नहीं है। न मैं कोई ऐसा कार्य कर रहा हूं, जिसमें उस उंगली की आवश्यकता पड़े। तो क्या मैं यह समझूंगा कि अब अधूरा हो गया, पहले संपूर्ण था? नहीं। वस्तुतः यदि मैं अपनी आंखें बंद कर लूं और शरीर का कुछ भी ध्यान न रहे, तो मुझे यह भी स्मरण नहीं रहेगा कि मेरे हाथ में चार उंगलियां हैं या पांच। इन बातों से स्पष्ट है कि मैं शरीर नहीं हूं, किंतु शरीर से इतर कोई वस्तु हूं।

ब्रह्म की प्राप्ति...

सूत्र

ब्रह्म जीव पर दया करता है और जीव बिना ब्रह्म के आनंदित नहीं हो सकता। इसीलिए जीव में एक आंतरिक प्रवृत्ति होती है कि वह ब्रह्म की प्राप्ति के लिए उत्सुक हो। यह प्रवृत्ति उसकी आंतरिक प्रवृत्ति है। इसकी प्रेरणा से शांत जीव अनंत ब्रह्म की ओर दौड़ता है और इसी दौड़ में उसे आनंद मिलता है।

दूसरा पहलू

आगरा किले में रखे दरवाजों को सोमनाथ का बताकर 1842 में अंग्रेज ले आए थे, फिर ये यहीं क्यों रह गए?

ऐतिहासिक झूठ के साक्षी हैं गजनी से लाए गए दरवाजे

सच से खिलवाड़ करने वालों के साथ इतिहास अक्सर निर्ममता से पेश आता है। वर्ष 1842 में अफगानिस्तान के दुष्कर सैन्य अभियान के बीच बेहद मुश्किल हालात में जनरल नाट ने गजनी में महमूद गजनवी के मकबरे से दरवाजों को यह मानकर हासिल किया था कि ये गुजरात के सोमनाथ मंदिर में हुई लूट के बाद ले जाए गए थे। इस अभियान में बड़ी संख्या में सैनिक हताहत हुए थे, पर काफी मशक्कत के बाद फौजी दस्ता इन दरवाजों को लेकर भारत आ गया। तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड एनलबरो के लिए यह बड़ी सफलता थी। उन्हें लगता था कि भारत के लूटे गए गौरव को वापस लाकर उन्होंने इतिहास और भारतीयों के मन में खास जगह बना ली है।

भूपेंद्र कुमार

महमूद गजनवी के मकबरे से दरवाजों को यह मानकर भारत लाना कि इन्हें गुजरात के सोमनाथ मंदिर से लूटा गया था, तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड एनलबरो के लिए बड़ी सफलता थी।

पर दरवाजे कहीं से भी भारतीय नहीं लग रहे थे। इन पर ईरानी शैली के सितारेनुमा डिजाइन बने थे और दरवाजे चंदन के नहीं, बल्कि देवदार की लकड़ी के थे।

तभी एलनबरो ने सभी भारतीय राजाओं, नवाबों और जनता के नाम पत्र लिखा, 'मेरे भाई-बहनो और दोस्तो, हमारी सेना ने गजनवी के मकबरे से वे दरवाजे हासिल कर लिए हैं, जिन्हें सोमनाथ से लूटा गया था। आखिर हमने 800 साल पहले हुए अपमान का बदला ले लिया। अब हम गर्व से कह सकते हैं सिंधु नदी के पार भी हमारी हुकूमत है। मेरा सरहिंद, राजवाड़ा, मालवा और गुजरात के राजाओं से निवेदन है कि चंदन से बने इन दरवाजों को पूरी शानो-शौकत से सोमनाथ में स्थापित कराएं। ब्रिटिश हुकूमत ने आपको बड़े अपमान से निजात दिलाई है।'

एलनबरो ने इन दरवाजों को गुजरात ले जाने की तैयारी भी कर ली, और लाहौर से इन्हें आगरा रवाना किया गया, जहां से इन्हें गुजरात भेजा जाना था। लेकिन एलनबरो के इस पत्र पर बवाल हो गया। दरवाजे कहीं से भी भारतीय नहीं लग रहे थे। इन पर ईरानी शैली के सितारेनुमा डिजाइन बने थे। विशेषज्ञों ने इसे सारसेनिक (अरब) शैली का करार दिया, जो मंदिर की अलंकृत शैली से अलग है। एलनबरो की चंदन वाली बात भी झूठ निकली, दरवाजे देवदार की लकड़ी के थे। नतीजतन देश भर में एलनबरो के खिलाफ माहौल बनने लगा। यह देखकर राजे-रजवाड़े भी पीछे हट गए। ब्रिटिश अखबारों ने एलनबरो को झूठा करार दिया। वर्ष 1843 में ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स में इस मसले पर सरकार की खूब फजीहत हुई। तब तक दरवाजे आगरा पहुंच चुके थे। आखिरकार अंग्रेजों को अपनी इज्जत बचाने के लिए दरवाजों को आगरा किले में ही रखवाना पड़ा। धीरे-धीरे लोग इस घटना और उस बड़बोले अंग्रेज एलनबरो को भी भूल गए। आखिर इतिहास की अपनी रवायतें जो हैं।

आंकड़े

हमारे प्रमुख निर्यात

पिछले वर्ष के दौरान हमारे देश से सबसे ज्यादा इंजीनियरिंग सामान का निर्यात किया गया और उसके बाद पेट्रोलियम उत्पादों का।

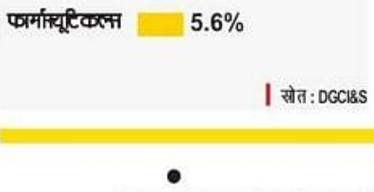

स्रोत : DGCI&S

धर्म का सार सेवा, परोपकार, न्याय और करुणा जैसे सद्गुणों में समाहित है। ये सद्गुण ही मानव को अमर बनाते हैं, उसे शांति प्रदान करते हैं।

संत का उपदेश

अंतर्यात्रा
शिवकुमार गोयल

संत मेहजी के प्रकांड पांडित्य तथा विरक्त स्वभाव की ख्याति पूरे जापान में फैली हुई थी। प्रायः जिज्ञासु उनके पास आते तथा अपनी शंकाओं का समाधान कर संतुष्ट होकर लौटते थे।

एक दिन जापान के राज्यपाल कियाजारी उनके दर्शन के लिए पहुंचे। उन्होंने अपने निजी सचिव को अपना परिचय-पत्र देकर संत जी के कमरे में भेजा। संत जी ने परिचय-पत्र पढ़ा, उसमें उनके राज्यपाल होने की चर्चा थी।

संत जी सचिव से बोले, 'उनसे कहना, मैं राज-काज की बात करने वाले किसी व्यक्ति से नहीं मिलता, क्योंकि मैं राजनीति की बातों से सर्वथा अनभिज्ञ हूं। मैं केवल धर्म तथा साहित्य-संस्कृति की चर्चा करता हूं।'

निजी सचिव ने बाहर लौटकर राज्यपाल को संत जी के उद्गारों से अवगत कराया। राज्यपाल को अपनी गलती की अनुभूति हुई। उन्होंने कागज पर केवल अपना नाम लिखकर भेजा, तो संत जी ने उन्हें अपने पास बुला लिया। वह घंटों तक उनसे धर्म तथा ईश्वर संबंधी चर्चा करते रहे।

जब राज्यपाल लौटने लगे, तो संत मेहजी ने कहा, 'धर्म का सार सेवा, परोपकार, न्याय और करुणा जैसे सद्गुणों में समाहित है। ये सद्गुण ही मानव को अमर बनाते हैं, उसे शांति प्रदान करते हैं।'

(अमर उजाला आर्काइव से)

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 7 जनवरी, 1955

यूगोस्लाविया के मार्शल टीटो पहुंचे रंगून

मार्शल टीटो रंगून में

भव्य स्वागत

रंगून, 6 जनवरी। यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो आज प्रातः यहां पर आ गये। रंगून के बंदरगाह पर बर्मी सरकार की ओर से आपका भव्य स्वागत किया गया। आप बर्मी राष्ट्रपति डाक्टर व प्रधान-

यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो आज प्रातः रंगून पहुंचे। म्यांमार सरकार की ओर से रंगून के बंदरगाह पर उनका भव्य स्वागत किया गया, फिर उन्हें खुली कार में टाउन हॉल ले जाया गया।

संकटग्रस्त दुनिया को नई चेतावनी

सबसे जरूरी है कि धरती के जीवन पर मंडरा रहे अभूतपूर्व संकट की समझ अधिक लोगों तक पहुंचे, तभी लोग समाधान के लिए आगे आएंगे।

भारत डोगरा

पर्यावरण

धरती की जीवनदायिनी क्षमताओं के अधिक संकटग्रस्त होने के बीच हाल ही में वैज्ञानिकों ने नई चेतावनी जारी की है। इसे डूमस्डे क्लाक चेतावनी कहा जा रहा है। विश्व में 'डूमस्डे क्लॉक' अपनी तरह की एक प्रतीकात्मक घड़ी है, जिसकी सुइयों की स्थिति के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया जाता है कि विश्व किसी बहुत बड़े संकट की आशंका के कितने नजदीक है। इस घड़ी का संचालन 'बुलेटिन ऑफ एटॉमिक साइंटिस्ट्स' नामक वैज्ञानिक संस्थान द्वारा किया जाता है। इसके परामर्शदाताओं में 15 नोबेल पुरस्कार विजेता भी हैं। ये सभी मिलकर प्रति वर्ष तय करते हैं कि इस वर्ष घड़ी की सुइयों को कहां रखा जाए।

इस घड़ी में रात के 12 बजे को धरती पर बहुत बड़े संकट का पर्याय माना गया है। घड़ी की सुइयां रात के 12 बजे के जितने नजदीक रखी जाएंगी, उतने ही बड़े संकट से धरती (व उसके लोगों व जीवों) के संकट की स्थिति मानी जाएगी। 2024 में इन सुइयों को (रात के) 12 बजने में 90 सेकंड पर रखा गया है। संकट के प्रतीक 12 बजे के समय से इन सुइयों की इतनी नजदीकी 2023-24 के अतिरिक्त कभी नहीं रही। दूसरे शब्दों में, यह घड़ी दर्शा रही है कि इस समय धरती किसी बहुत बड़े संकट के सबसे करीब है।

'डूमस्डे घड़ी' के वार्षिक प्रतिवेदन में इस स्थिति के तीन कारण बताए गए हैं। पहली वजह यह है कि जलवायु बदलाव का संकट बढ़ रहा है। जलवायु बदलाव नियंत्रित करने की संभावनाएं समग्र रूप से धूमिल हुई हैं। दूसरी वजह यह है कि परमाणु हथियार नियंत्रित करने के समझौते कमजोर हुए हैं, जिससे परमाणु युद्ध का खतरा बढ़ा है। तीसरी वजह यह है कि ए.आई. (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) व जेनेटिक इंजीनियरिंग का बहुत दुरुपयोग हो रहा है, जिसका सुरक्षा पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इन तीन कारणों के मिले-जुले असर से आज विश्व बहुत बड़े संकट की आशंका की दहलीज पर पहुंच चुका है। और इस संकट को कम करने के लिए तुरंत कदम उठाना जरूरी है। सवाल यह है कि क्या 'डूमस्डे घड़ी' के इस अति महत्वपूर्ण संदेश को विश्व नेतृत्व समय रहते समझेगा? हाल के वर्षों में यह निरंतर स्पष्ट होता रहा है कि अब तो धरती की जीवनदायिनी क्षमता ही खतरे में है। जिन कारणों से हजारों वर्षों तक धरती पर विविधतापूर्ण जीवन पनप सका, वे आधार ही संकटग्रस्त हो चुके हैं।

इन अति गंभीर समस्याओं के समाधान को सर्वाधिक महत्व पूरे विश्व में मिले, इसे ध्यान में रखते हुए 'धरती रक्षा अभियान' (सेव द अर्थ कैंपेन) आरंभ किया गया है। इस अभियान का व्यापक उद्देश्य धरती की जीवनदायिनी क्षमता की रक्षा करना है। इसके दो विशिष्ट उद्देश्य हैं–पहला, धरती से सभी परमाणु हथियार व महाविनाशक हथियार समाप्त हों व दूसरे, धरती पर तापमान वृद्धि को तय मानक तक सीमित रखने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जाएं। इस अभियान का प्रथम प्रयास यह है कि मौजूदा दशक (2020-30) को वैश्विक स्तर पर 'धरती रक्षा दशक' के रूप में घोषित किया जाए। एक बड़ा सवाल हमारे सामने है कि आखिर इन गंभीर संकटों को समय रहते कैसे कम किया जाए। समय-सीमा का सवाल इस कारण भी बहुत बड़ा है, क्योंकि जलवायु बदलाव के साथ टिपिंग पॉइंट भी जुड़े हैं। एक बार यह सीमा पार हो गई, तो फिर स्थितियां नियंत्रण से बाहर निकल सकती हैं। विश्व के शीर्ष विशेषज्ञ बता रहे हैं कि इस समस्या के समाधान के लिए हमारे पास बस एक दशक बचा है।

एक बड़ी जरूरत इस बात की है कि धरती के जीवन पर मंडरा रहे अभूतपूर्व संकट की समझ अधिक लोगों तक पहुंचे। यह समझ सही परिप्रेक्ष्य में अधिक लोगों तक पहुंचेगी, तभी लोग अधिक संख्या में आगे आएंगे। इस समय इन मुद्दों की गंभीरता की जानकारी रखने वाले लोगों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। इन मुद्दों को न्याय व लोकतंत्र के मुद्दों से जोड़कर व्यापक समझ बनाने वाले लोगों की संख्या तो और भी कम है।

ऐसी समझ बनाकर हमें धरती की रक्षा की वह राह निकालनी है, जो समता व सादगी, न्याय व लोकतंत्र की राह है। इस समय संकट और समाधान की सही समझ को अधिक लोगों तक पहुंचाना और उन्हें समाधान के प्रयासों से जोड़ना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

रटें नहीं, कॉन्सेप्ट को समझें

सिर्फ तथ्यों को दोहराने से सिलेबस कवर नहीं होता, इसके लिए विषयवार रणनीति बनानी पड़ती है

डेनियल टी विलिंगम
न्यूयॉर्क टाइम्स

The New York Times

परीक्षाओं के दौरान पढ़ा हुआ हमेशा याद रहे, इसके लिए छात्र भिन्न-भिन्न तरकीब आजमाते हैं, ताकि परीक्षा में अच्छे अंक लाए जा सकें। दरअसल, 'पढ़ने का तरीका' एक ऐसा विषय है, जिस पर अमूमन छात्र ध्यान नहीं देते। पढ़ने के तरीके का अपना विज्ञान होता है। अगर एक औसत विद्यार्थी भी कुछ छोटे-छोटे नियमों का पालन करते हुए पढ़ाई करता है, तो वह परीक्षा में अच्छे अंक ला सकता है। इसलिए अगर आप भी अपनी परीक्षा की तैयारी को बेहतर बनाना चाहते हैं, तो कुछ बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

■ विषय के अर्थ को समझें

छात्र परीक्षा के दौरान अपने पाठ्यक्रम को कवर करने के लिए नोट्स एवं किताबों को बार-बार पढ़ते हैं, जोकि परीक्षा की तैयारी करने का सबसे आम तरीका है। छात्रों के लिए दोबारा पढ़ना आसान होता है, क्योंकि दोबारा पढ़ने से नोट्स और विषय परिचित लगने लगते हैं। अक्सर छात्र परीक्षा के दौरान विषय को बार-बार दोहराते रहते हैं, जिससे उन्हें लगता है कि उक्त विषय याद हो रहा है। जबकि सच यह है कि इस तरह की पढ़ाई से छात्र कुछ चीजों को रट तो सकते हैं, लेकिन उनका गहराई से अर्थ नहीं समझ पाते। जबकि पढ़े हुए को समझना बहुत जरूरी होता है।

■ कॉन्सेप्ट को हाईलाइट करें

जब भी छात्र किसी विषय को पढ़ते हैं, तो वह इस प्रक्रिया के दौरान सबसे आसान तकनीक की खोज करते हैं, जो असल रूप में उन्हें प्रभावी लगती है। छात्र लंबे समय तक विषय को याद रखने के लिए परिभाषा को हाईलाइट करना पसंद करते हैं, ताकि भविष्य में उसे आसानी से दोहराया जा सके, लेकिन यह अध्ययन करने का सही तरीका नहीं। अगर आप किसी विषय को लंबे समय तक याद रखना चाहते हैं, तो परिभाषा नहीं, कॉन्सेप्ट को हाईलाइट करें, जिससे आपका ध्यान बार-बार सही पंक्तियों पर जाए और बुनियादी अवधारणाएं बगैर रटे दिमाग में सहेजी जा सकें।

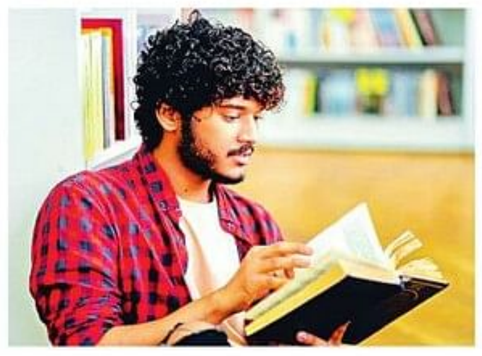

■ सही रणनीति बनाएं

अध्ययन के तरीके में सुधार करने के लिए एक चुनौती यह भी है कि छात्र सोचते हैं कि कुछ कार्य इतने सरल होते हैं, जिनके लिए रणनीति की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन ऐसा नहीं है। किसी भी परीक्षा की तैयारी के लिए विषयवार योजना बनाना बेहद जरूरी है, जिसके लिए विषय को उप-खंडों में बांटकर उनकी तैयारी की रणनीति बनाई जा सकती है। छात्रों को केवल तथ्यों को रटना नहीं, बल्कि उन्हें विषय के मूल कॉन्सेप्ट के साथ मिलाकर पढ़ने की योजना बनानी चाहिए।

रिसर्च से जुड़े छात्रों के लिए फेलोशिप प्रोग्राम

हन्ना एच ग्रे फेलोशिप प्रोग्राम 2024-25 के लिए दुनिया भर के उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस फेलोशिप प्रोग्राम का उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमि के होनहार वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित व सहायता प्रदान करना है। फेलोशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए उम्मीदवार बेसिक साइंस के क्षेत्र में एक रिसर्चर होना चाहिए।

फेलोशिप प्रोग्राम में वे छात्र आवेदन के पात्र हैं, जिनके पास 28 फरवरी, 2024 तक पोस्ट-डॉक्टरल अनुसंधान के क्षेत्र में एक साल से अधिक का अनुभव है। इसके अतिरिक्त छात्रों को अपने शैक्षिक और अनुसंधान प्रशिक्षण कार्य का विवरण व अधिकतम तीन चयनित शोध लेख जमा करने होंगे। फेलोशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्रों को फेलोशिप की अवधि शुरू होने की तिथि से न्यूनतम पांच वर्ष तक पोस्ट-डॉक्टरल प्रशिक्षण करने के लिए प्रतिबद्ध रहना होगा। इच्छुक आवेदक आधिकारिक लिंक http://tinyurl.com/565tmh9a पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 2024 निर्धारित की गई है।

भारत टेक्स इको स्टाइल सेल्फी प्रतियोगिता

कपड़ा मंत्रालय द्वारा भारत टेक्स इको स्टाइल सेल्फी प्रतियोगिता 2024-25 के लिए दुनिया भर के युवाओं को प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में उम्मीदवार को पर्यावरण-अनुकूल वस्त्रों के निर्माण व डिजाइन पर आधारित सेल्फी जमा करनी होगी। इसके अतिरिक्त भारत टेक्स इको स्टाइल सेल्फी प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागी केवल एक ही सेल्फी जमा कर सकते हैं। उम्मीदवारों द्वारा भेजी गई फोटो केवल जेपीईजी फॉर्मेट में स्वीकार की जाएगी। प्रतियोगिता के तहत प्रत्येक विजेता को 5000 रुपये पुरस्कार राशि दी जाएगी। इच्छुक एवं योग्य आवेदक आधिकारिक लिंक www.mygov.in पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि 29 फरवरी, 2024 निर्धारित की गई है।

भारत सरकार की पहल

कंप्यूटर ऑपरेटर कम डाटा एंट्री इंटर्नशिप

नगर पंचायत किठौर, उत्तर प्रदेश में कंप्यूटर ऑपरेटर कम डाटा एंट्री इंटर्नशिप के लिए उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। यह एक पूर्णकालिक इंटर्नशिप प्रोग्राम है, जिसकी अवधि एक माह निर्धारित की गई है। इस इंटर्नशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों के पास बीकॉम, बीए, बीएससी, एमए, एमएससी की डिग्री एवं संबंधित क्षेत्र में कौशल एवं रुचि होनी चाहिए। कंप्यूटर ऑपरेटर कम डाटा एंट्री इंटर्नशिप प्रोग्राम के तहत चयनित उम्मीदवारों को प्रति माह 10,000 रुपये का स्टाइपेंड प्रदान किया जाएगा। इच्छुक एवं योग्य आवेदक अपनी अर्हता की जांच करते हुए आधिकारिक लिंक http://tinyurl.com/2yatpkzh पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। पूर्णकालिक कंप्यूटर ऑपरेटर कम डाटा एंट्री इंटर्नशिप प्रोग्राम में आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 मार्च, 2024 निर्धारित की गई है।

इंटर्नशिप अलर्ट

खुद को परखें

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सामान्य ज्ञान के प्रश्न जरूर पूछे जाते हैं। यहां कुछ ऐसे ही प्रश्नों का संकलन दिया गया है, जिनके अभ्यास से आप परीक्षा में अच्छे अंक स्कोर कर सकते हैं :

1. भारत में रेलवे का आरंभ कब हुआ?
   a. 1953 b. 1853
   c. 1895 d. 1858

2. भारत का पहला एप्पल स्टोर कहां पर खुला?
   a. मुंबई में
   b. दिल्ली में
   c. बंगलूरू में
   d. अहमदाबाद में

3. 'फाल्कन 9 रॉकेट' किसके द्वारा निर्मित किया गया है?
   a. स्पेस एक्स
   b. नासा
   c. यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी
   d. इसरो

4. 'शंख लिपि' किस स्थल से संबंधित है?
   a. विराटनगर b. कालीबंगा
   c. आभानेरी d. जयपुर

5. भारत के पहले लोकसभा अध्यक्ष थे-
   a. जीवी मावलंकर
   b. जवाहरलाल नेहरू
   c. डॉ. राजेंद्र प्रसाद
   d. मौलाना अबुल कलाम आजाद

6. 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया' का मुख्यालय स्थित है?
   a. कोलकाता
   b. मुंबई
   c. मंगलौर
   d. हैदराबाद

7. बैंक के बैड एडवांस को कहते हैं?
   a. ओवरड्रॉन खाता
   b. अनर्जक आस्ति
   c. बैंक डेट
   d. बुकलेट

उत्तर : 1.b, 2.a, 3.a, 4.a, 5.a, 6.a, 7.a

Job Alert

अमर उजाला

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

जूनियर एनालिस्ट के पद खाली

417 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 15 मई, 2024
पात्रताएं : पोस्ट-ग्रेजुएशन डिग्री एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : https://upsssc.gov.in

AIASL में कई पदों पर निकली भर्ती ■ 55 पद

जूनियर ऑफिसर, इयूटी ऑफिसर व अन्य पद खाली
वॉक-इन-इंटरव्यू की तिथि 26/27/28/29 फरवरी, 2024
पात्रताएं
ग्रेजुएशन डिग्री व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
http://aiasl.in

PFC, लिमिटेड में संभावनाएं ■ 27 पद

कोऑर्डिनेटर के विभिन्न पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि 07 मार्च, 2024
पात्रताएं
बीई/बीटेक डिग्री एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://pfcindia.com

रक्षा मंत्रालय में रोजगार के मौके ■ 260 पद

नाविक के विभिन्न पदों पर आवेदन आमंत्रित
आवेदन की अंतिम तिथि : 27 फरवरी, 2024
पात्रताएं : 12वीं एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : https://joinindiancoastguard.cdac.in

INCOIS में अभ्यर्थी करें आवेदन ■ 39 पद

प्रोजेक्ट साइंटिस्ट एवं कसल्टेंट के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि 01 मार्च, 2024
पात्रताएं
ग्रेजुएशन/पोस्ट-ग्रेजुएशन/पीएचडी आदि निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
www.incois.gov.in

IIIT, पुणे में नौकरी के अवसर ■ 15 पद

असिस्टेंट रजिस्ट्रार, जूनियर टेक्नीशियन आदि पद रिक्त
आवेदन की अंतिम तिथि 18 मार्च, 2024
पात्रताएं
आईटीआई/ग्रेजुएशन डिग्री/डिप्लोमा व अन्य पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://iiitp.ac.in

यहां भी रोजगार के अवसर ...

- **बुनकर सेवा केंद्र (भारत सरकार) :** आशुलिपिक ग्रेड-1 के पद पर करें आवेदन।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 09 मार्च, 2024 तक आवेदन करें ■ https://handlooms.nic.in
- **न्यायालयिक विज्ञान सेवा निदेशालय :** उप-निदेशक के पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 09 मार्च, 2024 तक आवेदन करें ■ www.dfs.nic.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

कच्ची धूप

Fun & Learn

जड़ हवा में और पेड़ हरा है!

बच्चो, क्या तुमने कभी हवा में लटके पेड़ के बारे में सुना है। अमेरिका में 'ट्री ऑफ लाइफ' नाम का पेड़ अपने अद्भुत नजारे की वजह से चर्चा का विषय बना हुआ है। तुम भी जानो, पूरी कहानी।

एक पेड़ की मजबूती उसकी जड़ में होती है, जो जमीन के नीचे मिट्टी में फैली होती है। लेकिन क्या तुमने ऐसा पेड़ देखा है, जिसकी जड़ें हवा में लटक रही हैं, मगर वह फिर भी हरा-भरा है। प्रकृति का यह अद्भुत नजारा वाशिंगटन शहर के ओलंपिक नेशनल पार्क में दिखेगा, जहां स्थित है 'ट्री ऑफ लाइफ'। चूंकि इस चमत्कारिक पेड़ का कोई विशिष्ट नाम नहीं है, इसलिए इसे 'द ट्री ऑफ लाइफ', 'द रनवे ट्री' और 'कलालोच ट्री' भी कहा जाता है। यह पेड़ सीताका स्प्रूस प्रजाति का है, इसका नाम अलास्का में स्थित सीताका समुदाय से लिया गया है।

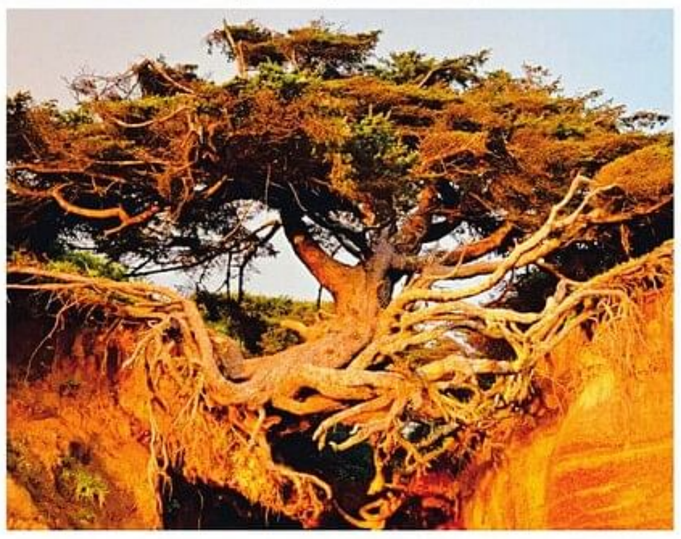

यह पेड़ अपनी विशाल ऊंचाई और चौड़े तने के लिए जाना जाता है। ये दो विशेषताएं हैं, जो इस पेड़ के रहस्य में अहम योगदान देती हैं। कलालोच पेड़ हवा में लटका हुआ है। जैसा कि तस्वीर में देखा जा सकता है, यह विशाल पेड़ मोटी जड़ों को लपेटकर अपने अलग होते तटीय क्षेत्र से चिपका हुआ है। इस पेड़ की खूबसूरती को देखने के लिए हर साल बड़ी संख्या में सैलानी यहां आते रहते हैं। उन्हें उम्मीद होती है कि यह उनकी यात्राओं के बीच के समय में गिर गया होगा, लेकिन हर साल, सबको आश्चर्यचकित करते हुए यह पेड़ अपनी पुरानी स्थिति में ही रहता है। हालांकि बीच में गिरावट और शिथिलता पर ध्यान देना कठिन है, जाहिर तौर पर यह तने के भारी वजन का परिणाम है। पेड़ की जालीदार जड़ों के नीचे 'ट्री रूट केव' है। अंदर, जल की धारा गुफा जैसी संरचना में गिरती है और समुद्र में मिल जाती है। यह वह धारा है, जो हर साल जड़ों के नीचे की मिट्टी को बहा ले जाती है। कई लोग सवाल करते हैं कि हवा में लटकने के बाद भी पेड़ कैसे बढ़ता रहता है और इसकी पत्तियां हरी कैसे रहती हैं?

पर्यावरणविदों के अनुसार, वास्तव में कोई नहीं जानता कि यह कैसे संभव हो रहा है, इसलिए लोग इस पेड़ को 'ट्री ऑफ लाइफ' कहते हैं। इस पेड़ तक आसानी से पहुंचा जा सकता है, इसके लिए केवल न्यूनतम चढ़ाई की आवश्यकता होती है। पेड़ को देखने आने वाले पर्यटकों के लिए नेशनल पार्क में ही कलालोच लॉज स्थित है। इसके अद्भुत दृश्य की सराहना करने के लिए इसे कुछ सौ फीट पीछे से देखना सबसे अच्छा है। नीचे से पेड़ की जड़ को करीब से देखना भी एक अलग अनुभव है, लेकिन न पेड़ पर चढ़ो, न खींचो और न ही उसे परेशान करो। प्रकृति की इस संरचना का सिर्फ आनंद लो।

किड्स क्राफ्ट — हैंडप्रिंट बटरफ्लाई

हैंडप्रिंट बटरफ्लाई बनाने के लिए तुम्हें चाहिए - कलर शीट्स, स्केच पेन, वॉटर कलर्स, कॉटन, कैंची और गोंद।

- सबसे पहले किसी भी शीट को हथेली के आकार (दो) में काटो।
- अब गोंद से दोनों को आपस में जोड़ दो।
- कॉटन पर किसी रंग का वॉटर कलर कर दो।
- गोंद से उसे जोड़ पर चिपका दो।
- स्केच पेन से हथेली पर कोई भी डिजाइन बना सकते हो।
- तुम्हारी हैंडप्रिंट बटरफ्लाई बनकर तैयार है।

किड्स कॉर्नर

- कविता : निरंकार देव सेवक
- चित्र : शोभा घारे
- साभार : इकतारा

मुर्गी माँ

मुर्गी माँ घर से निकली बच्चे बोले चें चें चें
बस्ता ले बाज़ार चली अम्मा हम भी साथ चलें

यह कहानी तुमने लिखी

छोटी गिलहरी

हमारे गांव की बैठक में पिलखन का पेड़ा था। उस पर बहुत सारे पक्षी और गिलहरियां रहती थीं। एक शाम मैं अपने परिवार के सदस्यों के साथ पेड़ के नीचे बैठा था। अचानक गिलहरी के दो छोटे बच्चे खेलते-खेलते नीचे उतर आए थे। एक बच्चा वहां सूखी पत्तियों पर गिरा, वह तुरंत उठकर पेड़ पर चढ़ गया। दूसरा, पक्के फर्श पर गिरा था, चोट लगने के कारण वह चल नहीं पा रहा था। मैंने उसके पास जाकर देखा, तो उसके मुंह से खून निकल रहा था। मैंने उसे उठाया और घर ले आया। मैंने पापा की मदद से उस बच्चे को हल्दी का दूध पिलाया। एक गत्ते के डब्बे में कपड़ा बिछाकर रातभर अपने पास रखा। सुबह होते ही वह आवाज करने लगा और डिब्बे से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। पापा ने कहा कि अब उसे पेड़ के पास ही छोड़ आओ। मैं उसे बैठक में ले आया और पेड़ के पास छोड़ दिया। वह अब भी आवाज निकाल रहा था। उसकी आवाज सुनकर थोड़ी देर बाद एक गिलहरी आई। शायद वो उसकी मां थी। गिलहरी उस बच्चे को सहारा देकर अपने साथ पेड़ पर ले गई। इस तरह वह बच्चा ठीक होकर अपने परिवार के पास चला गया। पापा ने कहा, हमें सिर्फ इंसानों की नहीं, बल्कि सभी जीव की सहायता करनी चाहिए।

– सारांश त्यागी, मेरठ

नोट : बच्चो, अगर लिखी है आपने खुद कोई कहानी या कविता तो हमें भेजें। साथ में अपना पूरा पता, स्कूल का नाम और कक्षा भी लिखें। अपनी तस्वीर भी भेजें। पसंद आने पर हम उसे प्रकाशित करेंगे। मेल करें : Kidz@del.amarujala.com

रोचक तथ्य

क्या तुमने कभी सैन पेड्रो जेल के बारे में सुना है। बोलीविया की यह जेल अपने आप में अनोखी है। दुनिया की अन्य जेलों के विपरीत यहां कैदियों के पास जेल के अंदर ही नौकरियां एवं तमाम सुविधाएं हैं। वे जेल के अंदर घर खरीद सकते हैं, किराए पर कमरा ले सकते हैं या अपने परिवारों के साथ रह भी सकते हैं। इस जेल को कैदी ही चलाते हैं, यहां कोई गार्ड नहीं होता है। जेल में औसतन 3,000 कैदी हैं। सैन पेड्रो में कैदियों की एक परिषद है, जो नियम बनाती है और सजा तय करती है। सैन पेड्रो जेल में बंद कैदियों के परिवार जेल के अंदर ही रहना पसंद करते हैं, क्योंकि यहां इसे अफवाह माना जाता है कि परिवार बाहर की तुलना में जेल के अंदर अधिक सुरक्षित हैं।

23 फरवरी, 1947

आज का दिन

अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) का संचालन शुरू हुआ था। आज के समय में आईएसओ साइकिल के टायर से लेकर डेट फॉर्मेट तक हर चीज के लिए मानक जारी करता है।

ISO

- 1941 : ग्लेन टी. सीबोर्ग और उनकी टीम ने रासायनिक रूप से प्लूटोनियम की पहचान की थी।
- 1954 : पोलियो के खिलाफ पहला सामूहिक टीकाकरण अभियान आयोजित किया गया था।
- 1970 : गुयाना ने खुद को गणराज्य घोषित किया था।
- 2020 : यूरोपीय देश इटली में कोविड-19 का बड़ा प्रकोप हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : माघ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी। **कल :** माघ पूर्णिमा, गुरु रविदास जयंती, वसंत ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले। **राहुकाल :** प्रातः 09.00 से 10.30 तक।

कल का पंचांग

सूर्योदय : 06.55
सूर्यास्त : 18.13
(भारतीय मानक समयानुसार)

विक्रमी संवत 2080, 05 फाल्गुन मास शाके 1945, फाल्गुन मास 12 प्रविष्टे, 13 सायान हिजरी 1445, माघ पूर्णिमा 17.59 तक उपरांत फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा, मघा नक्षत्र 22.20 तक उपरांत पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, अतिगंड योग 13.33 तक उपरांत सुकर्मा योग, बव करण 17.59 तक उपरांत बालव करण, चंद्रमा सिंह राशि में दिन रात।

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। बनते कार्य में अवरोध आएंगे। स्वजनों से निराशा होगी। लाभ कम होगा।

वृष : महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिलेगी। नई योजना में व्यस्त रहेंगे। व्यावसायिक लाभ से मन प्रसन्न रहेगा।

मिथुन : नौकरी में अधिकारी से परेशानी संभव है। धोखा मिल सकता है। व्यावसायिक स्थिति से चिंता होगी।

कर्क : नौकरी में पदोन्नति संभव है। योजना में अनुकूल सफलता मिलेगी। व्यावसायिक लाभ से उत्साह बढ़ेगा।

सिंह : स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। व्यय पर नियंत्रण रखें। ऋणभार बढ़ सकता है। देनदारी की चिंता रहेगी।

कन्या : प्रयासों में सफलता से उत्साह बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में सम्मान बढ़ेगा। व्यवसाय में लाभ के अवसर मिलेंगे।

तुला : सत्ता का सहयोग मिलेगा। नौकरी में अधिकार बढ़ सकता है। व्यावसायिक लाभ से हर्ष होगा।

वृश्चिक : पठन-पाठन में रुचि रहेगी। अटका कार्य बन सकता है। यथेष्ट लाभ होगा। धर्म में आस्था बढ़ेगी।

धनु : आत्मबल बनाए रखें। नौकरी में परेशानी संभव है। अनैतिक कार्य से बचें। जोखिम-जमानत से बचें।

मकर : कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। निजी उद्यम से ही उन्नति होगी। व्यवसाय में उत्तम लाभ हो सकता है।

कुंभ : नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं। कोर्ट-कचहरी में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक लाभ बढ़ सकता है।

मीन : कार्यक्षेत्र में प्रभाव बना रहेगा। सचेत रहें। व्यवसाय में यथेष्ट धन लाभ हो सकता है। संतान पक्ष से चिंतित रहेंगे।

सुडोकू

		6	3		7		4	
			4	5	8			3
			6				1	
	2	8				3		5
	5	3				1	8	
7		9				4	2	
	8				6			
5			7	4	2			
	3		8		5	7		

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

8	9	6	3	1	7	5	4	2
1	7	2	4	5	8	6	9	3
3	4	5	6	2	9	8	1	7
4	2	8	9	6	1	3	7	5
6	5	3	2	7	4	1	8	9
7	1	9	5	8	3	4	2	6
9	8	7	1	3	6	2	5	4
5	6	1	7	4	2	9	3	8
2	3	4	8	9	5	7	6	1

डेली हेल्थ कैप्सूल

डिहाइड्रेशन और शुगर क्रेविंग...

जब शरीर में पानी की कमी होती है, तो मीठी चीजें खाने की इच्छा होती है। इससे बचने के लिए क्या करें?

डिहाइड्रेशन तब होता है, जब शरीर अधिक तरल पदार्थ खो देता है। तरल पदार्थों का अधिक सेवन कर डिहाइड्रेशन और शुगर क्रेविंग को ठीक किया जा सकता है। डिहाइड्रेशन के कारण होने वाली समस्याओं में चीनी खाने की लालसा प्रमुख है। जब कभी

शरीर को पानी की आवश्यकता होती है, तो हमें शुगर क्रेविंग महसूस होती है। भरपेट भोजन के बाद आपको मिठाई खाने की इच्छा हो सकती है। चूंकि पाचन में अधिक ऊर्जा की खपत होती है, इसलिए अधिक चीनी खाने की इच्छा भी हो सकती है। चिंता, तनाव, अवसाद, अकेलापन और बोरियत जैसे नकारात्मक मूड भी चीनी खाने की इच्छा को ट्रिगर कर सकते हैं। शुगर क्रेविंग का कारण केवल डिहाइड्रेशन नहीं है। तनाव भी चीनी खाने की लालसा को बढ़ा देता है। एक अध्ययन में पाया गया है कि तनाव में रहने वाले लोग लगातार कार्ब्स खाने के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। पूरी नींद न लेना या नींद की कमी भी शुगर क्रेविंग को बढ़ाने में सहायक है। सब्जियों और फल में पानी की मात्रा अधिक होती है, इन्हें अपने संतुलित आहर में शामिल कर शुगर क्रेविंग और डिहाइड्रेशन से बचा जा सकता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

जब कभी शरीर को पानी की आवश्यकता होती है, तो शुगर क्रेविंग महसूस होती है। सब्जियों और फल में पानी की मात्रा अधिक होती है, जिन्हें अपने संतुलित आहार में शामिल करने से इस परेशानी को रोका जा सकता है।

-अंशु चौहान, आहार विशेषज्ञ

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464 Join Epaper Group @ ₹30/m WhatsApp To 8969469464

कल्पमेधा

सभी मनुष्य अपनी ही गलतियों की वजह से दुखी होते हैं और वे खुद अपनी गलतियां सुधार कर प्रसन्न हो सकते हैं।

– भगवान महावीर

पहचान और पूर्वाग्रह

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि किसी व्यक्ति को उसके पहनावे के आधार पर ऐसी पहचान से जोड़ कर देखा जाए, जिससे उसका दूर-दूर का भी वास्ता न हो और ऐसा करने से उसके लिए कई तरह के जोखिम पैदा हो जाएं। खबरों के मुताबिक, पश्चिम बंगाल में संदेशखाली मामले को लेकर चल रहे विरोध प्रदर्शन के दौरान भाजपा के एक नेता ने वहां मौजूद एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को सिर्फ इसलिए खालिस्तानी कह दिया कि उसके सिर पर सिख धर्म की पहचान वाली पगड़ी बंधी थी। स्वाभाविक ही भारतीय पुलिस सेवा के उस अधिकारी ने इस पर आपत्ति जाहिर की कि उस पर कोई धार्मिक टिप्पणी कैसे की जा सकती है और उसकी वेशभूषा की वजह से खालिस्तानी की पहचान से कैसे जोड़ा जा सकता है। यह संभव है कि प्रदर्शनकारियों को पुलिस के रवैये या काम करने के तरीके से शिकायत हो, लेकिन इसके खिलाफ लोकतांत्रिक तरीके से विरोध जताने और उचित मंच पर शिकायत दर्ज कराने के बजाय वैसी पहचान को लक्ष्य करके टिप्पणी करना बिल्कुल गलत है, जिसे एक अलगाववादी समूह के तौर पर देखा जाता हो और उसके बारे में लोगों की राय सकारात्मक नहीं हो।

पिछले कुछ समय से किसी को पहनावे के आधार पर नाहक ही चिह्नित करने की धारणा पल-बढ़ रही है। किसान आंदोलन में शामिल पंजाब के लोगों के बारे में भी पूर्वाग्रहों से भरी टिप्पणियां करने की खबरें आई थीं। ऐसे मामले अगर अक्सर सामने आने लगें तो इससे न सिर्फ कुछ खास पहचान वाले आम लोगों के लिए मुश्किल पैदा होगी, बल्कि ऐसे पूर्वाग्रहों के शिकार लोगों के भीतर भी अनेक तरह की कुंठाएं और विकृतियां विकसित होने लगेंगी। अव्वल तो एक खास धार्मिक पहचान से जुड़े पहनावे की वजह से किसी पर इस तरह अंगुली नहीं उठाई जा सकती, जिसका कोई आधार नहीं हो, मगर इसका उस पर कई स्तर पर प्रभाव पड़ता हो! फिर आवेश में आकर किसी को सिर्फ कपड़े के आधार पर किसी संवेदनशील पहचान से जोड़ देने के सामाजिक असर और कानून से जुड़ी प्रक्रिया के नतीजों की कल्पना की जा सकती है! ऐसा किसी के लिए भी नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इसके नतीजे संबंधित व्यक्ति के जीवन पर बहुत गलत असर डाल दे सकते हैं।

सभी धर्म या समुदाय में सकारात्मक कामों को अपना सामान्य जीवन और दायित्व समझने के बरक्स नकारात्मक गतिविधियों में लिप्त कुछ लोग भी होते हैं। अगर किसी समुदाय के चंद लोग प्रतिगामी और गैरकानूनी कामों को अंजाम दे रहे हों, तो उनकी धार्मिक पहचान के अन्य लोगों को उससे जोड़ कर नहीं देखा जा सकता। सिखों के बीच कुछ लोग अगर अलगाववाद में विश्वास रखते होंगे तो उनसे अलग राय रखने, पीड़ित होने और कई स्तर पर उसका सामना करने वाले लोगों में भी बहुत सारे सिख ही हैं। पश्चिम बंगाल में जिस अधिकारी को लक्षित करके टिप्पणी की गई, वह आधिकारिक रूप से देश के कानूनों को लागू करने की ड्यूटी पर तैनात था। अगर वह अपने दायित्वों के निर्वहन में जानबूझ कर कोई कमी करे, तब उचित मंच पर और कानून के दायरे में निर्धारित प्रक्रिया के तहत उसका विरोध किया जा सकता है। मगर हैरानी की बात है कि ऐसी टिप्पणियों की गंभीरता और संवेदनशीलता को समझे बिना कई लोग हल्के तरीके से ऐसा बोल जाते हैं, जिससे किसी के लिए जटिल हालात पैदा हो सकते हैं।

आवाज का सम्मोहन

कई बार कोई शख्स अपने व्यक्तित्व के किसी ऐसे खास पहलू से पहचाना जाने लगता है, जो बहुत सारे लोगों के दिल-दिमाग में ठहर-सा जाता है। अमीन सयानी की आवाज और उसके जरिए किसी कार्यक्रम की प्रस्तुति के अंदाज में वही जादू और सम्मोहन था, जिसकी वजह से आज दुनिया भर में लोग उन्हें जानते और याद करते हैं। अब उनके जाने के बाद लोग उन्हें बस याद कर पाएंगे, मगर उनकी आवाज साथ में आसपास कहीं गूंज रही होगी। दरअसल, उनके व्यक्तित्व को एक पहचान देने में उनकी आवाज के साथ किसी कार्यक्रम को पेश करने का उनका सलीका और अंदाज उन तमाम लोगों के दिल में आज भी बसा होगा, जो उस दौरान रेडियो सीलोन पर 'बिनाका गीत माला' सुनने के लिए अलग से वक्त निकालते थे। उस दौर के लोग याद कर सकते हैं कि कैसे श्रोता रेडियो सीलोन का सिग्नल लगाने के लिए आसपास जगह बदलते थे, उसकी 'लाल सुई' को खिसकाते या रेडियो का रुख बदलते थे, तो कभी आवाज धीमी होने या टूटने की वजह से कान में रेडियो लगा कर गौर से सुनने की कोशिश करते थे।

रेडियो पर उनके किसी कार्यक्रम की शुरुआत के साथ ही कई बार यह भी होता था कि अमीन सयानी की आवाज बाद में आती थी, सुनने वाले किसी व्यक्ति के मुंह से उसी अंदाज में पहले निकल जाता था- 'बहनों और भाइयों..!' उस दौर में रेडियो के जरिए जिस स्वरूप में लोगों को मनोरंजन मिल रहा था, उसमें अमीन सयानी ने अपने कार्यक्रमों से एक खास तरह की गरिमा भरी थी। उनके नाम कई रिकार्ड और पुरस्कार हैं। मगर सबसे अहम पहलू यह था कि क्लिष्ट भाषा के बजाय वे जिस बोलचाल की जुबान में कार्यक्रम पेश करते थे, वह साहित्य प्रेमियों से लेकर आम लोगों तक के दिल में उतरती थी। न जाने कितने लोग होंगे, जो उनके जरिए हिंदी के साथ उर्दू, फारसी शब्दों और गीतों से जुड़े ब्योरों से पहली बार रूबरू हुए होंगे। आज तकनीक की दुनिया ने इतना तो कर ही दिया है कि मशहूर कार्यक्रम बिनाका गीत माला की यादों पर केंद्रित 'सारेगामा कारवां' से लेकर अन्य रेडियो शृंखलाओं और साक्षात्कारों के जरिए लोग जब चाहे उनकी आवाज और उनके अंदाज के साथ हो लेंगे, मगर इसके लिए उनके स्वर की संवेदना के सम्मोहन में भी गहरे उतरना होगा।

विस्फोटक हादसों के गुनहगार

कानून के पालन में ढिलाई का परिणाम है कि मध्य प्रदेश राज्य के हरदा जिले में अवैध पटाखा कारखाने में हुए भीषण विस्फोट से तेरह मौतें हुईं और दो सौ से अधिक घायल हो गए।

विनोद के शाह

कानूनी बंदिशों का अनुपालन कराने के बजाय सस्ता वैकल्पिक रास्ता सुझाकर गैर-कानूनी कारोबार के लिए आसान मार्ग सुलभ कराने वाले जिम्मेदार शासकीय सेवक भी अपराध में बराबर के साझेदार होते हैं। नियमों को दरकिनार कर आसान अनुमति या अपने निगरानी क्षेत्र में गैर-कानूनी रूप से संचालित कारोबार या गतिविधियों पर आंखें बंद कर हादसों की जमीन तैयार कराने वाले शासकीय सेवकों पर आपराधिक कानूनी धाराओं में प्रकरण दर्ज करने के बजाय, संपूर्ण कार्यपालिका बचाव की प्रक्रिया में सक्रिय हो जाती है। अंततः होता यह है कि हादसे-दर-हादसे होते रहते हैं। वहीं, आपराधिक प्रमाणों में कटौती या हेराफेरी करने से प्रत्यक्ष मुख्य अपराधी भी सजा से बच निकलता है। सिर्फ आम जनमानस हादसों की चपेट में आकर खमियाजा भुगतने को मजबूर होता है। लापरवाही की सजा न मिलने का ही परिणाम है कि जिम्मेदार शासकीय सेवक प्रत्येक हादसे को लेकर और उसके बाद भी तमाशबीन बने रहते हैं।

कानून के पालन में ढिलाई का परिणाम है कि मध्यप्रदेश राज्य के हरदा जिले में अवैध पटाखा कारखाने में हुए भीषण विस्फोट से तेरह मौतें हुईं और दो सौ से अधिक घायल हो गए। घटनास्थल के आसपास एक किमी क्षेत्र पूरी तरह वीरान हो गया। घायलों के शरीर से बारूद, धातुओं और पत्थरों के टुकड़े निकल रहे थे। विस्फोटक सामग्री घायलों के फेफड़ों में तक घुस चुकी थी। घटना स्थल के पास सड़कों पर खड़े ट्रकों और भारी वाहनों के परखच्चे उड़ गए थे। सन 2015 से यह कारखाना अवैध रूप से कृषि भूमि पर चल रहा था। बारूद कारखाने के स्थान पर फसलों का उत्पादन दिखाकर उन्हे शासकीय समर्थन मूल्य पर तौला जा रहा था। इतना ही नहीं, 2015 के बाद इस कारखाना भूमि का फसल क्षति बीमा दावा दिलाने का कार्य भी तत्कालीन शासकीय तहसील के सेवकों द्वारा बखूबी किया गया।

संचालकों के पास सीमित मात्रा में पटाखा भंडारण का लाइसेंस था। मगर तय मात्रा से कई गुना अधिक भंडारण के साथ ही पटाखों का अवैध निर्माण सतत जारी था। पचास से अधिक बाल मजदूर रोजाना दो सौ रुपए की दिहाड़ी पर कार्यरत थे। भंडारण की अनुमति के तुरंत बाद जुलाई 2015 में कारखाने में हुए हादसे में दो मजदूरों की मौत हुई थी। उक्त घटना के समय प्रशासन के तत्कालीन एसडीएम ने सुरक्षा मानकों में गंभीर चूक का हवाला अपनी जांच रपट में दिया था। रपट के आधार पर तत्कालीन जिलाधीश ने बारूद गोदाम संचालन पर रोक लगाकर ताले जड़ दिए थे। इस विस्फोट और मजदूरों की मौत के प्रकरण में सन 2021 में स्थानीय जिला अदालत ने दोषी करार देते हुए कारखाना संचालक को दस वर्ष की कैद और अर्थदंड लगाया था। मगर उच्च न्यायालय से मिली जमानत और तत्कालीन संभागीय आयुक्त ने जिलाधीश के आदेश के विरुद्ध की गई अपील में तालाबंदी आदेश पर स्थगन देकर कारखाना मालिक को विस्फोटक भंडारण की अनुमति दे दी थी। उसके बाद आगे सुनवाई भी कभी नहीं हुई है।

विस्फोटक भंडारण की अनुचित मात्रा और पटाखा अवैध निर्माण तबसे निरंतर जारी था। मगर स्थगन आदेश के बाद आयुक्त कार्यालय में प्रकरण की अगली सुनवाई अब तक नहीं हो सकी है। सरकारी लापरवाही और स्थानीय प्रशासन की दूसरी आपराधिक भूमिका यह भी रही है कि उक्त अवैध कारखाना भवन के पास ही सरकारी खर्चे पर प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत कुटी आबंटन और निर्माण कराकर पटाखा कारखाने के मजदूरों की आवास कालोनी विकसित कर दी गई है। इस कालोनी के मजदूरों को शासकीय मुफ्त राशन और आयुष्मान योजना से भी जोड़ा गया था। जबकि अधिकांश मजदूर तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल से हैं। हादसे के बाद अधिकांश मजदूर परिवार इस कालोनी से लापता हो गए हैं।

> देशभर में बगैर वस्तुकर चुकाए, चलाए जा रहे इस अवैध पटाखा कारोबार पर पिछले वर्ष सेवा एवं वस्तुकर अधिकारियों ने बिक्रीकर चोरी के तहत 57 लाख रुपए का दंड गोदाम मालिकों पर लगाया था। मगर इसके बाद भी स्थानीय प्रशासन और संबंधित विभाग इस अवैध कारोबार के खिलाफ सख्ती नहीं बरत सके थे। इस सच्चाई को प्रशासनिक लापरवाही कहना उचित होगा या अनुचित व्यापार लाभ देने का प्रशासनिक संरक्षण? यह शासन को तय करना पड़ेगा। दोनों ही तरह के हालात जिम्मेदार अधिकारियों को दंड की परिधि में खड़ा करने वाले हैं।

ऐसा नहीं कि हरदा शहर का यह दिल दहलाने वाला हादसा देश या प्रदेश की पहली घटना हो, जिसके कारण सरकार को निर्णय लेने में समय लग रहा है। 31 अक्तूबर 2023 को मप्र के ही दमोह जिले के भीड़भाड़ वाले बाजार में स्थित पटाखा फैक्ट्री में हुए धमाकों में पांच लोगों की मौत हुई थी। प्रदेश के ही मुरैना जिले में 20 अक्तूबर, 2023 को पटाखा फैक्ट्री में आगजनी और धमाके में चार लोगों की मौत हुई थी। प्रदेश के झाबुआ जिले की पटेलावद तहसील में नौ वर्ष पूर्व बस अड्डे के नजदीक स्थित विस्फोटक सामग्री के एक गोदाम में हुए धमाकों में 79 लोग काल कवलित और सैकड़ों लोग अपंग हो गए थे। मगर अब सारे अपराधी दोष मुक्त हो गए हैं। सरकार ने भी तत्कालीन पुलिस थाना प्रभारी की मात्र सोलह सौ रुपए की एक पदोन्नति रोक कर अपने न्याय का डंका बजवा लिया था।

ये सभी मामले प्रशासनिक लापरवाही और मिलीभगत के परिणाम थे। मगर दोषी प्रशासनिक अधिकारी-कर्मचारी हमेशा दंड के दायरे से बाहर ही रहे हैं। सरकार द्वारा घटना के तुरंत बाद दोषी करार देकर निलंबित किए जाने वाले अधिकारी और कर्मचारी पुनः बहाल कर दिए गए। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर की पटाखा फैक्ट्री में लापरवाही से मौत के हालात रहे हों या तमिलनाडु के शिवकाशी में प्रतिवर्ष होने वाले पटाखा कारखानों में आग और धमाकों से मासूमों की मौतें, राज्य सरकारें मौतों का मामूली मुआवजा बांटकर अपने कर्तव्य से विमुक्त हो जाती हैं। प्रत्येक घटना के बाद सरकारें यही कहती नजर आती हैं कि भविष्य में घटनाओं पर रोक लगाने के साथ दोषियों पर कड़े दंड की कार्यवाही होगी! लेकिन सजा का लेखाजोखा जनता प्रत्येक दफा देखती आ रही है। घटना की जांच के लिए बनाए जाने वाले आयोगों और समितियों की रपटों को सार्वजनिक करने का प्रयास भी इसलिए नहीं होता कि जनता घटना को भूल चुकी है। देशभर में अधिकांश पटाखा निर्माण और विस्फोटक भंडारण गैर-कानूनी ढंग से संचालित होकर जीएसटी चोरी, पर्यावरण नुकसान, बाल मजदूरों का शोषण और मानवाधिकारों के हनन से जुड़ा है। लेकिन निगरानी से जुड़ा प्रशासनिक तंत्र और जिम्मेदार संस्थाए इस सुरक्षा संबंधी अतिसंवेदशील मामले में कठघरे में हैं।

बदलते जीवन मूल्य

धर्मेंद्र जोशी

समय के पहिये थमते नहीं। कभी विश्राम नहीं करते। अपनी नियत गति से, निर्बाध, प्राकृतिक लय से चलते रहते हैं। मनुष्य का जीवन भी समय चक्र की घूर्णन गति के सापेक्ष विभिन्न पड़ावों को पार करते हुए अपने अंतिम पायदान पर पहुंच ही जाता है। बालपन की अबोध भंगिमा कब सयानी हो जाती है और कब उत्तरार्द्ध की बेला आ जाती है, पता ही नहीं चलता। जीवन का हर पड़ाव महत्त्वपूर्ण है और स्मृतियों का खजाना भी, जिसमें कुछ खट्टी तो कुछ मीठी यादों की गठरी सहेज कर रखी जाती है, जो बीते बचपन, छूटती युवावस्था और साथ चलती पके बालों की उम्र को भी साधने का काम करती है।

पांच दशक पहले गांव, कस्बे और छोटे शहरों का बचपन आज के बचपन से बिल्कुल अलहदा था, संयुक्त परिवारों की छांव में, सघनता से बुने हुए रिश्तों का एक अटूट बंधन बच्चों को जन्म से ही मिलता था, जिसके सुवासित वातावरण में उन्मुक्त बाल्यकाल गुजरता था। उसमें नानी-दादी की कहानियां धर्म और अध्यात्म से जुड़ाव एक दूसरे के प्रति समर्पण ममत्व की भावना और गहन गंभीर संस्कारों के चलते बाल्यावस्था का समग्र समय बहुत ही आसानी गुजर जाता था। इसके ठीक विपरीत आज बच्चों के बचपन को समय के पहले ही खत्म किया जा रहा है। भावुकता का स्थान यांत्रिकता ने ले लिया है। यही कारण है कि परिवार और रक्त संबंधियों के बीच भी भाव भरे रिश्तों का नितांत अभाव देखा जा रहा है। छोटी-छोटी बात पर आपसी संबधों में तुरंत कटुता पैदा हो जाती है। मनमाफिक काम न होने पर बच्चे से लेकर बड़े तक आपा खो देते हैं। जैसे-जैसे भौतिक सुखों और सुविधाओं का लाभ लोगों को मिलने लगा है, उसी अनुपात में आत्महत्याओं की संख्या का ग्राफ भी बढ़ा है। बाहरी चकाचौंध तो खूब दिखाई दे रही है, मगर मन के कोने में गहन अंधकार समाया हुआ है।

वे दिन पता नहीं कहां गए, जब गांव में किसी के यहां शादी होती थी और खुशी सारा गांव मनाता था। पड़ोस में आए मेहमान के लिए सारी व्यवस्थाओं का भार पड़ोसी ही उठा लेते थे। जब बेटियां घर से विदा होती थीं, तो आसपास वाले की आंखें भी पनीली हो जाती थीं। आजकल जीवन तो आगे बढ़ रहा है, मगर जीवन मूल्यों में गिरावट का दौर लगातार जारी है। एक दूसरे का समय-समय पर सहयोग, दुख और सुख में खड़े रहने की भावना, रिश्तों को निभाने की प्रबल इच्छा और स्नेह की डोर भी अब टूटने लगी हैं, जिसका असर भावी पीढ़ी पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

एक ऐसा भी समय भी रहा, जब सारे लोग मिलजुल कर हर छोटी-बड़ी समस्या का हल निकालने में एक दूसरे की मदद करते थे। बीमारी हो या कोई अचानक आ जाने वाली आपदा हो, कोई न कोई अवश्य खड़ा हुआ दिखाई देता था, लेकिन आजकल आदमी भीड़ से घिरा हुआ है, संपन्नता के सारे संसाधन मौजूद हैं, आधुनिकता का आकाश छूने को आतुर हैं, आभासी दुनिया में रात-दिन विचरण कर रहा है, मगर वास्तविकता में अत्यंत अकेला है। भावनात्मक और मानवीय गुणों से बहुत ही निर्धन हैं, इसलिए बहुत कम उम्र में ही बड़ी-बड़ी और जानलेवा बीमारियां सामने आने लगी हैं। जरा-सा तनाव सहन करने की भी सामर्थ्य नहीं है। सहनशीलता क्षीण हो चुकी है।

जब से आर्थिक आधार को समाज में उच्चता का पैमाना बनाया गया है, तब से आपसी रिश्तों में एक प्रकार की तल्खी और नकारात्मक प्रतिद्वंदिता दिखाई देने लगी है। एक अंधी दौड़ शुरू हो चुकी है, जिसका कोई अंत नहीं है। इसका सबसे अधिक कुप्रभाव नजदीक के रिश्तों पर पड़ा है। यही कारण है कि आज पिता-पुत्र, भाई-भाई, चाचा-भतीजा के रिश्ते अत्यंत असहज और कुटिल अवधारणा से भरे हो गए हैं। आज जब रिश्तों को कलंकित करने वाली खबरें आती हैं, तब दिल बैठ जाता है। जमीन-जायदाद के लिए की आसमान छूती कीमतों ने भाई को भाई का दुश्मन बना दिया है। कोई भी तनिक भी पीछे हटने को तैयार नहीं है। वे दिन अब बस यादों में हैं, जब बड़े के कपड़े पहन कर छोटा भाई अपनी स्कूल-कालेज की पढ़ाई पूरी कर लेते थे। परिवार में अपने दायित्व के साथ साथ छोटे भाई बहन के लिए पिता का फर्ज भी पूरा करता था। वहीं छोटे भाई भी सारी उम्र बड़े भाई के सम्मान में कोई कमी नहीं आने देते थे। कभी रिश्तों का बंधन एक दूसरे का संबल हुआ करता था। बड़ी से बड़ी विपत्ति को भी मिलकर परास्त किया जा सकता था। परिवार और समाज को इकट्ठा रहने और साथ में काम करने के लिए प्रेरित किए जाने का भाव भी अब दुर्बल होने लगा है। इसका असर चारों ओर दिखने लगा है। आज इस बात की भी आवश्यकता महसूस की जाने लगी है कि भारतीय जीवन मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जाए, ताकि मनभेद की खाई को पाटा जा सके।

बदलाव का स्वरूप सर्वत्र दिखाई देने लगा है, चाहे वैचारिक स्तर हो, रहन-सहन का ढंग हो, खाने पीने की बात हो या फिर तीज-त्योहार, शादी के आयोजन हों। सकारात्मक बदलावों का स्वागत किया जाना चाहिए, वहीं नकारात्मक और आडंबरयुक्त बदलावों का विरोध किया जाना चाहिए। आज बेहद खर्चीली शादियां अस्तित्व में आ चुकी हैं. खुले रूप में मदिरापान फैशन बन चुका है। वर्तमान में नैतिक मूल्यों का भी तीव्रता से क्षरण हुआ है, जो आए दिन की घटनाओं में देखा जा सकता है। संवेदना का मापांक शून्य पर है। आज किसी भी घटना का लोगों के दिलों पर कोई फर्क नहीं पड़ता है। एक अजीब खालीपन लोगों के मन में घर कर गया है, जिसका भरना अत्यंत आवश्यक है, ताकि स्नेह के रिश्तों का जुड़ाव कायम रहे।

दुनिया मेरे आगे

> कभी रिश्तों का बंधन एक दूसरे का संबल हुआ करता था। बड़ी से बड़ी विपत्ति को भी मिलकर परास्त किया जा सकता था। परिवार और समाज को इकट्ठा रहने और साथ में काम करने के लिए प्रेरित किए जाने का भाव भी अब दुर्बल होने लगा है।

मासूमों की फिक्र

'हिंसक होते बच्चे' (संपादकीय, 16 फरवरी) पढ़ा। बच्चों को भगवान का रूप माना जाता है। उनके बीच जाति-धर्म की कोई दीवार नहीं होती है। वे मन के सच्चे होते हैं, लेकिन आजकल बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति बढ़ती देखी जा रही है। खेलने-कूदने की उम्र में जघन्य अपराधों में भी किशोरों के शामिल होने की घटनाओं ने सोचने पर मजबूर कर दिया है। बच्चों की इस बदलती मनोदशा को समझने की आवश्यकता है। पहले के जमाने में परिवार के बुजुर्गों द्वारा बच्चों को जीवन बुनने की कहानियां सुनाई जाती थीं। आज उसकी जगह टेलीविजन और मोबाइल ने ले लिया है और बच्चों को एक आभासी दुनिया मिल रही है, जिसमें निराशा और हताशा उपजना एक सामान्य-सी बात है। संयुक्त परिवार बिखरता जा रहा है। बच्चों पर ध्यान देने वाले लोग नहीं मिल पाते। खेल के मैदान गायब होते जा रहे हैं। बचपन मोबाइल गेम में सिमटता जा रहा है। आनलाइन गेम की वजह से बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति और अकेले रहने की आदत बढ़ती जा रही है। ऐसे में विकल्प यही है कि माता-पिता को बच्चों के साथ समय व्यतीत करना चाहिए और उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए।

– हिमांशु शेखर, केसपा गया

विश्वसनीयता की परीक्षा

उत्तर प्रदेश में सिपाही भर्ती परीक्षा के मामले में हाल ही में सेंधमारी के कुछ मामले सामने आए हैं, जिन्हें पुलिस ने गंभीरता से लिया है। हालांकि यह चिंता का विषय है, क्योंकि प्रश्नों का हल करने वाले गिरोहों ने योजनाबद्ध ढंग से परीक्षा में घुसपैठ की थी। मगर प्रशासन की प्रतिक्रिया भी राहत भरी रही कि ऐसे अनेक आरोपियों को पकड़ा गया। हालांकि इस मामले में और भी विस्तारित जांच की आवश्यकता है, क्योंकि संगठित ढंग से इस धांधली को आयोजित किया गया हो सकता है। कोचिंग संस्थाओं के संचालकों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि ये स्थान भी गड़बड़ियों में एक कड़ी होते हैं।

हालांकि पुलिस ने इस मामले में बड़ी सफलता प्राप्त की है, लेकिन उन्हें तंत्र के सभी पहलुओं को उजागर करने की जरूरत है, ताकि अभ्यर्थियों में भरोसा बना रहे, ताकि कोई भी संगठित धांधली का शिकार न हो। सार्वजनिक एवं निष्पक्ष परीक्षा प्रक्रिया वक्त की जरूरत है, ताकि उम्मीदवारों में विश्वास और न्याय की भावना बनी रहे। परीक्षा की शुचिता और पारदर्शिता कायम हो सकी तो परीक्षाओं की विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

– सुधीर कुमार, याकूबपुर, औरैया

भ्रष्टाचार के विरुद्ध

चुनावी बांड योजना को असंवैधानिक ठहराने से अपारदर्शी लेन-देन फिलहाल प्रतिबंधित होंगे और राजनीतिक दलों को बांड से प्राप्त चंदे की जानकारी आदि के मामलों में पारदर्शिता अपनानी होगी। इससे चुनाव आयोग का काम भी आसान होगा, निष्पक्षता बढ़ेगी। चंदा लेने और देने वालों के नामों को उजागर करने की अनिवार्यता से सियासी दल और दाता ईमानदारी के दबाव में रहेंगे। इससे आगे अगर नकद राशि में भी लेनदेन कम होंगे, तो इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सुधार के साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ शिकंजा कसेगा और सूचना का अधिकार कानून का उल्लंघन न होने से चुनाव आयोग के प्रति भी विश्वास बढ़ेगा। यों भी लोकतंत्र और उसकी प्रक्रिया पर जनता का भरोसा मजबूत होना जरूरी है।

–बीएल शर्मा 'अकिंचन', उज्जैन

अतिक्रमण की राह

आज चार पहिया वाहन रखने को कई बार ऊंची हैसियत और शान का पर्याय माना जाता है। मगर कुछ लोग कार तो ले लेते हैं, मगर गाड़ी खड़ी करने के लिए उचित जगह नहीं होने की वजह से इसे अपनी सुविधा से सड़क किनारे कहीं भी खड़ी कर देते हैं। जबकि इस तरह खड़े गए वाहनों से निकलने वालों को खुद भी दिक्कत होती है। सफाई कर्मी सुबह सफाई करते हैं। गाड़ी खड़ी होने से उनके काम में बाधा आती है। इस तरह ऐसा करने वाले लोग सड़क पर अतिक्रमण के जिम्मेदार है। ऐसा भी संभव है कि सड़क पर गाड़ी खड़ी करने से कभी चालान भी कट सकता है। अगर किसी को बड़े वाहन लेना ही है तो समझदारी यही है कि पहले उसकी पार्किंग की व्यवस्था कर ली जाए। सड़क किनारे खड़ी गाड़ियों की वजह से कई बार संकरे रास्ते में जाम लग जाता है।

– दिलीप कुमार गुप्ता, बरेली

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

नई दिल्ली

www.readwhere.com

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464
Join Epaper Group @ ₹30/m WhatsApp To 8969469464

महिला अधिकार

असंवैधानिक नियम

सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया है कि विवाह या पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण महिलाओं को रोजगार से हटाने के नियम असंवैधानिक हैं। एक उल्लेखनीय फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने विवाह करने पर महिलाओं को रोजगारों से अनिवार्य रूप से हटाने वाले नियमों को 'आदिमकालीन, भेदभावपूर्ण तथा संवैधानिक सिद्धान्तों का उल्लंघन करने वाला' बताया है। यह निर्णय जेंडर समानता तथा महिला अधिकार संरक्षण की दिशा में मील का एक पत्थर है। दशकों से अनेक रोजगार क्षेत्रों में महिलाओं को अपने वैवाहिक स्तर या पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण नौकरी से बाहर कर दिया जाता था। ऐसे भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण न केवल जेंडर असमानता को बढ़ावा मिलता है, बल्कि महिला की आर्थिक स्वतंत्रता तथा पेशेवर प्रगति भी बाधित होती है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ऐसे नियम खारिज करना जेंडर न्याय तथा कार्यस्थल समानता के दृष्टिकोण से महिलाओं की विजय है। इसके साथ ही कानून के समक्ष समानता तथा जेंडर के आधार पर भेदभाव-निषेध की संवैधानिक गारंटी भी पूरी हुई है। यह समाज को ऐसी बुराइयों से मुक्त करने का प्रयास है जो महिलाओं को अविश्वसनीय व धोखेबाज मानता है क्योंकि वे अपने परिवारों के लिए बीच में रोजगार छोड़ देती हैं। ऐसे प्रतिगामी नियमों का विस्तार व्यक्तिगत रूप से महिलाओं से आगे जाता है और वे असमानता की संस्कृति बढ़ाने तथा हानिकारक पूर्वाग्रह मजबूत करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इन बाधाओं को तोड़ कर न्यायपालिका ने व्यवस्थागत जेंडर भेदभाव को समाप्त करने तथा ज्यादा समावेशी व समतापूर्ण समाज बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। निश्चित रूप से समय की कसौटी पर खरे उतरने वाले परिवर्तन समाज के भीतर से आने चाहिए, पर एक प्रगतिशील समाज सुनिश्चित करने के लिए उनका विधिक संरक्षण जरूरी है।

यह निर्णय बिना किसी प्रकार की मनमानी बाधाओं के महिलाओं के काम करने तथा कॅरियर अवसरों का लाभ उठाने के अधिकारों का महत्व रेखांकित करता है। महिलाओं को व्यक्तिगत जीवन तथा पेशेवर महत्वाकांक्षाओं के बीच चयन के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उनको अपनी शर्तों पर दोनों क्षेत्रों में आगे बढ़ने की स्वतंत्रता प्राप्त है। इसके साथ ही महिलाओं को रोजगार अवसरों से वंचित करने के अनेक आर्थिक दुष्प्रभाव होते हैं। कार्यस्थल पर जेंडर समानता न केवल सिद्धान्त का मामला है, बल्कि यह आर्थिक वृद्धि तथा सामाजिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। जेंडर को अनदेखा कर सभी व्यक्तियों की प्रतिभा और क्षमता का लाभ उठाना खोज, उत्पादकता तथा समृद्धि की तलाश करने वाले समाजों के लिए जरूरी है। इसके साथ ही जेंडर-आधारित भेदभाव का मुकाबला करने के प्रयासों का विस्तार विधिक ढांचे से आगे निकल कर व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण व मानकों तक विस्तारित है। गहराई तक जड़ें जमाए पूर्वाग्रहों को चुनौती देने तथा जेंडर समानता प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा, जागरूकता अभियान व एडवोकेसी अनिवार्य उपकरण हैं। हालांकि, सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय महिला अधिकारों के लिए संघर्ष में मील का एक पत्थर है, पर यह अभी जेंडर समानता के व्यापक आंदोलन की दिशा में शुरुआत है। सभी पक्षों की ओर से सकारात्मक प्रयास सचमुच समावेशी और समान समाज बनाने के लिए लगातार प्रयास जरूरी हैं जिनमें सरकारें, सेवायोजक, सिविल सोसाइटी और व्यक्ति शामिल हैं। हम प्रसन्न हो सकते हैं कि महिलाओं के समक्ष मौजूद एक और बाधा टूटी है तथा अदालत को इस उल्लेखनीय फैसले के लिए धन्यवाद दिया जाना चाहिए।

भाषाओं का संरक्षण महत्वपूर्ण

हमें भाषाओं का संरक्षण करना चाहिए। किसी भाषा के नष्ट होने का अर्थ केवल शब्दों का नुकसान होने के बजाय संस्कृति एवं परंपरा का क्षरण भी है।

संतोष मैथ्यू
(लेखक, असोसियेट प्रोफेसर हैं)

यूनेस्को के तत्वावधान में हर साल 21 फरवरी को 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' मनाया जाता है। इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन की घोषणा पहले 1999 में युनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल आर्गेनाइजेशन-यूनेस्को ने भाषाई व सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहन देने के लिए की थी। वर्ष 2000 से इसे हर साल मनाया जाता है। 2024 में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की थीम 'पीढ़ीगत शिक्षण के लिए बहुभाषी शिक्षा स्तंभ' है। इस तिथि का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान व वर्तमान बांग्लादेश के छात्रों ने 1952 से जारी भाषा आंदोलन में अनेक बलिदान दिए थे। वे अपनी भाषा-बांग्ला को पाकिस्तान की एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाना चाहते थे। तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान की 54.1 प्रतिशत जनसंख्या बांग्ला बोलती थी। इस्लामी पहचान के बावजूद पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान के बीच अनेक भाषाई, सांस्कृतिक, नस्ली और भौगोलिक विरोधाभास थे। इस सांस्कृतिक टकराव के दौरान इस्लामाबाद के शासकों ने उर्दू को आधिकारिक भाषा घोषित कर दिया था।

इस प्रकार उन्होंने बांग्ला भाषा को पूरी तरह अनदेखा किया था जिसे जनता अपने दिल के निकट मानती थी। उस समय पूर्वी बंगाल की राजधानी ढाका में हजारों छात्र एकत्र हुए थे और उन्होंने आंदोलन शुरू किया था। पश्चिमी पाकिस्तान ढाका विश्वविद्यालय तथा ढाका मेडिकल कालेज के छात्रों का प्रदर्शन बलपूर्वक कुचल देना चाहता था। भाषा आंदोलन के खिलाफ फौजी कार्रवाई में अनेक अन्य लोगों के साथ छात्र नेता अब्दुल सलमान, रफीकुद्दीन अहमद, अब्दुल बलखाद और अब्दुल जब्बार शहीद हुए थे। 21 फरवरी, 1952 से शुरू हुए इस भाषा आंदोलन को अंतत: सफलता मिली थी और उर्दू के साथ बांग्ला को अविभाजित पाकिस्तान की मातृभाषा माना गया था।

मातृभाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान, हमारी विरासत की संरक्षक तथा एक ऐसा सेतु है जो हमें अपनी पुरानी पीढ़ियों के विवेक से जोड़ता है। लेकिन आज समय बीतने के साथ अनेक भाषायें गायब हो रही हैं। अनुमान है कि हर दो सप्ताह में दुनिया से एक भाषा गायब हो जाती है। भविष्य में लगभग 43 प्रतिशत बोली जाने वाली भाषायें गायब हो जाएंगी। यूनेस्को द्वारा इस दिवस की घोषणा का उद्देश्य भाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देना है। दुनिया में लगभग 6000 भाषायें हैं जिनमें से कुछ के पास लिपि है और कुछ के पास नहीं। दुनिया में चीनी या मंडारिन सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जिसे विश्व जनसंख्या का 16 प्रतिशत अपनी मातृभाषा के रूप में बोलता है। इस दृष्टिकोण से अंग्रेजी और हिन्दी का दूसरा और तीसरा स्थान है। अनेक भाषायें बोलने में सक्षम लोगों को 'बहुभाषी' कहा जाता है।

वर्तमान वैश्वीकृत समाज में अधिकाधिक भाषाओं में दक्षता को बहुत बड़ा कौशल माना जाता है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव 17 भाषायें धाराप्रवाह बोल सकते थे और इस प्रकार वे 'बहुभाषी' लोगों का अच्छा उदाहरण थे। वर्तमान समय में 3000 से अधिक भाषायें संकटग्रस्त हैं। 1950 के बाद से दुनिया से 230 भाषायें गायब हो गई हैं। यूनेस्को की पूर्व महानिदेशक इरिना बोकोवा के नेतृत्व में संकटग्रस्त भाषाओं के संरक्षण की अनेक परियोजनायें चलाई गई थीं। इनमें से एक बांग्लादेश की राजधानी ढाका में स्थापित 'इंटरनेशनल मदर लैंग्वेज इंस्टीट्यूट' है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की सहायता से मातृभाषाओं के प्रोत्साहन की अनेक योजनायें शुरू की गई हैं। 2008 को 'अंतरराष्ट्रीय भाषा दिवस' के रूप में मनाया गया था और गायब होती भाषाओं को संरक्षण देने के प्रयास किए गए थे। संयुक्त राष्ट्र नीत सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों में चौथा स्थान मातृभाषा के माध्यम से बेहतर और ज्यादा समावेशी शिक्षा को दिया गया है। संरा. अनुमानों के अनुसार दुनिया में बोली जाने वाली लगभग 7000 भाषाओं के अगली पीढ़ी में बने रहने की कोई गारंटी नहीं है। इनमें से 98 प्रतिशत भाषाओं का प्रयोग दुनिया की केवल 4 प्रतिशत जनसंख्या करती है। भाषाविदों ने पता लगाया है कि एशिया और अफ्रीका के कुछ समाजों में कुछ भाषायें केवल महिलायें बोलती हैं।

कर्नाटक के गुलबर्गा व महाराष्ट्र के शोलापुर में अब भी लोकप्रिय 'दखिनी' ऐसी ही एक भाषा है। 2011 की जनगणना के अनुसार, संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषायें दर्ज हैं जिनमें 121 मातृभाषायें शामिल हैं। भारत की जनसंख्या का 43.6 प्रतिशत, यानी 52.8 करोड़ लोग हिन्दी बोलते हैं। इसके बाद सबसे ज्यादा 8 प्रतिशत लोगों की भाषा बांग्ला है। मातृभाषा के रूप में अंग्रेजी बोलने वाले 2.6 लाख लोगों में से एक लाख से अधिक महाराष्ट्र में हैं। दूसरी भाषा के रूप में पूर्वोत्तर राज्यों में हिन्दी के बजाय अंग्रेजी को पसंद किया जाता है। 2011 में मणिपुरी मातृभाषा वाले 17.6 लाख लोगों में से 4.8 लाख लोगों ने अंग्रेजी को अपनी दूसरी भाषा माना था। हालांकि, हिन्दी के साथ अंग्रेजी को केन्द्र सरकार की दो आधिकारिक भाषाओं में शामिल किया गया है, पर यह आठवीं अनुसूची की 22 भाषाओं में शामिल नहीं है। इसे उन 99 भाषाओं में स्थान दिया गया है जो इस अनुसूची में नहीं हैं। मातृभाषा के दृष्टिकोण से भारत में अंग्रेजी बोलने वाले केवल 2.6 लाख लोग थे जो जनगणना में शामिल 121 करोड़ लोगों का बहुत छोटा हिस्सा है। फिजी में हिन्दी आधिकारिक भाषा है जिसे 44 प्रतिशत जनसंख्या बोलती है। इस प्रकार प्रतिशत के दृष्टिकोण से फिजी में हिन्दी बोलने वालों की संख्या भारत से अधिक है।

भारत भाषाई विविधता से भरा देश है। यहां हिन्दी और अंग्रेजी के साथ 22 क्षेत्रीय भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची के अनुसार आधिकारिक दर्जा दिया गया है। लेकिन हमारी पैतृक भाषा संस्कृत का प्रभाव समाज में घट रहा है। 15,000 से कम लोग बोलने वाली भाषा के रूप में संस्कृत का प्रयोग करते हैं। हालांकि, केन्द्र और राज्य सरकारों ने संस्कृत को प्रोत्साहन देने की अनेक योजनायें बनाई हैं, पर संस्कृत में केवल एक दैनिक 'सुधर्म' प्रकाशित होता है। उत्तराखंड एकमात्र ऐसा राज्य है जिसने संस्कृत को अपनी आधिकारिक भाषाओं में शामिल किया है। 1961 की जनगणना के अनुसार भारत में 1,662 भाषाओं को 'मातृभाषा' माना गया था। लेकिन 2011 की जनगणना में केवल 234 भाषाओं को मातृभाषा माना गया है। पचास साल से कम समय में 800 से अधिक मातृभाषायें विलुप्त हो गई हैं।

निहाली को अब भी मातृभाषा माना जाता है जिसे मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के 15 गांवों में लगभग 15,000 लोग बोलते हैं। इसी प्रकार महाराष्ट्र के एक गांव में लगभग 1,000 पुर्तगाली बोलने वाले लोग हैं। यूनेस्को ने ऐसी 197 भारतीय भाषाओं की सूची बनाई है जो विलुप्त हो सकती हैं। अंग्रेजी, स्पैनिश और फ्रेंच भाषाओं ने अपनी लिपि विकसित नहीं की, बल्कि उन्होंने लिखने के लिए लैटिन लिपि स्वीकार कर ली। हिन्दी भाषा की भी अपनी लिपि नहीं है और वह देवनागरी लिपि का प्रयोग करती है।

बांग्लादेश के राष्ट्रगान 'आमार सोनार बांग्ला' को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1905 में बंगाल के पहले विभाजन के समय लिखा था। विश्व भारती में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिष्य आनन्द समरकून ने श्रीलंका का राष्ट्रगान 'नमो नमो माथा' लिखा था। 2009 में समाप्त होने वाले श्रीलंका के गृहयुद्ध के दस दशक पहले सिंहली के साथ तमिल को श्रीलंका की आधिकारिक भाषा माना गया था। केन्द्र सरकार के अनुसार, 1961 से 200 से अधिक भारतीय भाषायें विलुप्त हो गई हैं। इनमें से अधिकांश भाषाओं का प्रयोग आदिवासी समुदाय करते थे। 1961 की जनगणना के बाद सरकार ने 10,000 से कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं का राष्ट्रीय दर्जा समाप्त कर दिया। हमें स्वीकार करना चाहिए कि भाषाओं का गायब होना केवल शब्दों का गायब होना नहीं, बल्कि संस्कृति व परंपराओं का गायब होना भी है। नोम चॉमस्की के अनुसार, 'भाषा केवल शब्द नहीं हैं। यह संस्कृति, परंपरा, एक समुदाय का एकीकरण और समुदाय का पूरा इतिहास है। ये सारी चीजें भाषा में अंतर्निहित हैं।' इसे देखते हुए भाषाओं को गायब होने देना ऐसा पाप है जिसे हम अपने पूर्वजों के साथ अपनी भावी पीढ़ियों के प्रति भी करते हैं।

आम चुनावों में कृत्रिम बुद्धि व डिजिटल मीडिया

यह देखते हुए कि एआई संभवतः हमारे चुनावों को कैसे प्रभावित करेगा, हमें कई मोर्चों पर तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

पूजा कपूर
(लेखिका, सह प्रोफेसर हैं)

आजकल, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), ब्लॉकचेन और नैनोटेक्नोलॉजी जैसी प्रौद्योगिकियों से जुड़े हुए हैं। जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, यह आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों के अलावा कई निर्भरताएँ, शक्ति संघर्ष, प्रतिद्वंद्विता, जोखिम और अवसर पैदा करता है। इसमें चुनावी माहौल को पूरी तरह से बदलने की शक्ति है, जो भारतीय लोकतंत्र के लिए लाभ और कठिनाइयाँ दोनों प्रदान करता है।

उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाने के लिए एआई द्वारा संचालित एल्गोरिदम का उपयोग सभी सोशल मीडिया साइटों द्वारा किया जाता है। राजनीतिक रणनीति निर्धारित करने के लिए इन एल्गोरिदम का उपयोग महत्व बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप, मतदाता खुद को अलग-थलग सूचनात्मक बुलबुले में पा सकते हैं जो विरोधी विचारों के प्रति उनके जोखिम को सीमित करते हैं और उनके मतदान निर्णयों और प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकते हैं। डीपफेक, या ऐसे वीडियो जिन्हें प्रामाणिक दिखने के लिए बदल दिया गया है, का उपयोग झूठी कहानियां फैलाने और विरोधियों को बदनाम करने के लिए किया जा सकता है। सोशल मीडिया बॉट संदेशों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर सकते हैं और नकली रुझान बना सकते हैं, जिसका उपयोग उन लोगों को प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है जो निश्चित नहीं हैं कि किसे वोट देना है। एआई-संचालित दुष्प्रचार की जटिलता से तथ्य को कल्पना से अलग करना कठिन हो जाता है, जो चुनावों के दौरान अच्छी तरह से सूचित निर्णय लेने के लिए एक गंभीर खतरा पैदा करता है।

चूंकि प्रौद्योगिकियां अधिक परिष्कृत होती जा रही हैं, इसलिए अवैध गतिविधियों को विदेशी अभिनेताओं (आतंकवादी संगठनों या स्लीपर सेल) से जोड़ना और पहचानना अधिक चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। इससे उन्हें ज़िम्मेदार ठहराना और भविष्य में हस्तक्षेप रोकना अधिक कठिन हो सकता है। एआई-संचालित बॉट्स को विदेशी सरकारों और ट्रोल फार्मों द्वारा तैनात किया गया था, जिनके साथ वे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर फर्जी पहचान और भ्रामक जानकारी के नेटवर्क के साथ जुड़े हुए थे, जिसका उद्देश्य जनता की राय को प्रभावित करना था।

इन बॉट्स ने अन्य उम्मीदवारों के खिलाफ नकारात्मक रूढ़िवादिता और साजिशों का प्रचार किया, कुछ संचार को बढ़ाया, और यह धारणा दी कि एक विशेष उम्मीदवार को व्यापक समर्थन मिल रहा था। कुछ महीने पहले जब भारतीय प्रधानमंत्री का डीपफेक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ तो हमें इसकी एक झलक मिली। यह लोकतंत्र के लिए गंभीर ख़तरा है क्योंकि इसका उपयोग मतदाताओं के निर्णयों और कार्यों को प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक परामर्श फर्म कैम्ब्रिज एनालिटिका ने अरबों फेसबुक खातों से एकत्रित जानकारी का उपयोग करके मतदाताओं के व्यापक मनोदैहिक प्रोफाइल बनाए। इस डेटा का उपयोग करके, वे इन व्यक्तियों को अनुकूलित सोशल मीडिया संदेशों और विज्ञापनों के साथ लक्षित करने में सक्षम थे, जिसका प्रभाव 2016 और 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों के साथ-साथ फिलीपीन मध्यावधि चुनावों में उनके मतदान करने के तरीके पर पड़ सकता है। सकारात्मक पक्ष पर, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता लोकतंत्र का समर्थन और संवर्धन कर सकते हैं। सूक्ष्म-लक्षित मतदाताओं के लिए एआई की क्षमता इसके सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक है। इसमें जनसांख्यिकी, सोशल मीडिया गतिविधि और इंटरनेट आचरण सहित ढेर सारे डेटा का उपयोग करके प्रत्येक मतदाता की व्यापक प्रोफ़ाइल बनाना शामिल है। एआई-संचालित एप्लिकेशन अनुकूलित रणनीति प्रदान करते हैं जो पारंपरिक जन अभियानों की तुलना में मतदाताओं को प्रभावित करने की अधिक संभावना रखते हैं। उदाहरण के लिए, भावना विश्लेषण तकनीक उभरते मुद्दों का पता लगा सकती है और जनता की राय को माप सकती है, जिससे अभियानों को अपने संदेश को संशोधित करने और उन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है जो मतदाताओं के लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं।

एआई-संचालित चैटबॉट सामान्य प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं और मतदाताओं को चौबीसों घंटे सूचित कर सकते हैं, जिससे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए मानव संसाधन मुक्त हो सकते हैं। डेटा-संचालित मॉडल मतदाता मतदान का पूर्वानुमान लगाकर और संसाधनों का इष्टतम आवंटन करके अभियान की प्रभावकारिता और सामर्थ्य में सुधार करते हैं। एआई और सोशल मीडिया का उपयोग जागरूकता बढ़ाने, बड़े दर्शकों तक पहुंचने और शिकायतों का समाधान करने के लिए किया जा सकता है। चुनाव आयोग प्रासंगिक जानकारी सोशल मीडिया पर साझा कर सकता है। शिकायतों का जवाब देने के लिए चुनाव आयोग की वेबसाइट एआई-आधारित चैटबॉट तैनात कर सकती है। एआई एल्गोरिदम तथ्य-जाँच उपकरणों के उपयोग से सच्ची खबर को झूठी खबर से अलग कर सकता है। भारत जैसे बड़े देश में, सोशल मीडिया के उपयोग को नियंत्रित और विनियमित करना लगभग कठिन है। इसलिए, यदि हम समस्या को हल करने में असमर्थ हैं, तो हमें समाधान खोजना चाहिए। यह देखते हुए कि एआई संभवत: हमारे चुनावों को कैसे प्रभावित करेगा, हमें कई मोर्चों पर तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है। चुनावी बुनियादी ढांचे और मतदाता डेटा पर हमलों को रोकने के लिए सबसे पहले मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।

दूसरा, दुष्प्रचार और प्रचार को पहचानने और अस्वीकार करने के लिए, मतदाताओं को अपनी मीडिया साक्षरता और आलोचनात्मक सोच क्षमताओं को सुधारने की आवश्यकता है। तीसरा, चुनावों में विदेशी हस्तक्षेप को रोकने के लिए, हमें लोकतंत्रों के बीच सूचना के आदान-प्रदान और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में सुधार करने की आवश्यकता है।

आप की बात

बच्चों की परीक्षा

बच्चों के लिए परीक्षा का समय आ गया है। साल भर की कड़ी मेहनत से बच्चे सुखद भविष्य की नीव मजबूत बनाने का प्रयास कर रहे हैं। बच्चों की परीक्षा उनके माता-पिता और संरक्षकों की भी परीक्षा है। परीक्षा शब्द ही बच्चों में अजीब सी फीलिंग देता है और वे परीक्षा परिणामों के प्रति चिंता पाल लेते हैं। यदि कोई बच्चा सोच ले कि उसकी तैयारी ठीक नहीं हुई है या वह पहले याद की गई चीजें भूल रहा है तो उसमें निराशा की भावना पैदा होती है। यही समय माता-पिता व के सतर्क रहने का है। बच्चो को ऐसा वातावरण, प्रेम और स्नेह दें जिससे उनका मनोबल बढ़े तथा परीक्षा को लेकर तनाव कोसो दूर तक नजर न आए। माता पिता को परीक्षाओं के इस समय में बच्चों की छोटी-छोटी जरूरतों को समझना चाहिए। समय पर खान-पान, परीक्षा संबधी तैयारी, स्वस्थ मनोरंजन, तनाव मुक्त तथा प्रोत्साहन का वातावरण बनाना माता-पिता की जिम्मेदारी है। अक्सर बच्चे पेपर बिगड़ने से मानसिक रूप से हताश हो जाते है। ऐसे में उन्हें चिंता मुक्त करने की जिम्मेदारी माता-पिता के साथ उनके सहपाठियों की भी होती है। यदि सहपाठी प्रतियोगिता की भावना के बजाय छात्रों में परस्पर सहायता और समझदारी विकसित करने का प्रयास करें तो सभी बच्चों को परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने का अवसर मिलेगा।

– **योगेश जोशी,** बड़वाह

अलविदा अमीन सयानी

लगातार 50 वर्षों तक रेडियो सहित आवाज की दुनिया में अपना वर्चस्व कायम रखने वाले अमीन सयानी हमारे बीच नहीं हैं। मगर उनकी झरने सी खनकती आवाज और उनका सबसे निराला बोलने का अंदाज सुनने वालों के मन में एक कशिश पैदा करता था। बिनाका गीत माला से प्रसिद्ध हुए अमिन सयानी रेडियो सीलोन से लगातार 40 वर्ष तक यह कार्यक्रम को चलते रहे। उस वक्त जब टीवी नहीं था तब अमीन सयानी का बिनाका गीत माला कार्यक्रम सुनने के लिए लोग बेताब रहते थे और जिनके यहां रेडियो नहीं थे वह रेडियो वालों के यहां एकत्रित हो जाते थे। भारत के अनेक गायकों को रेडियो और आकाशवाणी से लोकप्रियता मिली थी, उसी प्रकार अमीन सयानी फिल्मी संगीत की दुनिया में प्रस्तुतकर्ता के रूप में एकमात्र विख्यात आवाज वाली शख्सियत थे। रेडियो के अलावा भी जहां भी कार्यक्रम में उनकी आवाज सुनने को मिलती वहां लोग झूमने लगते। अमीन सयानी की लोकप्रियता प्रकारान्तर से दृश्य माध्यम, यानी टीवी, फिल्म आदि की तुलना में श्रव्य माध्यम की विशिष्टता प्रदर्शित करती है। सुने हुए शब्दों व गीतों से बनने वाली छवि दृश्यमान छवि से कम प्रभावी नहीं होती है। इस खनकती आवाज के नायक को शत-शत नमन।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

असांजे का प्रत्यर्पण

अमेरिका वर्तमान समय में विकीलीक्स संस्थापक जूलियन असांजे को अपने देश में प्रत्यर्पण कराने के प्रयास कर रहा है। दूसरी ओर असांजे के वकील एवं ब्रिटेन में उनके समर्थक प्रदर्शन कर मांग कर रहे हैं कि उन्हें किसी कीमत पर अमेरिका प्रत्यर्पित नहीं किया जाना चाहिए। उम्मीद है कि इंग्लैंड की अदालत इस पर गंभीरता से गौर करेगी। अमेरिकन राजनय की सच्चाई का पर्दाफाश करने वाले जूलियन असांजे को अमेरिका में मृत्युदंड होने का खतरा है। असांजे पर जासूसी के 17 आरोपों के साथ लगभग 15 साल पहले उनकी वेबसाइट पर वर्गीकृत अमेरिकी दस्तावेजों के प्रकाशन पर कंप्यूटर के दुरुपयोग का आरोप लगाया है। अमेरिका का कहना है कि असांजे ने अमेरिकी सेना के खुफिया सूचना विश्लेषक चेल्सी मैनिंग को राजनयिक केबल और सैन्य फाइलें चुराने में मदद की, जिन्हें बाद में विकीलीक्स ने प्रकाशित किया। असांजे द्वारा किए खुलासों से पता चला था कि अमेरिकी सेना ने अफगानिस्तान और इराक में युद्ध के दौरान हज़ारों लोगों को अकारण मार डाला था। जूनियन असांजे ने अमेरिकी लोकतंत्र के पीछे छिपे असली साम्राज्यवादी तानाशाहों की तस्वीर सारी दुनिया के सामने उजागर की थी। उनका जीवन महत्वपूर्ण है।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

संवरता कश्मीर

मोदी सरकार ने कश्मीर घाटी से धारा 370 हटा कर उसे संवारने की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाए हैं। अब यहां की हालत में भारी बदलाव आया है एवं जनता में भी बढ़ती खुशहाली की खबरें आने लगी हैं। पिछले दिनों जम्मू कश्मीर के लिए 32,000 करोड रुपए से भी अधिक की परियोजनायें और शुरू किए जाने से अब यहां की जनता और प्रसन्न है। परिवारवाद ने भी कश्मीर का काफी शोषण किया है। शिख अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती व कुछ अन्य परिवारों ने आम कश्मीरी जनता का हक मारने का काम ही अधिक किया है। नौजवानों को बहकाने वाले उग्रवादियों, अलगाववादियों व पाकिस्तान परस्त नेताओं के बच्चे तो विदेशों में ठाठ से रहते थे, पर कश्मीर का नौजवान अंधी गली में फंस गया था। आज परिस्थितियों में व्यापक बदलाव आया है। केंद्र सरकार की सभी योजनाओं तथा संविधान के सभी प्राविधान लागू होने से अब हर जाति और समाज के हर वर्ग का विकास हो रहा है। कश्मीर अब संवर रहा है, यूरोपीय पर्यटन स्थलों से मुकाबला कर रहा है तथा फिल्म निर्माण व सांस्कृतिक गतिविधियां बढ़ी हैं।

– **मनमोहन राजावत,** शाजापुर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464
Join Epaper Group @ ₹30/m WhatsApp To 8969469464

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शुक्रवार 23 फरवरी, 2024

दैनिक जागरण

वीते हुए कल को अपना आज बर्बाद न करने दें

कांग्रेस की मजबूरी

कांग्रेस इस पर खुश हो सकती है कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के बाद दिल्ली में आम आदमी पार्टी से भी लोकसभा चुनावों के लिए समझौता हो गया। इस समझौते के तहत दिल्ली में आम आदमी पार्टी चार और कांग्रेस तीन सीटों पर मिलकर चुनाव लड़ेगी। इससे यही स्पष्ट हुआ कि कांग्रेस ने दिल्ली में आम आदमी पार्टी को अपने से बड़ा दल माना। ये दोनों दल हरियाणा, गुजरात और गोवा में भी मिलकर चुनाव लड़ने पर सहमत हैं, लेकिन यह उल्लेखनीय है कि पंजाब में कोई समझौता नहीं हो सका। इसका मतलब है कि पंजाब में दोनों दल एक-दूसरे को हराने का काम करेंगे और दिल्ली एवं कुछ अन्य राज्यों में एक-दूजे को जिताने का। यह विचित्र स्थिति कांग्रेस की मजबूरी को ही दर्शाती है। वह इस मजबूरी का परिचय पहले भी दे चुकी है। वह बंगाल में वामदलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ चुकी है और केरल में उनके खिलाफ। इस बार भी बंगाल और केरल में यही होने के आसार हैं, क्योंकि केरल के वामपंथी नेता कांग्रेस से समझौता करने को तैयार नहीं। आखिर गठबंधन की यह कैसी राजनीति है कि दो दल कहीं तो मिलकर चुनाव लड़ने जा रहे हैं और कहीं एक-दूसरे के खिलाफ?

उत्तर प्रदेश में भी कांग्रेस जिस तरह 80 में से महज 17 सीटों पर चुनाव लड़ने पर सहमत हो गई, उससे भी उसकी विवशता प्रकट होती है। एक समय जो उत्तर प्रदेश कांग्रेस का गढ़ हुआ करता था, वहां वह गठबंधन के नाम पर जिस तरह अपनी राजनीतिक जमीन छोड़ने को तैयार हुई, उससे तो वह अपना जनाधार और अधिक गंवाएगी ही। ऐसे गठबंधन करके और इस क्रम में क्षेत्रीय दलों को बड़े भाई का दर्जा देकर वह अन्य राज्यों में भी अपना जनाधार खो चुकी है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस का एकमात्र उद्देश्य किसी तरह पिछले दो लोकसभा चुनावों के मुकाबले कुछ अधिक सीटें जीतने भर का है, न कि अपने गठबंधन आइएनडीआइए के जरिये भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को कोई ठोस चुनौती देने का। यदि कांग्रेस यह समझ रही है कि सपा और आप से समझौता करके वह आइएनडीआइए को एक शक्तिशाली गठबंधन के रूप में पेश करने में सफल हो जाएगी तो इसके आसार कम ही हैं। यह देखना दयनीय है कि जब कांग्रेस को एक राष्ट्रीय दल के रूप में अपनी मजबूती कायम रखने के जतन करने चाहिए, तब वह सीमित लक्ष्य का संधान करती दिख रही है। इससे तो उसकी राजनीतिक हैसियत और कम ही होगी। कांग्रेस चाहे जो दावा करे, उसने सपा और आप से जैसे समझौते किए, उनसे आइएनडीआइए को कोई राष्ट्रीय स्वरूप मिलने से रहा। यदि यह गठबंधन बनने से पहले ही बिखराव से ग्रस्त हो गया तो इसके लिए घटक दलों के साथ कांग्रेस भी उत्तरदायी है, जिसने सीटों के बंटवारे के बजाय राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को अधिक प्राथमिकता प्रदान की।

दवाओं की गुणवत्ता

समय के साथ लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। अब स्थिति वैसी नहीं है कि गंभीरता होने पर ही लोग चिकित्सक के पास पहुंचते हैं। बीमारी की शुरुआत और लक्षण दिखने पर ही चिकित्सक से परामर्श लेते हैं। रोग से बचाव के लिए गुणवत्तायुक्त दवाएं आवश्यक होती हैं, लेकिन दवा में ही खोट हो तो स्वस्थ कैसे हो सकते हैं। बाजार में ऐसी कई दवाएं होती हैं जो गुणवत्ताहीन होती हैं और लोग इनका सेवन भी करते हैं। यह लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ है। हर महीने बाजार में उपलब्ध दवाओं की जांच के लिए केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) की ओर से देशभर में दवाओं के सैंपल लिए जाते हैं। गुणवत्ता मानकों पर सही न पाए जाने वाली दवाओं की सूची तैयार कर उन दवाओं की बिक्री रोकी जाती है और संबंधित दवा निर्माताओं को नोटिस जारी किए जाते हैं। बुधवार को भी देशभर में बनी 46 दवाओं के सैंपल फेल पाए गए हैं। इनमें 14 दवाएं हिमाचल प्रदेश के उद्योगों में बनी थीं। चिंताजनक है कि इनमें ऐसी दवाएं हैं, जिनकी लोगों को अधिक आवश्यकता होती है। यह सही है कि लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर ही दवाओं की गुणवत्ता जांची जाती है और गुणवत्ता खराब पाए जाने पर उसे वापस मंगवाया जाता है, लेकिन बड़ा प्रश्न यही है कि पुख्ता जांच किए बिना यह बाजार में कैसे पहुंचती हैं? क्या ऐसी व्यवस्था नहीं हो सकती कि मानकों पर खरा उतरने वाली दवाएं ही बाजार में उतारी जाएं? जिन दवा उद्योगों की दवाएं मानकों पर खरा नहीं उतरती हैं उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई हो। ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि दवा बनाने के बाद उसकी हर तरह की जांच करनी चाहिए और मानकों पर खरा उतरने के बाद ही बाजार में उतारा जाना चाहिए।

बाजार में उतारे जाने से पहले दवाओं की पुख्ता जांच की व्यवस्था होनी चाहिए

राजग को चार सौ सीटों का गणित

डा. एके वर्मा

यदि भाजपा अपने नेतृत्व में राजग का जनाधार 4.26 प्रतिशत बढ़ा सके तो वह कांग्रेस के 1984 वाले रिकार्ड को छू सकती है

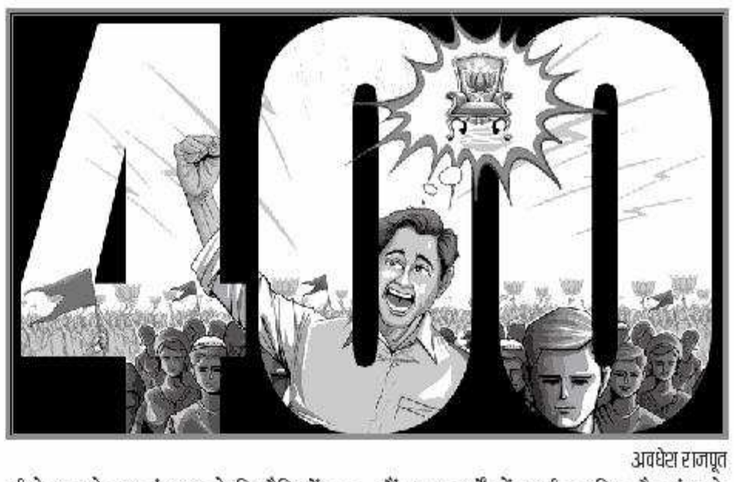

अवधेश राजपूत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 17वीं लोकसभा के अंतिम संबोधन में भाजपा के लिए 370 और राजग के लिए 400 से ज्यादा लोकसभा सीटें जीतने का लक्ष्य रखा। उनके भाषणों में 'अबकी बार, 400 पार' एक पंचलाइन हो गई है। इसके पूर्व 1984 में कांग्रेस ने 414 सीटें जीती थीं। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने 435 सीटों पर चुनाव लड़ा और 303 सीटें जीतीं। इस बार पंजाब में अकाली दल और तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक के राजग में न होने से 52 और सीटें एक प्रकार से खाली हो रही हैं। इस प्रकार भाजपा कुल 487 सीटों पर अकेले लड़ सकती है। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने उत्तर भारत में 81.1 प्रतिशत (191 में 155 सीटें), पश्चिम भारत में 65.3 प्रतिशत (78 में 51), पूर्वी भारत में 47.1 प्रतिशत (141 में 67) और दक्षिण भारत में 22.7 प्रतिशत (132 में 30) सीटें जीती थीं। स्पष्ट है कि भाजपा को पूर्वी भारत (ओडिशा और बंगाल) तथा दक्षिणी राज्यों (केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना) में कम सफलता मिली थी। फिर ऐसा कौन सा मोदी-मंत्र है, जो राजग को 400 पार ले जाएगा? इसे लेकर गत 17-18 फरवरी को नई दिल्ली में भाजपा के लगभग 11 हजार प्रतिनिधियों ने मंथन किया और प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें सफलता के गुरुमंत्र दिए।

1984 में जब कांग्रेस ने 414 लोकसभा सीटें जीती थीं, तब उसे 49.1 प्रतिशत वोट मिले थे। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को 37.36 प्रतिशत और राजग को 44.84 प्रतिशत वोट मिले थे। ऐसे में यदि भाजपा अपने नेतृत्व में राजग का जनाधार 4.26 प्रतिशत बढ़ा सके तो वह कांग्रेस के 1984 वाले रिकार्ड को छू सकती है। राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा जनाधार मिलने के लिए एक लहर की जरूरत पड़ती है। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति लहर थी तो 2024 में भव्य राम मंदिर निर्माण से उपजी राम लहर है। हालांकि मोदी केवल राम लहर के भरोसे ही नहीं हैं। विगत 10 वर्षों में मोदी ने बहुत काम किया है। भले ही विपक्ष उन पर राजनीति से प्रेरित होकर आरोप लगाए, लेकिन शासन के स्तर पर प्रतिबद्धता सुनिश्चित की गई है। मंत्रियों तक पर मोदी की कड़ी नजर रहती है। समावेशी राजनीति केवल एक नारा नहीं रहा, अपितु शासन, प्रशासन और संगठन तीनों स्तरों पर उसे रणनीतिक तौर पर पार्टी ने लागू किया है। लोक-कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन तथा सरकारी सेवाओं के वितरण में कोई धार्मिक या जातीय भेदभाव नहीं दिखाई देता। लाभार्थियों के खाते में सीधे धन के हस्तांतरण से बिचौलियों का खेल खत्म सा हुआ है। इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास हुआ है। देश एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मोदी ने देश की छवि और रुतबे को बढ़ाया है। जिस तरह मृत्युदंड पाए नौसेना अधिकारियों को मोदी ने कतर से छुड़वाया और संयुक्त अरब अमीरात में हिंदू मंदिर बनवाया, वह प्रमाण है कि इस्लामिक देशों में भी भारत का कद बढ़ा है।

भारतीय समाज पदसोपानीय संरचना के मकड़जाल में रहा है, जिसने राजनीति को परिभाषित किया है। अधिकांश विश्लेषक उसी जातीय गणित में उलझकर चुनाव परिणामों का विश्लेषण करते हैं, लेकिन मोदी ने राजनीति में एक नया प्रयोग किया और 'सबका-साथ, सबका-विकास' को समावेशी राजनीति का सशक्त हथियार बना दिया। उन्होंने इसके माध्यम से जातीयता को राजनीति से परे रखकर उसे वर्गीयता की ओर मोड़ दिया है। आज मोदी महिलाओं, युवाओं, किसानों, मजदूरों, गरीबों, शोषितों और वंचितों की बात करते हैं। इन वर्गों में सभी जाति और पंथ के लोग आते हैं। विपक्ष इसीलिए तिलमिलाया हुआ है कि जिन जातियों और वर्गों को आधार बनाकर वह अपनी राजनीति करता था, आज वे सब मोदी की समावेशी राजनीति की छतरी के नीचे आ गए हैं।

मोदी पिछले 10 वर्षों से 'मन की बात' कार्यक्रम कर रहे हैं। तमाम युवा मतदाता भी इस कार्यक्रम से जुड़े हुए हैं। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार 18-28 आयु वर्ग में दो करोड़ मतदाता केवल 2024 में बढ़े हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से विगत 10 वर्षों में कितने करोड़ युवा मतदाता मोदी से सीधे जुड़े होंगे। कुल 97 करोड़ भारतीय मतदाताओं में एक बहुत बड़ी संख्या इन युवा मतदाताओं की है, जो जानते हैं कि विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले भारत में कोई भी पार्टी या सरकार सभी को नौकरी नहीं दे सकती। इसलिए चुनावों में अब सरकारी नौकरी कोई मुद्दा नहीं। वे मोदी की दूरदर्शिता, उद्यमिता, तकनीकप्रियता और स्वरोजगार के क्षेत्र में नित नूतन प्रयोग से लाभान्वित और बेहतर भविष्य के प्रति आशान्वित हैं।

एक समय माना जाता था कि मुस्लिम और भाजपा दो विपरीत ध्रुवों पर होते हैं, लेकिन मोदी शासन में यह मिथक भी टूटा है। असल में जो मुस्लिम विभाजन के समय पाकिस्तान नहीं गए, वे वही हैं, जिन्हें हिंदुओं पर भरोसा था। आज भारत में मुस्लिम जनसंख्या पाकिस्तान के बराबर हो गई है। सभी क्षेत्रों में उनकी सहभागिता है। कांग्रेस ने स्वयं हिंदू-मुस्लिम के आधार पर देश बांटा। फिर जो मुस्लिम यहां रह गए, उनका अल्पसंख्यक के रूप में तुष्टीकरण कर उन्हें हिंदुओं से दूर कर दिया। कभी हिंदू समाज से मिलने-जुलने नहीं दिया। मोदी ने इसे खत्म करने की कोशिश की है। आज मुस्लिमों को विश्वास है कि वे हिंदुओं की ही तरह एक सामान्य नागरिक हैं और उन्हीं की तरह उनकी भी समस्याएं हैं। एक छोटा वर्ग ही सही, लेकिन मुस्लिम मोदी की ओर आकर्षित हुआ है। इसे मुस्लिम मतों पर एकाधिकार समझने वाले विपक्षी दल अपने लिए खतरा मानते हैं।

अपनी स्पष्ट विचारधारा, नीतियों, कार्यक्रमों, संगठनात्मक सक्रियता, चुनावी रणनीतियों और कुशल नेतृत्व के कारण मोदी, भाजपा और राजग बिखरते आइएनडीआइए से बहुत आगे हैं। ऐसे में यदि विपक्षी दलों द्वारा शासित राज्यों में भी मोदी को प्रचंड जनादेश प्राप्त हो जाए और 400 लोकसभा सीटों का लक्ष्य संधान हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।

(लेखक सेंटर फार द स्टडी आफ सोसायटी एंड पालिटिक्स के निदेशक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

अर्थव्यवस्था का जोखिम बढ़ाने वाली मांगें

डा. सुरजीत सिंह

किसान नेताओं को अपनी अतार्किक मांगें छोड़ सरकार के साथ समन्वयकारी मूल्य नीति पर विचार करना चाहिए

एमएसपी संबंधी कानून की जिद छोड़ें किसान। प्रेट्र

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को कानूनी दर्जा देने की मांग को लेकर किसान एक बार फिर सड़कों पर हैं। वैश्विक बाजारों की स्थिति और जलवायु परिवर्तन की जटिलता को देखते हुए बात कृषि के भविष्य एवं आवश्यक कृषि सुधारों पर होनी चाहिए थी, परंतु मौजूदा माहौल इसके विपरीत है। चार साल पहले भी किसान कृषि सुधारों से संबंधित तीन कानूनों को ठुकरा चुके हैं। एमएसपी किसानों का अधिकार नहीं है, बल्कि फसल की घटती कीमतों से बचाने के लिए सरकार किसानों को संरक्षण प्रदान करती है। वर्ष 1967 में केंद्र सरकार ने देश में अनाज की कमी को दूर करने और फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए एमएसपी की शुरुआत की थी। वर्तमान की स्थितियां बदल चुकी हैं। आज देश में खाद्यान्न का अतिरेक है। ऐसी स्थिति में भी सरकार किसानों के हित में प्रतिवर्ष 23 फसलों के लिए एमएसपी को घोषित करती है। सरकार आंदोलनरत किसानों के साथ एमएसपी पर भी गहन मंत्रणा के लिए तैयार है। एमएसपी को कानूनी जामा पहनाने से पहले इसके सभी सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों पर गहनता से विचार कर एक सर्वमान्य हल खोजना होगा। एमएसपी को कानूनी आधार पर तुरंत लागू करने की जिद न केवल अनेक मुश्किलें खड़ी कर देगी, बल्कि इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था के साथ-साथ पूरे समाज पर भी पड़ेगा। इससे देश की अर्थव्यवस्था का जोखिम बढ़ेगा।

यदि यह मान भी लिया जाए कि सरकार इस शर्त पर एमएसपी को कानूनी मान्यता देने को तैयार हो जाए कि उसके सामने उपज खरीदने की कोई बाध्यता नहीं होगी तो भी इस पर विचार किया जाए कि अन्न उत्पादन की अधिकता में बाजार कीमतों के कम होने की स्थिति में क्या होगा? यदि निजी क्षेत्र हाथ खड़े कर देगा तो फिर सरकार पर ही सारी उपज खरीदने का दबाव बढ़ेगा, जो उसके लिए भी संभव नहीं होगा। सीमित भंडारण क्षमता के कारण सरकार के लिए इसे संभालना भी मुश्किल होगा। वर्तमान में एमएसपी के अंतर्गत आने वाली 23 फसलों का मूल्य लगभग 10 लाख करोड़ रुपये बैठता है। वर्तमान में 15 से 25 प्रतिशत किसान ही सरकार को एमएसपी पर गेहूं और धान बेचते हैं। सभी फसलों के लिए एमएसपी को वैध बनाने के बाद तो सरकारी खजाने पर लगभग 40 लाख करोड़ रुपये की भारी लागत आएगी। इसका सीधा भार लोगों पर ही पड़ेगा। कृषि उपज की कीमत के बढ़ने से मुद्रास्फीति के रूप में भी लोगों पर इसका अतिरिक्त भार पड़ेगा। एमएसपी में प्रत्येक एक प्रतिशत अंक की वृद्धि से मुद्रास्फीति में 15 आधार अंक की वृद्धि होती है। उच्च एमएसपी भारतीय रिजर्व बैंक के मुद्रास्फीति लक्ष्यों को भी प्रभावित करेगा, जिससे आर्थिक विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें कम हैं तो विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सब्सिडी प्रविधानों के अनुसार सरकार के लिए अधिक कीमत पर खरीद कर कम पर बेचना भी मुश्किल होगा। एमएसपी को कानूनी बाध्यता के बाद सबसे बड़ी समस्या फसलों की गुणवत्ता को लेकर होगी। आखिर खराब गुणवत्ता वाली फसलों की कीमत कैसे तय होगी? इससे अनेक तरह के कानूनी विवाद उत्पन्न होंगे। फसलों की गुणवत्ता मानक किस प्रकार निर्धारित होंगे, यह उससे भी बड़ी समस्या होगी। जिन राज्यों में नियंत्रित मंडियां हैं, उन्हें छोड़कर अन्य राज्यों में अलग-अलग व्यवस्था को एकीकृत करने में कठिनाई आएगी, क्योंकि कृषि राज्यों का विषय है।

एक सर्वमान्य हल यह हो सकता है कि किसानों को उनकी फसल पर हानि न हो, इसके लिए उनकी उपज के बाजार मूल्य और लागत के बीच के अंतर की भरपाई सरकार द्वारा की जाए। इस तरह की स्कीम कुछ राज्यों में पहले से ही लागू है। इस पर विचार कर विस्तार दिया जा सकता है। इस प्रकार किसानों को बाजार मूल्य और पूर्व-सहमत मूल्य के बीच का अंतर मिल जाएगा, जो मूल्य बीमा के रूप में कार्य करेगा। बाजार की कीमतें एमएसपी से बहुत नीचे गिरने पर किसानों को समर्थन देने के लिए पर्याप्त धनराशि के साथ मूल्य स्थिरीकरण कोष बनाना बेहतर विकल्प हो सकता है, जो किसानों को मुक्त बाजार में उनकी फसलों की कम कीमत की भरपाई करेगा। कृषि उत्पादों की मुक्त आवाजाही की अनुमति देने के लिए विपणन ढांचे के पुनर्गठन पर भी बात होनी चाहिए। यदि एमएसपी को कानूनी रूप से लागू करने की बात आती है तो इसे तिलहन या दालों की एक या दो फसलों के परीक्षण एवं अनुभवजन्य आधार पर इस शर्त पर लागू किया जा सकता है कि इसके नकारात्मक प्रभाव होने से इसे तत्काल समाप्त भी किया जा सकता है और सफल होने पर क्रमशः विस्तार भी दिया जा सकता है। पंजाब और हरियाणा के कुछ क्षेत्रों को निर्यात क्षेत्र घोषित कर कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ाने की बात पर भी विचार किया जा सकता है। जहां आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान, उच्च स्तर के बीज और उर्वरक, फसल बीमा, बेहतर प्रौद्योगिकी आदि द्वारा किसानों की आय को अधिक बढ़ाया जा सकता है। यदि किसान फिर भी मानने को तैयार नहीं होते तो बड़े किसानों को दी जाने वाली सब्सिडी और अन्य सुविधाओं पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। कृषि द्वारा पर्यावरण क्षति के एवज में बड़े किसानों पर कर लगाने पर बात होनी चाहिए।

भारत अपने कृषि क्षेत्र में सुधार किए बिना पांच लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था नहीं बन सकता। इसके लिए किसानों को अपनी अतार्किक मांगों को छोड़कर सरकार के साथ मिलकर एक समन्वयकारी मूल्य नीति पर विचार करना चाहिए, ताकि कृषि क्षेत्र की असीम संभावनाओं का दोहन किया जा सके और छोटे तथा सीमांत किसानों का भी भला हो सके।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

इच्छाशक्ति

इच्छाशक्ति हमारे स्व और मन की संयुक्त शक्ति है, जो निर्धारित कार्य को निष्कर्ष तक पहुंचाने में सहायक बनती है। जो सही है यह हमें उस पर चलने तथा जो गलत है, उससे बचने की शक्ति देती है। समस्या यह है कि हम अपनी इच्छाशक्ति को बढ़ाने का प्रयास नहीं करते। भाव एवं बुद्धि के बीच विभेद के कारण हम लक्ष्य की प्राप्ति को बौद्धिक रूप से तो समझते हैं, लेकिन उसे हृदय से अनुभव नहीं करते। ऐसे में बाधाएं हमारे मनोबल को तोड़ देती हैं। जबकि हृदय से लक्ष्य को प्राप्त करने की चाहत हमें वह आवश्यक शक्ति प्रदान करती है, जो तमाम विघ्न-बाधाओं के बीच हमें लक्ष्यसिद्धि तक पहुंचाकर रहती है। बौद्धिक समझ के साथ अपने आदर्श, लक्ष्य या इष्ट के प्रति अनुराग का होना वह महत्वपूर्ण तत्व है, जो इच्छाशक्ति को बलवान बनाता है।

अपने किए पर पश्चाताप और भविष्य के प्रति चिंताएं-इच्छाशक्ति को कमजोर करने वाले दो बड़े तत्व हैं। भूतकाल में हुई गलतियों को लेकर कुढ़ते रहने से ऊर्जा कुंठित होती है तथा भविष्य के प्रति चिंता व्यक्ति को अकर्मण्य बना देती है। इसके बजाय वर्तमान में जीना जीवन को एक नया अर्थ देता है। इसके लिए जीवन के मूल्यों की स्पष्ट समझ महत्वपूर्ण होती है। इसके अभाव में लोग हर पल बदलती इच्छाओं के हाथों का खिलौना बन जाते हैं। लोग कब सांसारिक कामनाओं का दास बन जाते हैं-इसका पता ही नहीं चलता। यह मार्ग अंततः उनको दुख की ओर ही ले जाता है। जबकि मन की शांति और जीवन का आनंद तो सद्गुणों के विकास पर निर्भर करता है न कि धन या सांसारिक सुख-भोग के अंबार पर। इच्छाशक्ति को बढ़ाने के लिए स्वयं को जितना अधिक हो सके सकारात्मक कामों में व्यस्त रखें। स्वस्थ आदतों को अपनाएं। मन को रचनात्मक दिशा में लगाए रखें। इससे कुछ नए सृजन का संतोष मिलेगा और साथ ही इच्छाशक्ति भी बढ़ेगी।

भगीरथ कुमार

महिला अधिकारों की रक्षा

सुनीता मिश्रा

गत दिनों सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं के अधिकार को लेकर ऐतिहासिक फैसला सुनाया। अदालत ने कहा कि शादी को आधार बनाकर महिला का रोजगार समाप्त करना लैंगिक भेदभाव और असमानता का एक बड़ा मामला है। अदालत ने केंद्र सरकार को शादी के आधार पर सेवा से बर्खास्त की गई सैन्य नर्सिंग अधिकारी को 60 लाख रुपये का मुआवजा देने का आदेश भी दिया। याचिकाकर्ता सेलिना जान पिछले 26 वर्षों से अपने अधिकार के लिए कानूनी लड़ाई लड़ रही थीं। सैन्य नर्सिंग सेवा देने वाली सेलिना को बिना कारण बताओ नोटिस दिए ही बर्खास्त कर दिया गया था। वह दिल्ली के आर्मी अस्पताल में प्रशिक्षु के रूप में शामिल हुई थीं। उन्हें लेफ्टिनेंट के पद पर कमीशन दिया गया था। उन्होंने शादी कर ली, जिसके बाद लेफ्टिनेंट के पद पर रहते समय उन्हें सेना से रिलीज कर दिया गया।

किसी महिला के विवाह को आधार बनाकर उसे रोजगार से वंचित करना भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 के तहत दिए गए मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में कहा गया है कि भारत सरकार किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव नहीं कर सकती। कानून के समक्ष सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार किया जाएगा। अनुच्छेद 15 में कहा गया है, 'राज्य किसी नागरिक के खिलाफ सिर्फ धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई भेद नहीं करेगा।' वहीं अनुच्छेद 16 में सार्वजनिक पदों पर अवसर की समानता से संबंधित प्रविधान किए गए हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा है कि शादी को आधार बनाकर किसी महिला को रोजगार से वंचित नहीं कर सकते

हम सभी जानते हैं कि समानता सुरक्षित समाज की वह नींव है, जिस पर विकास रूपी इमारत का निर्माण किया जाता है। इसके लिए लैंगिक असमानता को जड़ से खत्म करने की जरूरत है। वर्तमान में स्त्री और पुरुष दोनों का घर की आर्थिकी में बराबर का योगदान है। पुरुषों की भांति महिलाएं भी अपने परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए मेहनत कर रही हैं। शादी को आधार बनाकर किसी महिला को रोजगार से वंचित करना उसके अधिकारों का उल्लंघन है, क्योंकि महिलाएं भी पुरुषों की भांति ही कड़ा परिश्रम करके रोजगार हासिल करती हैं। वे भी पुरुषों की तरह कठिन परिस्थितियों में कार्य करने में सक्षम होती हैं, बशर्ते उन्हें पूरी सुरक्षा मिले। परिस्थितियों और नियमों का हवाला देकर उनसे उनका अधिकार लेना लैंगिग असमानता को बढ़ावा देना है। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट का फैसला महिलाओं के हित में है। इससे नौकरी पेशा महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा। उनमें आगे बढ़ने का जज्बा कायम होगा। शादी के बाद रोजगार समाप्त होने का डर खत्म होगा और वे भी पुरुषों की तरह आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त होंगी।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मोदी विरोध की राजनीति से प्रेरित आंदोलन

'समस्याओं को बढ़ाने वाला समाधान' शीर्षक से प्रकाशित बलबीर पुंज के आलेख से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पंजाब के संपन्न किसानों द्वारा प्रायोजित आंदोलन किसान हित के बजाय मोदी विरोध की राजनीति करने वाले नेताओं को केंद्र सरकार पर हमलावर होने का अवसर देने वाला अधिक है। शायद इसीलिए दिल्ली कूच की जिद पर अड़े कथित आंदोलनकारी पुलिस बल से टकराने की तैयारी किए बैठे हैं। जबकि मोदी सरकार इस टकराव को टालते हुए बातचीत के जरिये शांतिपूर्ण समाधान की पक्षधर है। शायद इसीलिए चौथे दौर की वार्ता के असफल होने के बाद भी वह पांचवें दौर की वार्ता के लिए तैयार है। केंद्र सरकार के इस रुख को देखते हुए किसान नेताओं ने भी अगली रणनीति पर विचार करना शुरू कर दिया है। पंजाब के कुछ समझदार किसान नेता इस हकीकत से वाकिफ हैं कि उनके इस आंदोलन को न तो देश के सभी किसान संगठनों का समर्थन प्राप्त है और न ही यह राष्ट्रव्यापी किसान आंदोलन है। ऐसे में अनावश्यक रूप से सुरक्षाबलों से टकराने के बजाय सकारात्मक वार्ता के जरिये पंजाब के किसानों का हित साधकर, इस आंदोलन का शांतिपूर्ण पटाक्षेप करना ही उचित होगा। हालांकि ऐसा कर पाना उनके लिए संभव हो पाएगा, इसमें संदेह है, क्योंकि यह आंदोलन एक नकारात्मक आंदोलन बनता जा रहा है। किसानों की ओट में कुछ देश विरोधी तत्व भी सक्रिय हो गए हैं, जो इस आंदोलन को हिंसक रूप देकर दिल्ली के सीमावर्ती क्षेत्र को अशांत करना चाहते हैं।

डा. बीपी पांडेय, अलीगढ़

मेलबाक्स

दागियों से दूर रहे भाजपा

राजीव सचान का ''चाल, चरित्र और चेहरे की बातें'' शीर्षक से प्रकाशित आलेख को पढ़ा। पढ़कर मन में प्रश्न उठा कि क्या भारतीय जनता पार्टी को अपने दरवाजे सभी राजनीतिक दलों से आने वाले नेताओं के लिए खुले रखने चाहिए? उत्तर मिला-वैचारिक रूप से और पार्टी की शुचिता से प्रेरित व्यक्ति को अपने साथ ले लेना चाहिए, परंतु भ्रष्टाचार एवं दागी नेताओं को दूर से राम-राम कह देना चाहिए। बेशक मोदी जी भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता हैं और उनके शासनकाल में भारत नई ऊंचाइयों तक पहुंचा है और वर्तमान समय में भाजपा भी अपने शिखर पर है एवं 2024 के लोकसभा में भी वह भारी बहुमत के साथ विजय प्राप्त कर सकती है, परंतु दागी नेताओं के कारण पार्टी को नुकसान भी पहुंच सकता है। भाजपा को जनता को विश्वास में रखना होगा कि पार्टी जीत के लिए अपने सिद्धांतों से किसी भी प्रकार का कोई भी समझौता नहीं करेगी और न ही ऐसा कोई कार्य करेगी, जिसके कारण उसकी छवि धूमिल हो। विस्तारण प्रकिया को पूर्ण पवित्रता एवं शुचिता से करे तो पार्टी के लिए बहुत ही लाभकारी प्रस्तुत होगा।

नितिन श्रीराम वाडले, बुरहानपुर (मप्र)

जरूरी है उत्तम विचारों को धारण करना

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसे व्यक्तित्व सदा ही हमारे लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। 'एक मार्गदर्शक आचार्य का जाना' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके महान व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण में उनके आदर्शों के महत्व का उत्तम उल्लेख किया है। आचार्य जी द्वारा बताए गए मानवीय मूल्यों से लेकर प्रकृति, स्वाध्याय, आत्म जागरूकता और विचारों में पवित्रता, ये कुछ ऐसी बातें हैं जिनपर हर किसी को चिंतन-मनन करना चाहिए। आपको जानकर आश्चर्य होगा की आचार्य जी का कोई बैंक अकाउंट या ट्रस्ट नहीं था। वह धन लेने के खिलाफ थे, यदि कभी कोई उनके नाम पर दान कर भी देता तो वह उस धन को समाज सेवा में लगा देते थे। वह संयमित भोजन और बिना चादर और गद्दे के सोने जैसे कई सख्त नियमों का पालन करते थे। आज के समय में जहां धन और विलासिता पूर्ण जीवन पाने के लिए मानवता का स्तर गिरता जा रहा है वहां आचार्य जी का जीवन हमें संयम और मानवता के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध रहना सिखाता है।

सोनल वर्मा, प्रयागराज

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

18 करोड़ से अधिक है वर्तमान में देश में बुजुर्गों, विधवा महिलाओं एवं दिव्यांगों की संख्या, जिन्हें सरकारी कर्मचारियों की तुलना में बहुत ही कम आर्थिक सुरक्षा उपलब्ध है।

प्रह्लाद सबनानी
आर्थिक मामलों के जानकार

भारतीय अर्थव्यवस्था

सकारात्मक बदलाव की दिशा में अग्रसर

पिछले एक दशक के दौरान भारत में तीव्र आर्थिक विकास हुआ है। भारतीय आर्थिकी विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी आर्थिकी बन गई है, जो आगामी पांच वर्षों में तीसरी सबसे बड़ी बन जाएगी, ऐसा आकलन विश्व के कई वित्तीय संस्थान कर रहे हैं। आज विश्व के कई देश पूंजीवादी माडल से निराश होकर भारतीय आर्थिक माडल को अपनाने की बात करने लगे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित बीते कुछ समय के दौरान ऐसे अनेक तथ्य सामने आए हैं जो इस बात की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की निर्माण लागत अपेक्षाकृत कम होने व निर्यात संवर्धन से बढ़ेगी देश की समृद्धि। फाइल

भारतीय अर्थव्यवस्था आज विभिन्न क्षेत्रों में नित नई ऊंचाइयां छू रही है। भारत ने फ्रांस एवं ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए महज दो माह पूर्व शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में पूरे विश्व में पांचवां स्थान हासिल किया था। भारत से आगे केवल अमेरिका, चीन, जापान एवं हांगकांग थे। परंतु अब दो माह से भी कम समय में भारत ने शेयर बाजार के पूंजीकरण के मामले में हांगकांग को पीछे छोड़ते हुए विश्व में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया है। अब ऐसा आभास होने लगा है कि भारत अर्थ के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर खोई हुई अपनी प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करता हुआ दिखाई दे रहा है। वर्ष 1750 से पीछे जाएं तो उससे पहले हजार वर्षों से भी अधिक समय तक आर्थिक दृष्टि से समूचे विश्व में भारत का वर्चस्व था। इस खंडकाल में विश्व के कुल विदेशी व्यापार में भारत की हिस्सेदारी एक तिहाई से भी अधिक की रही है, क्योंकि उस समय भारत में सनातन संस्कृति का पालन करते हुए व्यापार किया जाता था। भारत में अर्थ के कार्यों को धर्म का पालन करते हुए करने की प्रथा का पुरातन शास्त्रों में वर्णन मिलता है।

भारत में चूंकि आज एक बार पुनः सनातन संस्कृति का पालन करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य संपन्न हो रहे हैं, अतः पूरे विश्व का भारत पर विश्वास बढ़ रहा है। विदेशी निवेश के साथ साथ आज लगभग 50 देश भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौता करना चाहते हैं, क्योंकि भारत वैश्विक स्तर पर विभिन्न उत्पादों के लिए एक बहुत बड़े बाजार के रूप में विकसित हो रहा है।

ऐसा कहा जाता है कि शेयर बाजार में निवेशक अपनी जमापूंजी का निवेश बहुत सोच विचार कर करता है एवं जब निवेशकों को यह आभास होने लगता है कि अमुक कंपनी का भविष्य बहुत उज्जवल है एवं निवेशक द्वारा किए गए निवेश पर प्रतिफल अधिकतम रहने की संभावना है, तभी निवेशक अपनी जमापूंजी को शेयर बाजार में उस अमुक कंपनी में निवेश करते हैं। इस प्रकार, जब किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर निवेशकों का भरोसा बढ़ता हुआ दिखाई देता है तो विशेष रूप से विदेशी निवेशक एवं विदेशी संस्थागत निवेशक उस देश में विभिन्न कंपनियों के शेयर में अपना निवेश बढ़ाते हैं। चूंकि विदेशी संस्थानों को आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था पर एवं भारतीय कंपनियों की विकास यात्रा पर भरपूर भरोसा है, अतः भारतीय शेयर बाजार में निवेश भी गति पकड़ रहा है।

शासन द्वारा बनाई नीतियों का प्रभाव : किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में शासन द्वारा बनाई गई नीतियों का विशेष प्रभाव रहता है। पिछले 10 वर्षों के खंडकाल में भारत न केवल आर्थिक, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में भी मजबूत हुआ है और भारत ने पूरे विश्व में अपनी धाक जमाई है। आज भारतीय मूल के लगभग 3.2 करोड़ लोग विश्व के अन्य देशों में निवास कर रहे हैं। भारतीय मूल के इन नागरिकों ने भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करते हुए इन देशों के स्थानीय नागरिकों को भी प्रभावित किया है जिससे विदेशी नागरिक भी अब सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित होने लगे हैं। विशेष रूप से विकसित देशों में तो सामाजिक ताना-बाना इतना अधिक छिन्न-भिन्न हो चुका है कि अब ये देश आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं के हल हेतु आशाभरी नजरों से भारत की ओर देख रहे हैं।

सभी को प्रगति का लाभ : किसी भी देश के लिए आर्थिक प्रगति तभी सफल मानी जानी चाहिए, जब उस देश के अंतिम पंक्ति में खड़े नागरिक को भी उस देश की आर्थिक प्रगति का लाभ मिलता दिखाई दे। इस दृष्टि से विशेष रूप से गरीबी एवं आय की असमानता को कम करने में भारत ने विशेष सफलता पाई है, जिसकी अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष एवं विश्व बैंक ने भी सराहना की है। भारत में वर्ष 1947 में 70 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे थे, जबकि एक हालिया रिपोर्ट यह बताती है कि वर्तमान में देश की कुल जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहा है। यानी इस दिशा में व्यापक सुधार हुआ है।

डिजिटल इंडिया का योगदान : आज भारत डिजिटल इंडिया के माध्यम से क्रांतिकारी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पिछले 10 वर्षों के दौरान भारत ने डिजिटलीकरण के क्षेत्र में अतुलनीय प्रगति की है। देश में 120 करोड़ से अधिक मोबाइल फोन का उपयोग हो रहा है जिसमें बड़ी संख्या में स्मार्टफोन भी शामिल हैं, और इनमें इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है। इस प्रकार भारत ने एक नए डिजिटल युग में प्रवेश कर लिया है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी 'डिजिटल इंडिया' ने कमाल कर दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाई गई है। अब तो ड्रोन के लिए भी नए डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग हो रहा है एवं ड्रोन के माध्यम से कृषि को किस प्रकार सहयोग किया जा सकता है, इस पर भी कार्य हो रहा है। ड्रोन के माध्यम से खेतों में खाद और बीजों का छिड़काव आदि जैसे कार्य किए जाने लगे हैं।

विश्व में विकास के इंजन के रूप में उभार : कृषि क्षेत्र, रक्षा उत्पादों, फार्मा, नवीकरण ऊर्जा, डिजिटल व्यवस्था के साथ ही प्रौद्योगिकी, सूचना तकनीक, आटोमोबाइल, मोबाइल फोन उत्पादन, बुनियादी क्षेत्रों का विकास, स्टार्टअप्स, ड्रोन, हरित ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भी भारत अपने आप को तेजी से वैश्विक स्तर पर एक लीडर के रूप में स्थापित करने की ओर अग्रसर हो गया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आर्थिक प्रगति के बल पर भारत एक बार पुनः स्वयं को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने जा रहा है। कहा जा सकता है कि भारत विश्व में विकास के इंजन के रूप में उभर रहा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने कहा है कि वर्ष 2024 में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में भारत का योगदान 16 प्रतिशत से भी अधिक रहने की संभावना है। जब कई अन्य देशों की विकास दर कम हो रही है, तब भारत में आर्थिक विकास दर तेज हो रही है। केंद्र सरकार द्वारा देश में लागू की जा रही आर्थिक नीतियों के कारण ही यह संभव हो पा रहा है।

भारतीय प्रतिभा के पलायन पर लगे अंकुश

इजरायल ने बीते माह भारत से एक लाख कामगारों को अपने यहां भेजने का आग्रह किया है। इसमें बड़ी संख्या में इंजीनियर भी शामिल हैं। इसी प्रकार ताइवान ने भी पिछले दिनों लगभग एक लाख भारतीय इंजीनियरों की आवश्यकता जताई है। जापान ने भी लगभग दो वर्ष पूर्व यह कहा था कि वह अपने देश में स्थित अनेक कंपनियों में दो लाख भारतीय इंजीनियरों की भर्ती के प्रति इच्छुक है। एक अन्य समाचार के अनुसार, माक्रोसाफ्ट के सीईओ सत्य नडेला एवं गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई भी प्रयास कर रहे हैं कि उनकी कंपनियों में एआइ को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किस प्रकार भारतीय इंजीनियरों की भर्ती बढ़ाई जाए। अमेरिका एवं कनाडा आदि देशों में पहले से ही इन देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों में लाखों भारतीय इंजीनियरों की भर्ती जारी है। कहा जा सकता है कि भारत आज पूरे विश्व में इंजीनियरों की आपूर्ति का बहुत बड़ा केंद्र बन गया है।

लगभग 1.4 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक विभिन्न देशों में रह रहे हैं, जो इन देशों की नागरिकता प्राप्त करने का इंतजार कर रहे हैं, जबकि इनके अलावा 1.8 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक इन देशों के स्थायी नागरिक बन चुके हैं। कुल मिलाकर 3.2 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक आज विश्व के अन्य देशों में निवास कर रहे हैं। जब विशेष रूप से विकसित देशों में भारत से डाक्टर, इंजीनियर एवं प्रबंधन के क्षेत्र में विशेषज्ञ भारत से बाहर जाते हैं तो इन विशिष्ट श्रेणी में विशेषज्ञों की भारत में कमी होना स्वाभाविक है। अब तो ऐसा आभास होने लगा है कि पूरे विश्व के लिए विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ जैसे भारत ही तैयार कर रहा है। ये विशेषज्ञ विभिन्न देशों में जाकर इन देशों की कंपनियों को मजबूती प्रदान करते हैं एवं ये कंपनियां पूरे विश्व में अपने व्यापार को फैलाने में सफल हो रही हैं। अब समय आ गया है कि भारतीय कंपनियां भी बहुराष्ट्रीय बनें एवं पूरे विश्व में अपने व्यापार को फैलाएं। इससे विदेश में रह रहे भारतीय विशेषज्ञों एवं भारत में रह रहे भारतीय विशेषज्ञों की आपस में प्रतिस्पर्धा होगी। इस प्रतिस्पर्धा में संभव है कि भारतीय कंपनियां विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगे टिक ही न सकें। वहीं दूसरी ओर बदले हुए आर्थिक परिदृश्य में आज भारत में आर्थिक विकास की गति बहुत तेज हो चुकी है, जबकि विश्व के अन्य देशों, विशेष रूप से विकसित देशों में, आर्थिक विकास की गति निरंतर कम बनी हुई है। भारत आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है एवं अगले लगभग पांच वर्षों के दौरान विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, ऐसी संभावना विश्व की अनेक वित्तीय एवं आर्थिक संस्थाएं व्यक्त कर रही हैं। अतः यह तय है कि भविष्य में भारत में भी विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की अधिक आवश्यकता महसूस होने लगेगी।

लिहाजा इस बारे में विचार करना होगा कि भारत से ब्रेन ड्रेन को कम करने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए। यदि ब्रेन ड्रेन पर अंकुश लगाने में सफलता मिलती है तो संभव है कि विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में ही अपनी विनिर्माण ईकाइयां स्थापित करें, क्योंकि इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इनके अपने देशों में भारतीय विशेषज्ञ इंजीनियरों की कमी महसूस होने लगेगी। भारत में ही विनिर्माण ईकाइयों के स्थापित होने से न केवल भारत में रोजगार के अधिक अवसर निर्मित होंगे, बल्कि इन कंपनियों का विदेशी व्यापार भी भारत के माध्यम से होने लगेगा और भारत के कर संग्रहण में भी अपार वृद्धि होगी। कुल मिलाकर भारत में और अधिक खुशहाली फैलाने का रास्ता साफ होगा।

(प्रह्लाद सबनानी)

खरी-खरी

सांडों को रास्ता दीजिए

पूरन सरमा

सांडों की सड़कों पर आवाजाही बढ़ जाने से अपने आप को बचाइए और उन्हें रास्ता दीजिए। वर्तमान काल सांडों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, अतः उनके लिए रास्ते साफ रखिए ताकि वे मनचाहा भ्रमण कर सकें। वैसे भी देश में सांडों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। आप लोग कमजोर हैं, यदि इनकी चपेट में आ गए तो लेने के देने पड़ जाएंगे। अभी इनका मल्लयुद्ध शुरू होगा तथा ये मदमस्त होकर अपने अखाड़ों में खम ठोकेंगे। हमारे आपके बस की बात नहीं है, इनसे कुश्ती लड़ना।

वैसे सुनने में आया है कि ये सांड अब धनवर्षा भी करेंगे, क्योंकि इनकी काली कमाई बढ़ गई है। दरअसल, सारे सांड सत्तारूढ़ होने के लिए बेताब हैं। यही नहीं, सांडों के साथ सींग मारने वाली गायें भी हैं, वे भी आपका नुकसान कर सकती हैं। आप आम रास्तों की जगह शार्टकट अथवा फुटपाथों पर चलिए, क्योंकि सड़कें तो पूरी तरह करीब-करीब सांडों ने रोक ली है। यह तानाशाही के लोकतंत्र का युग है। येन-केन सत्तालोलुप सांड सत्ता को अपनी दासी बनाकर देश को दोनों हाथों से लूटने को तत्पर हैं। वैसे भी सांड पहली बार लूटपाट नहीं मचा रहे हैं। ये धंधेबाज हैं तथा अपने सत्ता काल में लूटपाट करते ही करते हैं।

यह भी सही है कि सांड अपने स्वार्थों के लिए देश को किसी भी दिशा में धकेल सकते हैं। सांडों को चारा भी बहुत चाहिए। इसलिए वे जितना खाते हैं, उससे दोगुना गोबर आम रास्तों पर बिखेर कर उन्हें गंदा किए जा रहे हैं। सांडों का गोबर न लीपने का और न पोतने का। सांडों को कभी बीमार होते हुए देखा है आपने? कभी नहीं, वे कभी बीमार नहीं होते। उल्टा वे देश को बीमार बनाते हैं, अपनी गंदगी फैलाकर। देख नहीं रहे सारा वातावरण कितना बदबूदार और दूषित हो गया है। जगह-जगह सांडों की सभाएं हो रही हैं। पता चला है कि राजा का चुनाव करेंगे ये सब मिलकर। लोकतंत्र का ढोल बजाकर ये भोले-भाले लोगों को फुसलाएंगे और अपने पक्ष में मतदान को विवश कर देंगे। साम, दाम, दंड और भेद राजनीति के ये पटु खिलाड़ी हैं, इसलिए अपने भले के लिए रास्ते खाली रखिए।

पोस्ट

पिछले कुछ वर्षों में यह ट्रेंड बन गया है कि जो ज्यादा बोलता है, उसके यहां या तो ईडी का छापा पड़ता है या सीबीआइ का या किसी दूसरी एजेंसी का। सत्यपाल मलिक भी पिछले कुछ दिनों से मुखर होकर बोल रहे थे। प्रज्ञा मिश्रा@PragyaLive

लोकतंत्र में किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना यदि घृणा में बदल जाए तो समझो उसके पीछे आलोचक की निजी खुन्नस है। यही हाल पूर्व गवर्नर सत्यपाल मलिक का हुआ। सूर्य प्रताप सिंह@suryapsingh_IAS

यदि किसी भाजपा नेता ने सिख अफसर को सच में खालिस्तानी कहा है तो बिना किंतु-परंतु उसे दंडित किया जाना चाहिए, लेकिन समस्या यह है कि तृणमूल कांग्रेस और उसके समर्थक इस मामले का इस्तेमाल संदेशखाली में बंगाल सरकार की निष्क्रियता को छिपाने के लिए कर रहे हैं। शिव अरूर@ShivAroor

स्वामी प्रसाद मौर्य ने अपनी पार्टी बना ली। अब वह लोकसभा चुनाव लड़ेंगे और लड़वाएंगे। यह देखना भी दिलचस्प होगा कि क्या उनकी बेटी उनकी पार्टी से लड़ती हैं? राजेश साहू@askrajeshsahu

जागरण जनमत

कल का परिणाम

उत्तर प्रदेश में सपा-कांग्रेस का गठबंधन भाजपा को चुनौती पेश कर पाएगा?

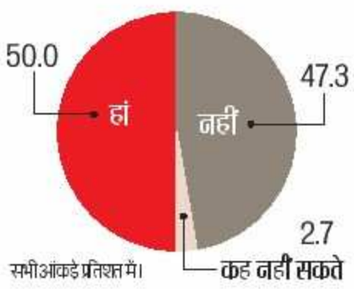

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या बंगाल सरकार संदेशखाली का सच सामने आने देने में बाधा बन रही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

महिलाएं ही त्रस्त हैं इक महिला के राज,
ममता दीदी को मगर तनिक न आती लाज।
तनिक न आती लाज दिखें ना उनको आंसू,
राजनीति की रेल चल रही उनकी धांसू।
सुन करके 'संदेश' देखतीं दाएं-बाएं,
भिजवाती हैं पत्र राज्य की जब महिलाएं।

– ओमप्रकाश तिवारी

झारखंड डायरी

कांग्रेस के साथ न हो जाए 'खेला'

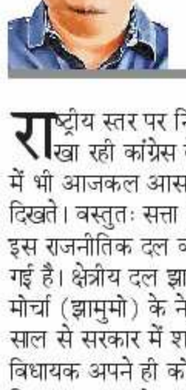

प्रदीप सिंह
राज्य ब्यूरो प्रमुख, झारखंड

राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर हिचकोले खा रही कांग्रेस के लिए झारखंड में भी आजकल आसार अच्छे नहीं दिखते। वस्तुतः सत्ता से चिपके रहना इस राजनीतिक दल की नियति बन गई है। क्षेत्रीय दल झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेतृत्व में यहां चार साल से सरकार में शामिल पार्टी के विधायक अपने ही कोटे के मंत्रियों के विरुद्ध एकजुट हो गए हैं। इनका कहना है कि जिन विधायकों को मंत्री बनाया गया है, वे इसके काबिल ही नहीं हैं। आलाकमान इन्हें हटाकर नए चेहरों को अवसर दे। दबाव बनाने के लिए कांग्रेस के नाराज विधायकों ने पांच दिनों तक दिल्ली में कैंप कर माहौल बनाया। इनकी उम्मीदें इस बात को लेकर हैं कि इन्हें भी मंत्रिमंडल में स्थान मिले। संभव है कि इन्हें इसमें सफलता भी मिल जाए, लेकिन इस प्रकरण ने एक साथ कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

झारखंड में 31 जनवरी को ईडी के हाथों गिरफ्तारी से पूर्व जब तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस्तीफा दिया और चम्पाई सोरेन ने राज्य के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली तो कैबिनेट विस्तार को लेकर अटकलों का दौर आरंभ हुआ। पहले आठ फरवरी को मंत्रिमंडल का विस्तार होना था, लेकिन बाद में यह तिथि बढ़कर 16 फरवरी कर दी गई। इससे इन बातों को बल मिला कि बड़े पैमाने पर मंत्रिमंडल में भी फेरबदल हो सकता है। इन अटकलों के विपरीत ज्यादा बदलाव देखने को नहीं मिला। झामुमो की तरफ से हेमंत सोरेन के भाई बसंत सोरेन को मंत्रिमंडल में जगह मिली, जबकि कांग्रेस कोटे के मंत्रियों में वही चेहरे शामिल थे जो हेमंत सरकार में भी मंत्री थे। इसके बाद कांग्रेस के 17 में से 12 विधायक इस फैसले के खिलाफ एकजुट हो गए। उन्होंने निर्णय का विरोध करते हुए यहां तक कह डाला कि वह 23 फरवरी से आरंभ हो रहे झारखंड विधानसभा के बजट सत्र का बहिष्कार करेंगे। ऐसे में सरकार मुश्किल में आ सकती थी। इस बीच आठ विधायक रांची से दिल्ली चले गए। विधायकों का कुनबा 21 फरवरी की रात झारखंड वापस लौट आया है, लेकिन सवाल उठता है कि क्या आने वाले दिनों में ये विधायक सरकार के लिए परेशानी का सबब बन सकते हैं?

कांग्रेस के विधायकों के असंतुष्ट रवैये के बीच झामुमो में भी सबकुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा है। झामुमो के दो विधायकों की गतिविधियां राजनीतिक गलियारे में गंभीरता से ली जा रही हैं। इनमें बैद्यनाथ राम की राजनीतिक पृष्ठभूमि भाजपा की रही है। लातेहार के विधायक बैद्यनाथ राम पिछले विधानसभा चुनाव में टिकट नहीं मिलने के बाद भाजपा छोड़ झामुमो में शामिल हो गए थे। बैद्यनाथ राम की नाराजगी की वजह अस्वाभाविक नहीं कही जा सकती। चम्पाई मंत्रिमंडल विस्तार के लिए 16 फरवरी को मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने वाले विधायकों की सूची में इनका नाम आया था। राजभवन ने इससे संबंधित आदेश जारी किए थे, लेकिन अंतिम समय में इन्हें शपथ ग्रहण करने से रोका गया। बैद्यनाथ राम को यह रवैया अनुचित प्रतीत हो रहा है। वह इसे अपने दलित वर्ग का अपमान बता रहे हैं। उनके समर्थकों ने इसके विरोध में रांची में रैली तक करने की घोषणा कर दी है। उधर, बैद्यनाथ राम के प्रति भाजपा ने भी सहानुभूति दिखाई है। ऐसे में अनुमान लगाया जा रहा है कि बैद्यनाथ राम कभी भी झामुमो को झटका दे सकते हैं।

दिल्ली में कांग्रेस नेता उमंग सिंघार (दाएं से तीसरे) के साथ झारखंड कांग्रेस के असंतुष्ट विधायक। जागरण

झामुमो के एक अन्य विधायक लोबिन हेम्ब्रम काफी समय से नेतृत्व से नाराज चल रहे हैं। चुनाव निकट आता देख वह झारखंड बचाओ मोर्चा के नाम से अपना अलग दल बनाने के प्रयास में हैं। ऐसे में वह भी झामुमो को अलविदा कह सकते हैं। लोबिन हेम्ब्रम का संताल परगना के कुछ इलाकों में सीमित प्रभाव है। वे चुनावों में ज्यादा असर नहीं दिखा पाएंगे, लेकिन अगर वे छिटके तो तात्कालिक झटका जरूर लगेगा।

ये सारे दृष्टांत यह इंगित कर रहे हैं कि नवगठित सरकार के समक्ष कम चुनौतियां नहीं हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की प्रभावी मौजूदगी सहयोगी दलों के विधायकों समेत अपने दल के नेताओं को जोड़े रखने में सक्षम थी। उनकी अनुपस्थिति में विधायकों की उछलकूद बढ़ रही है तो इस पर अंकुश लगाने की कारगर कोशिश भी नहीं दिख रही। कांग्रेस के विधायकों की नाराजगी को लेकर आलाकमान में कुछ खास चिंता नहीं देखी गई। अगर ये विधायक अपने रुख पर कायम रहे तो सरकार को संकट में डाल सकते हैं। ऐसा लगता है कि अपने बड़े नेताओं से हाथ धो रही कांग्रेस को इस बात की चिंता नहीं है कि कौन क्या कर रहा है? ऐसे में राजनीतिक भविष्य को चिंतित झारखंड के कांग्रेसी विधायक भी करामात दिखा सकते हैं। वैसे क्षेत्रीय दल झामुमो में इसका ज्यादा असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वहां विरोध के स्वर ज्यादा ऊंचे नहीं हैं।

मंथन

समावेशी पेंशन नीति का प्रारूप

देश में एक ऐसी समावेशी पेंशन नीति की आवश्यकता है जो समाज में आर्थिक न्याय की गारंटी प्रदान करने में सक्षम हो और जिसके केंद्र में वास्तविक जरूरतमंद लोग हों

डा. अजय खेमरिया
लोकनीति विश्लेषक

पिछले कुछ वर्षों से कांग्रेस समेत अन्य कई विपक्षी दलों द्वारा भाजपा को घेरने के लिए पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल करने का मामला एक राजनीतिक हथियार के रूप में उपयोग में लाया जाता रहा है। वैसे सरकारी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन व्यवस्था को बहाल करना एक जोखिम भरा वित्तीय कदम है। देश दुनिया के लगभग सभी आर्थिक जानकार इसे वित्तीय सुधारों की दिशा में प्रतिगामी कदम मानते हैं। वस्तुतः पुरानी पेंशन की अवधारणा रोजगार और जीवनचक्र के हिसाब से कथित तौर पर एक सामाजिक सुरक्षा के साथ न्याय करती थी, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में कोई भी इसे दीर्घकालिक रूप में देशहित में नहीं मानता है।

यह सही है कि वर्तमान में लागू एनपीएस (न्यू पेंशन स्कीम) में कुछ बुनियादी कमियां हैं जो सेवानिवृत्ति के समय कर्मचारियों को ओपीएस (ओल्ड पेंशन स्कीम) की तरह गारंटीड मासिक रकम को सुनिश्चित नहीं करता है। सरकार ने इन विषयों को लेकर वित्त सचिव टीवी सोमनाथन के नेतृत्व में एक समिति भी बना दी है जो जल्द ही एक समावेशी पेंशन नीति का प्रारूप मोदी सरकार के समक्ष प्रस्तुत कर सकती है। क्या ओपीएस महज भाजपा के विरुद्ध एक राजनीतिक हथियार भर है? स्पष्ट है कि भाजपा विरोधी दल इसकी लाभ हानि को भुलाकर केवल चुनावी लाभ के लिए इस मुद्दे को खड़ा करना चाहते हैं। इस योजना की बुनियाद अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने रखी थी, लेकिन इसे लागू करने का देशव्यापी कार्य उसके बाद यूपीए की मनमोहन सिंह सरकार ने किया। जिन कांग्रेस शासित राज्यों ने अपने यहां इसे स्वेच्छा से लागू किया था, वे राज्य भी इसके विरोध में हैं।

वस्तुतः राज्यों की चुनावी राजनीति में लंबे समय तक यह धारणा रही कि सरकारी कर्मचारी जिस दल के साथ रहते हैं, उसे बड़ा चुनावी फायदा मिलता है। असल में यह उस दौर की बात है जब सरकारें आज की तरह डीबीटीएल यानी सीधे लाभार्थियों के कल्याण के काम नहीं करती थीं। सरकारी खजाने से सीधा पैसा केवल कर्मचारियों के खातों में जाता था, लेकिन आज मोदी सरकार ने देश में एक बड़ा लाभार्थी वर्ग खड़ा कर दिया है। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के जरिये करोड़ों लोग प्रधानमंत्री की गारंटी के सहारे पार्टी से जुड़ गए हैं। राज्यों में भी वहां की सरकारों ने कमोबेश इसी माडल को अपनाया है। इसके चलते कर्मचारियों के संगठित वोट की स्थिति परिणामों की इबारत लिखने में सक्षम नहीं रह गई है। मध्य प्रदेश में ही यदि देखें तो लगभग साढ़े सात लाख सरकारी कर्मचारियों के विरोध के बावजूद भाजपा अपार बहुमत से सरकार में इसलिए लौटी, क्योंकि वहां 1.31 करोड़ लाडली बहनें, करीब 70 लाख किसान सम्मान निधि व अन्य योजनाओं के लाभार्थी भी वोटर थे।

गैर भाजपा शासित राज्यों छत्तीसगढ़ और राजस्थान में तो वहां की सरकारों ने ओपीएस को लागू भी कर दिया था, इसके बावजूद वहां कांग्रेस हार गई, क्योंकि जमीनी स्तर पर ओपीएस कहीं नजर नहीं आई। छत्तीसगढ़ में ओपीएस को लागू हुए दो साल हो चुके हैं, परंतु अभी तक एक भी कर्मचारी को इसका लाभ नहीं मिल पाया है। राजस्थान में यह आंकड़ा अभी हजार के नीचे ही है। पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार ने ओपीएस की अधिसूचना पिछले साल जारी की, लेकिन आगे इस मुद्दे पर कोई कार्रवाई इसलिए नहीं हुई, क्योंकि पंजाब सर्वाधिक कर्ज वाला राज्य है। झारखंड ने इसे लागू तो कर दिया, लेकिन शर्त जोड़ दी कि जब तक एनपीएस का अंशदान उसे नहीं मिलेगा, कर्मचारियों को लाभ नहीं दिया जा सकता है।

असल में ओपीएस की ओर लौटना किसी भी राज्य के लिए तकनीकी रूप से इतना सरल नहीं है, क्योंकि पेंशन फंड रेगुलेटरी डेवलपमेंट एक्ट के अनुसार अंशदान की वापसी का कोई प्रविधान ही नहीं है। अभी एनपीएस में अंशदान के रूप में 10 प्रतिशत कर्मचारी एवं 14 प्रतिशत सरकार या नियोक्ता जमा करते हैं। इस फंड में लगभग 2.5 लाख करोड़ की राशि अभी जमा है। वहीं वर्ष 2004 के बाद सरकारी सेवाओं में 50 लाख कर्मचारी दर्ज हैं। सच्चाई यह है कि राज्य सरकारें चाह कर भी आसानी से ओपीएस पर लौट नहीं सकती हैं, क्योंकि कानूनी रूप से यह बहुत जटिल होने के साथ ही राज्यों की वित्तीय दशा भी ऐसी नहीं कि इस प्रकार का जोखिम लिया जा सके। देश में इस समय बुजुर्ग, विधवा महिलाओं एवं दिव्यांगों की आबादी 18 करोड़ से अधिक है। इस बड़ी आबादी को सरकारी कर्मचारियों की तुलना में नगण्य आर्थिक सुरक्षा उपलब्ध है। बेहतर होगा कि सोमनाथन समिति एक ऐसी पेंशन योजना का मसौदा तैयार करे जो कर्मचारियों के सेवाकाल के समग्र मूल्यांकन पर आधारित पेंशन को सुनिश्चित करता हो। वैसे भी राजनीतिक रूप से यह मुद्दा अपनी प्रासंगिकता खो चुका है, इसलिए राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे चुनावी राजनीति के चश्मे से इसे हवा न दें। अक्सर सांसदों और विधायकों की दोहरी पेंशन को भी ओपीएस के समर्थक मुद्दा बनाते हैं, इसलिए इस विषय पर भी नए सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।

सरकारी कर्मचारियों की तुलना में देश के अन्य बुजुर्गों को मिल पाता है नगण्य पेंशन। प्रतीकात्मक

****